। जय बुन्देली ।   । जय ईसुरी ।   । जय बुन्देलखण्ड ।

ईसुरी पद्धति की बुन्देली चौकड़ियों का अनौखा संग्रह

बुन्देली चौकड़िया सागर

पैलौ भाग

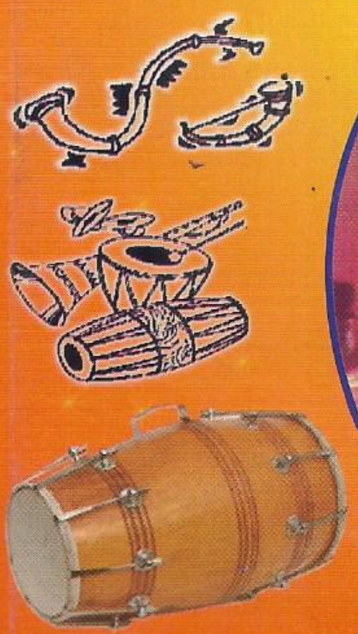

रचनाकार

डॉ. दयाराम वर्मा 'बेचैन' पी.एच-डी. (बुन्देली सम्राट)

आकाशवाणी, वार्ताकार, कवि, रेडियो रुपक, लेखक, कहानीकार

बुन्देली चौकड़िया सागर - डॉ. डी.आर. वर्मा

परम पूज्यनीया माता जी
स्व. श्री लाड़ली देवी

पी.एच-डी. की उपाधि लिए
डॉ. डी.आर.वर्मा 'बैचेन' 1988

डॉ. डी. आर. वर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी शिक्षाप्रेमी श्रीमती फूलवती वर्मा
(गरीबों को आजीवन निःशुल्क शिक्षण)

कीर्तिशेष डॉ. सियाराम शरण शर्मा
(शोध पर्यवेक्षक)

डॉ. दयाराम वर्मा
(शोधार्थी) पी.एच.डी.

डॉ. बेचैन के द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ पुस्तिकायें

1- बुन्देली बताशा
2- मस्ताना ख्याल
3- फाग रस खान छंद
4- गारी मनभावन
5- घरेलू चिकित्सा दोहावली
6- वर्मा इंगलिश गाइड
7- दानलीला व गौरी चालीसा
8- बुन्देली चौकड़िया सागर
9- मधुप्याली (खड़ी बोली खण्ड काव्य)
10- झांसी जनपद के अज्ञात लोककवि (बुन्देली शोध प्रबन्ध) अप्रकाशित
11- बंग-विजय (अप्रकाशित)
12- 'नई टकसार' पूज्य पिता स्व. श्री रामसहांय कारीगर (आशु कवि) की पांण्डु लिपि को पुस्तकाकार करके संपादन व प्रकाशन

साहित्य वारिधि स्व. श्री रामचरण हयारण मित्र काव्य पाठ सुनते हुए

डॉ. डी.आर. वर्मा
स्व.श्रीमती सुभद्रा देवी पहारिया
को काव्य पाठ सुनाते हुए

साहित्य मनीषी 'बुन्देली वार्ता'
के संपादक
स्व. श्री कन्हैयालाल शर्मा 'कलश'
को कविता सुनाते हुए
डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'

।। श्री गणेशाय नमः ।।

बुन्देली चौकड़िया-सागर

–डॉ. डी.आर. वर्मा

पी.एच–डी,

संपादक व रचियता

।। जय माँ सरस्वती ।।

जय बुन्देली माँ

बुन्देली धरती पर बुन्देली की कृति समर्पित–

प्रथम संस्करण

कार्तिक पूर्णिमा सं. 2074

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक–

डॉ. एस.पी. वर्मा

बी.ए.एम.एस. काया हर्बल प्रोडक्शन

उरई (जलौन) उ. प्र. मो 9452216633

डॉ. एल. पी. वर्मा

प्रोफेसर–नरेन्द्रदेव यूनिवर्सिटी, फैजाबाद उ. प्र.

मो. 9450796577

सहयोग–राशि

200/–(दो सौ रुपया)

मुद्रक

जयभारत ऑफसैट प्रेस

परमट चौराहा, मऊरानीपुर (झाँसी) उ.प्र. बुन्देलखण्ड

मो. 9452995903, 9795034525

सहायक विवरन

क्रम संकेत (खंड)पृष्ठ से तक

1. राम रसायन खंड 09 से 27

2. चेतावनी खंड 27 से 50

3. रसखान खंड 50 से 83

4. देश प्रेम खंड 50 से 126

5. विनय खंड 127 से 138

6. फुटकर खंड 138 से 169

(उधौ गोपी संवाद सहित)

7. देवी वंदना 170 से 171

8. मिली जुली 171 से 221

9. आखिरी पन्नन में कठिन बुन्देली अक्षरों के अर्थ।

(सि0 वि0)–जौन शब्द पै पैली लैन को अंत है,

ओइ शब्द सें दूसरी लैन चालू होत।

(2) अधर– प वर्ग हटाकें होत। इन रचनन में औठ सें,

औठ नई लगत उर गा दई जार्ती।

(3) गतागत– जौन शब्द सै लैन शुरू भई ओइ शब्द पै समाप्त होत

00

इसके अलावा कई विषय पर सार गर्भित देश प्रेम, रानी झाँसी एवं सामाजिक विषयों पर टीका टिप्पणी एवं चेतावनी, ज्ञान वर्द्धक व चुटीली, मजेदार विषयों पर भी रचनायें प्रस्तुत है।

आशा है कि आप अपनी पसन्द की रचनायें पढ़ कर आनन्द प्राप्त करेंगे, ऐसी कामना हैं।

शुभासंसा

बुन्देली में चतुष्पदी अर्थात् चार चार कड़ियों, चार चरणों के छंद को चौकड़ियां छंद कहते हैं। इसे ललित पद व फाग छंद भी कहते हैं इसे नरेन्द्र छंद कहते हैं। बुन्देलखंड में फाल्गुन मास के रस राज व ऋतु राज बसंत के शुभागमन से फाग लोक मुख से मुखरित होता है। यह अनेक लयों में गेय छंद हैं जिसमें अनेक रस, श्रृंगार, सौन्दर्य, रीति, नीति, अध याय अनुराग विराग, राष्ट्रप्रेम, जनाभिरंजन और लोक अभिरूचि की अभिव्यक्ति हुई है। फागों में छंदयाउ फागें, भीं होतीं हैं। चौकडियां फागों का साहित्य 19वीं, सदी में, प्रारंभ हुआ, जिनका संग्रह ईसुरी की चौकड़ियां–गौरीशंकर द्विवेदी व कृष्णानन्द गुप्त, नर्मदाप्रसाद गुप्त ने प्रमुख रूप से किया। अभिनव ईसुरी नाम से प्रख्यात ओमप्रकाश सक्सैना का बुन्देली प्रकाश 1988 ई. 2 भागों में पं. बाबूलाल पाठक मेंढ़की झांसी का ईसुरी की चौकड़ियां 2008 ई. में व 'चौकड़ियां सागर' प्रेमनारायण पाठक 2009 ई. में प्रकाशित हुये।

डॉ0 डी. आर. वर्मा 'बेचैन' स्यावरी झाँसी का 'बुन्देली चौकड़ियां सागर' जिसमें एक सहस्त्र से अधिक चौकड़ियां संग्रहीत हैं, डॉ. वर्मा को काव्य अपने पिता श्री रामसहांय कारीगर से विरासत में मिला है। उनकी 'नईटकसार' छंदयाउ फागें प्रकाशित हैं। डॉ. वर्मा हमेशा अपनी कृति में पुरातन को नवीनता के साथ प्रस्तुत करने में सिद्ध हस्त हैं। उनकी इस कृति में पांच खंड हैं, सामाजिक, राम, कृष्ण रसखान तथा चेतावनी रूप में विद्यमान हैं। बुन्देली संस्कृति, रीति नीति लोकानुराग, लोकरंजन की सशक्त अभिव्यक्ति है। इसमें लोक मानस, लोकधर्म, लोक चिंतन को संप्रेषित किया गया है ऐसी अनन्य काव्य कृति की रचनाकर कवि ने भविष्य के संग्रहों को एक दिशा देने का प्रयास किया है। इस हेतु कविवर डॉ. डी. आर. वर्मा को बधाई एवं अनेक शुभकामनायें, इदमस्तु!!

–ह0 डॉ. रामनारायण शर्मा
695/3 सिविल लाइन्स रानीलक्ष्मीबाई
पार्क के सामने, झाँसी (बुन्देलखण्ड)
मो. 9839161827

मुद्रक की कलम से–

बुन्देली धरती को प्रणाम! बुन्देली धरती के गर्भ में विभिन्न कला–कृतियों के प्राकृतिक सौन्दर्य के अलावा जन–जन के मन में साहित्य विचार एवं अनुभव एवं विभिन्न कलाओं तथा ललित कलाओं का अपार भण्डार है। जिसे उजागर करना बहुत कठिन कार्य है क्यों कि यहाँ की फागें, गोट गायन, दीवारी गायन लोकगीत, लोक विधा की अन्य अपार रचनायें है।

आदरणीय, डॉ. आर. वर्मा जी मास्टर साहब से पहला परिचय, बन्धु प्रेस, मऊरानीपुर में साहित्य सृजन करते हुए हुआ, आपकी लेखनी उस वक्त बहुत सटीक, समालोचात्मक, एवं समाज के हित परक हुआ करती थी। धीरे–धीरे हमनें भी वर्ष 1984 में ''जयभारत प्रेस'' की स्थापना की मा. वर्मा की कृति छापने का सुअवसर प्राप्त हुआ ।

एक–एक करके गई सारगर्भित पुस्तकें छापी जो साहित्य समाज का दर्पण बनी। जिसमें बच्चों के लिए वर्मा इंग्लिश गाइड का प्रकाशन प्रेस से हुआ उस समय एक अनुभूति हुई कि बच्चों को लिखी पुस्तक बहुत शिक्षा प्रद एवं बच्चों को लाभदायक हो ऐसी अनुभूति हुई ।

'बुन्देली चौकड़िया सागर' वास्तव में 'गागर में सागर' है। बुन्देली विधा में आपने सामयिक विषयों पर चिन्तन कर जो अनूठी रचनायें प्रस्तुत की, जो समाज में आलोचना, समालोचना के साथ कई गम्भीर विषयों पर आपकी सशक्त टिप्पणी अपने माध्यम से की है एवं बुन्देल खण्ड में होने वाले सभी विषयों पर आपने लिखा वह स्तुत्य है। कम्पोज करने साथ–साथ पूरी रचनायें पढ़ने का अबसर प्राप्त हुआ उनकी यह कृति साहित्य समाज का दर्पण बनें । उनके जीवन में जितना भी साहित्य है । वह सुरक्षित एवं संरक्षित हो हम उनके प्रति श्रद्धा नमन करते हुऐ आशीर्वाद के अभिलाषी हैं।

–लक्ष्मीकान्त गुप्ता
जयभारत प्रेस
मऊरानीपुर

जय बुन्देली **जय बुन्देलखण्ड** **जय ईसुरी**

अपनी बात थोरे में-

'बुन्देली चौकड़िया सागर' अपुन के हांतन में है। ई में करीबन एक हजार चौकड़ियां (नरेन्द्र छंद) हैं। राम रस, कृष्ण रस, समाज सम्बन्धी, देश भक्ति की समय के अनुसार, चेतावनी आदि कैऊ विषयन की चौकड़ियां हैं। सन् १६८६ ई. में अपने पूज्यनीय पिता आशुकवि स्व.श्री रामसहांय जी कारीगर की याद में राष्ट्रीय बुन्देली विकास परिषद् स्यावरी (झाँसी) उ. प्र. बनाईती। ईमें मइना पंद्रा रोज में एक कवि गोष्ठी करत्ते । ई कवि गोष्ठी में ऐंगर उर दूर के कवि न्योते जात्ते। कवि गोष्ठी सुकवि लोगन खां समस्यायें कम सें कम दो दई जात्तीं। स्वतन्त्र कवितायें भी सुनाईं जाततीं। ईतरा सें सब कवियन की कवितन् कौ भौत भण्डार जुरत रओ। हमाये पास तौ करीबन पांच हजार अकेलीं चौकड़ियां (नरेन्द्र छन्द) जुर गई। जब जौन विषय पै कलम महारानी चल गईं, बा लिख दई। 'बुन्देली चौकड़िया सागर' में एई कारन सें कैउ बन्न की चौकड़ियां पूरे में हैं। जीखां जौन पसन्द आ जाय। सो अपुन सब पढ़ैं गुनैं और गुन कें जैसी जीखां लगें से अपुन मोय अपने विचार लिख कें जरूरी पौंचायें। अपने विचार दूसरे भाग में छपैं, वौ भी एक हजार चौकड़ियों को हुऐ। अबै लौ दो सौ पैंतीस कवि गोष्ठी उर कवि सम्मेलन हम करा चुके। पच्चीस साल पूरे भये पै एक किताब 'बुन्देली बतासा' निकारीती । बतासा सबई खां मीठे लगे। आशा है, उर पूरौ विश्वास है कै अपुन 'बुन्देली चौकड़ियां सागर' में सपरें, डुबकी लैकें, आनंद लैवें। हमें बतांय हम अपनी मैनत सफल मानें। पांच भाग छपवावें कों विचार है। आशीर्वाद उर शुभकामनायें अपुन सबकीं चइये। हमाव पूरौ परचौ किताब के अन्त में अपुन देख सकत। सबई जनन खों राम-राम।

विन्तवार- अपुनो अई

डॉ.डी. आर वर्मा पी,एच-डी,
पूर्व प्राचार्य, अखण्डानंद जनता इंटर कालेज, गरौठा
निवासी स्यावरी मो. 9794419115

जय बुन्देली **जय बुन्देलखण्ड** **जय ईसुरी**

परिचय-

बुन्देली कविता लिखवे की प्रेरना हमें अपने पूज्यनीय पिता जी आशु कवि बुन्देली फड़ काव्य (फागों) के बेजोड़ गायक व रचयिता स्व.श्री रामसहांय जी कारीगर से मिली। जब वे अपनी कविता भींत से टिककें बैठ कें लिखतते तब हम उनकी बगल में बैठ जातते। ऊ बेरां हमाई उमर १०-१२ साल की हुइये और हम दरजा छै में पढ़तते। उनकी कविता वांचत रतते। ई वजह सें बा बुन्देली कविता हमायें रोम-रोम में रच पच गई। हलके अई सें हमें ऊमें इत्तीं रूचि बड़ गई कै हम कछू कै नईं सकत। पिताजी जब कब हमाये आंगे फागें कविता गुनगुनाउते सौ वे लय व धुनें अच्छी तरा सें याद हो गईं। ओई बेरां हमनें गांव के चुनाव की एक लम्बी कविता बना डारी। दोहा शैर, टेक, लावनी, छंद, उड़ान ऊमें हतीं बा कछु जनन खां सुनाई। ऊमें गांव दारी को बर्नन हतो सो काउ की बुराई-भलाई हतीं। पिताजी नें कई कै जौ कलंक तौ हमें लगै जब कै कविता हमनें बनाई नैंयां। उन्नें बुलाकें हमें भौत डाटो। कछू देर बाद उन्नें हमें बुलाओ उर समझा कें आशीर्वाद दओ कै तुम भौत अच्छी कविता कर सकत। करौ, उर हमसें छंद शास्त्र के कछू नियम जरूर सीक लो। सो उनसें थोरौ सौ पिंगल सीको उर कविता पै चालू हो गये।

३ जनवरी १६४५ ई० प्रमाण-पत्रों में जन्म तिथि है। ग्राम स्यावरी, तहसील मऊरानीपुर जिला झाँसी उ.प्र. है। पिताजी स्व.श्री रामसहांय आशुकवि हैं। हमाये दादा उर पर दादा सोउ कवि हते। पिता जी नें अपनी सब रचनाओं कौ नाव ''नई टकसार'' रखो तो अंग्रेजी राज नें ''नई टकसार'' की

कवितायें ग्राम स्यावरी के ही राम प्रेस सें उननें छपवाईतीं। जमींदारों के अत्याचारों कौ वर्नन करौं तो उर अपनी कीमतीं एक सौ पचास बीगा जमींन को स्तीफा दै दओ तो माताजी कौ नाव श्रीमती लाड़लीदेवी हतौ।

धीरे-धीरे हम अंगाई बड़े। सबसें पैलें गांधी विद्यालय इं. कालेज में १५ अगस्त खां हमनें कविता सुनाई। फिर कवि गोष्ठी करीं कराईं। उर कवि सम्मेलनन में जान लगे। चौकड़ियां पैलऊं से भौत लिखीं ख्याल लिखे, कवित्त, सवैया, कैऊ तरा के। डॉ. भगवानदास माहौर (आजाद के मित्र) उनके चरनन में बैठ के पड़ो। उन्नें हमाई पैली किताब (फाग रसखान छंद) में अपनों आशीर्वाद दओ। मस्ताना ख्याल, दानलीला, गारी मनभावन, युवक आवाहन, घरैलू चिकित्सा दोहावली, वर्मा इंगलिश गाइड, छपीं। 'महिला उत्थान सप्ताहिक', 'दैनिक जनहित दर्शन' 'दैनिक जागरण' के संवाददाता रये, भास्कर, जागरण, मौलिक अधिकार, बुन्देली बसंत, बुन्देली दरसन और भौत अखवारन में पत्र पत्रिकाओं लेख कवितायें, निकरीं उर निकररई, आकाशवाणी छतरपुर, झाँसी, दिल्ली, सागर सैं हमाई कवितायें, वार्ता, रेडियो रूपक, कहानियां निकरीं। भौतसी साहित्यिक संस्थाओं नें हमें प्रमाण-पत्र दै दैकें सम्मानित करो। बुन्देली बतासा", "नई टकसार" कौ सम्पादन करौ। दिन-रात अबै साहित्य सेवा करनं लगे हैं। उनमें शब्द कोष बुन्देली, बुन्देलखण्ड की मूल संस्कृति चलरई,।

राष्ट्रीय बुन्देली विकास परिषद् में अब तक २३५ कवि गोष्ठी उर कवि सम्मेलन मिलाकें हो गये। कैऊ तरा कौ साहित्य बुन्देली कौ रचौ गऔ। २५ सालें पूरी सन् २०१२ में

होवें के कारनं ''चांदी जयन्ती'' मनाई गयी, बड़ौ भारी जलसा कराओ। उर 'बुन्देली बतासा' की किताब निकारी।

'बुन्देली चौकड़िया सागर' को अगर दूसरौ नाव 'समस्या पूर्ति प्रकाश' धर दओ जातो तौ भी भौतई नोंनो रतो। अकेलें चौकड़ियां जांदा लिख गईं। कवि गोष्ठी में कवियन खां समस्यायें (दो) एक निश्चित ता. की कवि गोष्ठी में पूरी करकें ल्यावे के लान दई जात्तीं। ई तरां सैं चौकड़ियां, कवित्त, सवैया, भौत बनकें तैयार हो गये। बुन्देली पै भौत काम भओ उर अबै भौत बनकें तैयार हो रओ।

चौकड़ियां हजार-हजार के खंड छपावें कौ विचार करो। पैलौ खंड अपुन के हांतन में है। ईकौ रस लेव। बुन्देली कौ रस पीवे वाये भौंरा अबै भौत हैं। बताशा तौ सबै मीठे लगतई हैं। सो मैनत सफल भई। 'बुन्देली बतासा' कौ दूसरो भाग छपावे की तैयारी है। सो अपनी फोटू, लेख, कविता, आदि उर सहयोग राशि जल्दीं देदैं। तौ बौ भी छपजें। बुन्देली के भौत साहित्यकार उ.प्र. उर म.प्र. में हैं। हम उन सब खां धन्यवाद उर बहुत आभार देत। हम आकाशवाणी छतरपुर, लखनऊ, झाँसी उर सागर, दिल्ली के भी भौत आभारी हैं। अपर महानिदेशक श्री गुलाब चंद वर्मा सेवानिवृत्त, श्री कमल नारायण निदेशक झाँसी श्री हीरालाल , श्री शम्भूदयाल अहिरवार निदेशक आकाशवाणी छतरपुर उर सागर, म.प्र. निदेशक, श्री जी.सी. बुन्देला से.नि. व दिल्ली आकाशवाणी के निदेशक गणों ने हमाव बुन्देली प्रसारण करो। इनके सहयोग के लानें सबइखां भौत-भौत धन्यवाद्। तौ बुन्देली चौकड़ियां सागर में सपरौ डुबकी लगाव। आनंद लेव फिर हमें लिखौ।

बुन्देली साहित्य पै हमाई पी.एच-डी. है। डिग्री उपाधि १९८८ ई० में मिली ती। क्षेत्रीय वैद्य परिषद्, पृथ्वीपुर स्यावरी तथा धन्वतरि वैद्य सेवा सोसायटी (रजि.) बनाई। एम.ए. बी.एड. साहित्य रत्न (संस्कृत) आयुर्वेदरत्न, आयुर्वेद वृहस्पति (मानद) तक शिक्षा है बुन्देली साहित्य सेवा में दिन रात लगे रात, 'मधुप्याली' काव्य कृति प्रकाशित हौ गई। शोधग्रन्थ, अप्रकाशित उर भौत सौ साहित्य अप्रकाशित है। जो अपुन सब के आशीर्वाद से छप भी जै ।

सन् १९९४ में दैनिक जागरण झाँसी के सम्पादक जू नै अंशकालिक संवाददाता नियुक्त करो, 'महिला उत्थान सा.', दैनिक जनहित दर्शन के पत्रकार रैकें, भौत कछू लिखो, उर अबै लिख रये। लेख, कविता व्यंग, कलम की मौज, चलरई।

बुन्देलखण्ड हिन्दी शोध संस्थान, झाँसी के उपाध्यक्ष रये। ई कारन सें स्व.श्री रामचरण हयारण 'मित्र' भगवतीशरण श्रीवास्तव डॉ. सिया राम शरण शर्मा, डॉ. जवाहरलाल कंचन, आचार्य सेवकेन्द्र त्रिपाठी, महाकवि अबधेश, दुर्गेश दीक्षित आदि सें मिला भेंटीं होत रातती गुण सागर शर्मा'सत्यार्थी' हरिविष्णु अबस्थी, एम. एल. प्रभाकर, के.एल. बिन्दु, उमाशंकर खरे साहित्य मंडल, म. प्र. कन्हैयालाल शर्मा, कलश, नर्मदाप्रसाद गुप्त, पीयूष जी, और भौत साहित्य कारन सें उत्साह बड़ो उनको प्रभाव परो,

संस्थापक व संचालक

-राष्ट्रीय बुन्देली विकास परिषद्, स्यावरी सन् १९८६ सें।

अध्यक्ष-ईसुरी साहित्य शोध संस्थान मेंढ़की (मऊरानीपुर)(रजि.)

अन्त में अपुन सब बुन्देली के रचना कारन खां नमन उर आशीर्वाद की इच्छा में सेवा में लगो भओ....

विन्तवार- अपुनो अई
डॉ.डी. आर वर्मा पी,एच-डी,
पूर्व प्राचार्य, अखण्डानंद जनता इंटर कालेज, गरौठा
निवासी स्यावरी मो. 9794419115

डॉ. दयाराम वर्मा कौ परिवार

नाम- डॉ. दयाराम वर्मा 'वेचैन'

पूर्व प्राचार्य अखण्डानंद इं.कॉलेज, गरौठा (झाँसी) उ. प्र.

पिताजी- कीर्तिशेष श्री रामसहांय कारीगर आशु कवि बुन्देली

माताजी- कीर्तिशेष श्रीमती लाड़ली (करारा वाली)

पुत्र- १. डॉ. शिवप्रताप वर्मा बी.ए.एम.एस.

२. डॉ. लक्ष्मीप्रसाद वर्मा प्रोफेसर,फिशरी विभाग फैजावाद

भ्राता- १. श्री हरीदास संत

२.सेवाराम वैद्य

३.डॉ. भरतराम एम.बी.बी.एस. सेवानिवृत्त

स्वास्थ्य निदेशक उ० प्र० सरकार

भतीजे- चि. इं.सुरेन्द्रकुमार से.नि., इं. राजेन्द्रकुमार

इं. महेन्द्रकुमार (केन्द्रीय सर.), इं. धर्मेन्द्रकुमार

अनिलकुमार (डिवी.मैनेजर-यू.को.बैंक दिल्ली)

डॉ. बी.बी. वर्मा (आयु.रत्न)

पत्नी- श्रीमती फूलवती वर्मा (शिक्षा प्रेमी)

विगत १० वर्षों से फूलवती कोचिंग संस्थान, स्यावरी द्वारा गरीब एवं कन्ययाओं, बच्चें को शिक्षा का ग्रहण करवा रहीं हैं।

निवास- ग्राम-पोस्ट स्यावरी

तहसील- मऊरानीपुर

जिला-झाँसी

उत्तर प्रदेश (बुन्देलखण्ड) मो 9794419115

---ooo---

।। श्री गणेशाय नमः ।।

राम रसायन खंड

आऔ राम रसायन पीलो, सुख शान्ती में जीलो।
हनुमत पी गये राम रसायन, पी गये व्यास कवी लौ।।
नारद जी ने ऐसी पी लई, है दिन रैन लगी लौ।
शिवजी पियत भंग के संगै, जौ रस भौत रसीलौ।।
'दयाराम' जो पिये प्रेम सें, पाय अमर पदवी लौ।।
कऔ को लंककोट में जावै, जावै खवर लियावै।
बार न बाँको होय वीर कौ, काम बना कें आवै।।
बैठे करत विचार सबई भट, कोउ कछू ना कावै।
'दयाराम' कयें पिया सिया के, कऔ को काम बनावै।।

हनुमान

घुस गये बागन शंक न खाई, सुमर हियें रघुराई।
मन मन के फल खाये हनुमत, खल दौरे खिसयाई।।
नाक कान काटे कइ इक के, मारई मार मचाई।
रावन सुत जमपुर खां भेजो, गओ दशकंध रिसाई।।
'दयाराम' हनुमान खलन की, रबड़ी खूब बनाई।।

जनकपुर की स्त्रियां

बैंना सुनो हमारे बैंना, इनसें धनुष नबैना।
है नादान उमर कौ छौरा, लली जोग वर है ना।।
देना दिखा पैल राजा खां, नातर काज सदैना।
नैना 'दयाराम' खंजन से, मन रंजन हरि नैंना।।

राम सीता से

तुमरौ बन जाने कौ मन है, उतै दुक्ख छन छन है।
तिंदुवा शेर रीछ उर विगना, चीता सोउ हर बन है।।
निश्चर उतै सैकरन रावें, विपता भरौ विपिन है।
कीट पतंग कड़ोरन कइये, सांप उठाते फन है।।
'दयाराम' बन जाव न सिय तुम, संकट कठिन कठिन है।।

नारद मोह

नारद फिरवें फूले फूले, हम बन रये अब दूले।
जै माला गिर जाय गरे में, घरई करें घरगूले।।
जान न पाई हरी की माया, हरी मंती खुशबू ले।
'दयाराम' तज भजन पाठ सब, माया में मुनि भूले।।

राजा दशरथ

राजा दशरथ मुनि ना गये हैं, मन के हाल बतये हैं।
सोदो घरी शुभ्भ मुनिवरजू, राज दैन हम चये हैं।।
साजे साज अजुध्या में सब, आनंद अमित छये हैं।
चेरी मति फेरी केकयी की, वर दो दैन कये हैं।।
'दयाराम' सिंहासन तज कैं, वन खां निकर गये हैं।।

भाई

जीनें दुख भाई खां दयै हैं, सो फल भोग लये हैं।
प्रेम प्यार ममता सें पाले, भाई भुजा निज कये हैं।।
लात मार निज भ्रात निकारो, रावन सोइ पछतये हैं।
सतुवा सत्यानाश भओ सब, लंक गिद्ध मड़ रये हैं।।
'दयाराम' तब भाई विभीषन, हरि सें जा मिल गये हैं।।

परशुराम कथन

कीनें जोरो सिय सें नातौ, कौन भओ मद मातो।
कीनें दओ काल खां न्योतौ, जनक हमें समझा तौ।।
कौन कटन चावै फरसा सें, न्यारौ उयै करा तौ।
कात दया कीनें धनु टोरो, ऊकौ नाव बता तौ।।

लक्ष्मन कथन

मुनि जी वृथां काय खां फरकौ, टूटौ धनुवां हर कौ।
सरौ हतो छूतन सोइ टूटौ, दोष न कुछ रघुवर कौ।।
विरथां काय उलींचौ आंतें, सूके रूखे फरकौ।
'दयाराम' का हरजा हो गओ, देवो बता डुकर कौ।।

सूपनखा

जानों ना स्वभाव रघुवर कौ, खास सिया के वर कौ।
सूपनखा कयै व्याव रचालो, आवै मजा उमर कौ।।
हमरे संग सुंदरी सीता, ज्याव हतो रघुवर कौ।
'दयाराम' हरि ने लक्ष्मन खां, दओ इशारौ कर कौ।।

सीता से

तुमनें का ठानी है मन में, संगे जानें वन में।
करीं धरा मुलाम पैर हैं, छाले परें पगन में।।
इतै रुई से विछै विछौना, सोनें उतैधरन में।
सात वन्न कौ इतै खाततीं, उतै शांति बेरन में।।
रात निशाचर उतै भौत हैं, कछू न झूठ बचन में।
'दयाराम' कयें रीछ कीस रयें, उतमें विपिन सघन में।।

मुंदरी गिराना

मुंदरी ऊपर सें कपि डाली, सीता तुरत उठाली।
बाचों राम नाम सिय हरि कौ, सब कई कथा निराली।।
सिय ने सुनी हिये सुमरन कर, चूणामणि दई खाली।
आरये हरी लुवावे मैया, लंका किलकै काली।।
धीरज धरौ दिना दो दस कौ, कपी कही दै ताली।
'दयाराम' अबलौ हरि ने क्यों, मोरी सुध है नाली।।

रावन

इक लख पूत सवा लख नाती, मन्दोदर समझाती।
विंदिया गिरी भाल से मोरी, सिर ना सारी राती।।
मोरौ ना सिंदूर मिटा दो, होनी हमें दिखाती।
'दयाराम' का करत हमारौ, तैं विरथां घबराती।।

मंदोदरी

प्रीतम काय न तुम मानत हौ, वृथां जिद्द ठानत हौ।
दैदो सिया शरन में जाकें, विनय काय ना कत हौ।।
पर नारी कौ हरन मरन है, अपनी क्यों धानत हौ।
'दयाराम' वे ब्रह्म रूप हैं, तुम मानुष जानत हौ।।

मंदोदरी

प्रीतम करौ न मदकी देहा, जपो राम को गेहा।
दैदो सिया पिया कई मानों, वान गिरें ज्यों मेहा।।
बच जै लंक सिंदूर भरो रै, विरथां करौ न तेहा।
'दयाराम' कुछ सुजस कमा लो, करौ राम सें नेहा।।

शबरी

रघुवर गये शबरी के गेहा, ब्रह्म रूप की देहा।
भगत भाव में भीलिनी भूली, बरसी अंसुवन मेहा।।
बेर वेर बे वेर खुआवै, खा खा राम हंसे हा।
'दयाराम' जूंठे फल खावें, पगे मधुर रस नेहा।।

मंथरा से केकई

कारी कैसी बात सुनावै, कुबरी शरम न आवै।
भरत मोय कम राम हैं ज्यादा, तैं का का बतरावै।।
का है फरक दोउ भइयन में, जेठो राम कहावै।
'दयाराम' मोव राम तौ सपनें, राज कभंउ ना चावै।।

मंथरा

रानी देखौ हाल तुमाये, राजै जे मन भाये।
भरत ममाने तिलक राम कौ, भूप करत हैं काये।।
का होतो नुकसान बुलाते, कछू समझ ना आये।
'दयाराम' तोरे छोरा खां, राजा कभंउ न चाये।

राजा दशरथ

का कयें सुनों गुरुजी मोरी, विनती है इक थोरी।
चौथो पन आ गओ हमारौ, तीन व्यावता जोरी।।
बालक एकउ कें भये नैयां, किरपा करौ बहोरी।
'दयाराम' दशरथ जी ने तब, यज्ञ विशाल रचोरी।।

दशरथ

गुरुजी लरका एक न भओ है, विरधा पन आ गओ है।
हांत जोर पद वंदन करकें , दुखड़ा सबई सुनओ है।
गुरु वशिष्ट ने ऋषि श्रृंगी खां, तुरतई उतै बुलओं है।
'दयाराम' कयें पुत्र यज्ञ सो उन्नें तुरत रचयो हैं।

बालरूप राम

खेलें लरकन संग रघुराई, तज कें सब ठकुराई।
लुवा जात अपने घर लरकन, रये निज महल दिखाई।।
भोजन करत अकेले नइयां, संग सखन के खाई।
'दयाराम' फिर खेलन जा रये, रये निज चरित दिखाई।।

मंदोदरी

मानों पिया न बिलकुल हांसी, जा ना बात जरा सी।
खूनन की नदियां वै जावैं, नार पराई आंसी।।
राम बान की सुध ना तुमखां, सुनलो सैयां सांसी।
'दयाराम' बा सिया जानकी, नाथ जानकी प्यासी।।

स्वर्णमृग

स्वामी सोने कौ सारंग है, चमक रऔ अंग अंग है।
ईकी खाल लगत अति प्यारी, कई प्यारी सारंग है।।
जानें राम सकल घट घट की, वे जानत सब रंग है।
'दयाराम' हिरना के पाछें, चले सजा सारंग है।।

सती

देखी बा हठ दक्ष सुता की, शिव जी मन में आंकी।
लई परीक्षा शिव ने छोड़ौ, भेंट योग ज्वाला की।।
हिम गिर धरै देह तबधारी, लगन लगी भोला की।
शिव ने व्याव करो खुश देवा, 'दयाराम' किरपा की।।

मंदोदरी

तुमनें दाग लगा लओ बड़कें, सिया चुराई कड़कें।
पर तिरिया को हरन करो तुम, जाते जीतन चड़कें।।
कायर कैसे वेष बदल कें, सिया लियाये तड़कें।
'दयाराम' कयें सिया लियाते, जीत कें उनसें लड़कें।।

--

जिनसें बैर बड़ौ ठाने हैं, पार नहीं पाने हैं।
कां गई अकल लंकपति तुमरी, वेद शास्त्र छाने हैं।।
दै दो सिया अबई उन हरि की, सबई कुशल राने हैं।
'दयाराम' बे ब्रह्म रूप हैं, तैं मानुष जानें हैं।।

--

प्रीतम कही मान लो मोरी, विनय करूं कर जोरी।
हा हा करों पांव पर परकें, बची रये जा रोरी।।
फरकत आंख दायिनी फिर फिर, अशुभ होत ना थोरी।
सिया पिया दो 'दयाराम' कयें, लंकै होय न होरी।।

-मन्थरा-

जावें राम राज तज वन में, छोड़ अबध खां मन में।
जोगी भेष धरे घर छोड़ें, रावें सघन विपन में।।
राज भरत सब इतै समारें, का है फरक सुतन में।
'दयाराम' केंकई मति फेरी, चेरी ने बातन में।।

सीता

जौ मृग सोने कौ है स्वामी, सुनों गरुड़ के गामी।
ईकी खाल भाई मन मोरे, जानी अंतर यामी।।
लखन लखौ सीता कुटिया पै, पोंचै देखो स्वामी।
'दयाराम' हरि दूर चले गये, मृग छल कीनों स्वामी।।

-रामराजा-

दरसन करौ राम राजा के, नगर ओरछा जाके।
मोहन रूप हरन दुख जग के, सुक्ख करन पिरजा के।।
दास सदा अंतरगत ध्यावै, राजी तोइ रजा के।
'दयाराम' पै दया दयाकर, वरसइयो हरषा के।।

मंदोदरी

उनसें बैर करें दुख होजै, होजै चौपट होजै।
दैदो सिया पिया उन हरि खां, हरि खां हरि समजोजै।।
नातर लंक बचै ना स्वामी, स्वामी अपजस होजै।
'दयाराम' कयें अबहूं चेतो, चेतौ बेजां होजै।।

--

तुमरौ सोनों माटी होजै, जब धनु वान धरो जै।
मानों ना दशकंध बात तुम, कुटुम कबीला सोजै।।
दैदो सिया सियापत सुमरौ, पाप मैल सब धोजै।
'दयाराम' फिर कइयो ना कुछ, बात जा बेजां होजै।।

नारद मोह

बाला नारद जी खां जच गई, सकल हिया में रच गई।
कैसें मिले हमें जा बाला, मति कामी सी कस गई।।
मांगों रूप हरी सें जाकें, बात हिये जा धस गई।
'दयाराम' माया बस मुनिमन, विश्व मोहनी बस गई।।

देवता गण

जो कऊं इन्नें राज समारौ, दुख ना मिटै हमारौ।
दानव दुख देवन खां देवें, जुर मिल जतन विचारौ।।
शारद जाव मती तुम फेरौ, जबई होय निनवारौ।
'दयाराम' तुम रामचंद खां, बन में अब तौ टारौ।।

संजीवनी लाना

हनुमत अब तुम देव सहारौ, कठिन कष्ट जौ टारौ।
दोनागिर पै मूर संजीवन, तुम लैवे पगधारौ।।
पवन पूत बलवीर बांकुरौ, पोंचत पार उखारौ।
'दयाराम' सांसउ हनुमत नें, होन न दओ भुंसारौ।।

सूपनखा

साजन मानों मोरौ कैना, हम कम सुंदर हैना।
कर लो व्याव जुड़े जोड़ी जा, कमी काउ की रैना।।
राम कहीं भओ व्याव हमारो, पत्नी तुमें दिखैना।
लक्ष्मन ढिंगा आई सुंदरिया, ऊकी दार गलैना।
'दयाराम' दई सैन लखन खां, नाक कान की सेंना।।

--

गौरौ रूप रती सें प्यारौ, मोरी कोद निहारौ।
साजी लगों मोय अपना लो, क्वांरौ लखन हमारौ।।
नाक कान काटे लक्ष्मन नें, बै गओ रकत पनारौ।
'दयाराम' नें दओ लखन खां, ऐसौ तनक इशारौ।।

विश्व मोहनी

डट डट बैठे राजा मंचन, आये बना प्रपंचन।
विश्व मोहनी हम वर लेवें, दोरत आये चन चन।।
नारद रूप बनायें हरि कौ, जा बैठे वे मंचन।
'दयाराम' को ना लुभयानो, देख कामिनी कंचन।।

वनवास

आज्ञा सिर धर ली राजानें, राज पाट नईं चानें।
भइया भरत बनें अब राजा, ही में खुशी समानें।।
हम सोउ चलें विपिन में संगै, कई सिय लखन ललानें।
'दयाराम' वन ही घर हमखां, जो दओ मंजली मां नें।।

--

हरि ने शांति हेतु घर छोड़ो, प्रन अपनों ना तोड़ो।
आतंक वाद नाशवे बन गये, नैकऊ ना मुख मोड़ो।।
सुजन रखांय मारवें दुरजन, ईसें नातौ जोड़ो।
'दयाराम' औतार राम कौ, पाप घड़ा सब फोड़ो।।

ग्रामों की नारी

जानों सिया लखन रघुराजा, जाय विपिन के काजा।
की नें इनें काय वन दैदओ, कातन आई न लाजा।।
बा रानी कैसी मति की भई, कैसी भई समाजा।
'दयाराम' का सिर्री हो गओ, जिजी अबध कौ राजा।।

भरत कथन

कैकई करी भरत सें दूरी, सब कै रये थू थू री।
काये वर मांगो तो बन कौ, पागल भई न तू री।।
गिरी न गाज तोय सिर पापिन, आई न तोखां जूरी।
पठै दयो वन राम लखन सिय, हती कौन मजबूरी।।
'दयाराम' प्रभु अवध आये जब, वर्षें हो गई पूरी।।

विश्वामित्र

भूपत तनक बात कानें है, निश्चर गर्रानें है।
करन न देत जज्ञ पूजा कुछ, भारी उबराने हैं।।
शंक न करौ देव सुत दोऊ, राजा घबराने हैं।
'दयाराम' कयें जज्ञ रखावे, राम लखन चाने हैं।

परशुराम

मैंने शब्द सुनों गाड़ौ है, सुनतन ही ताड़ौ है।
बीस विसे शंकर धनु टूटो, अमित कोप बाड़ो है।।
देखो इतै जनक घरआकें, भारी रंझाड़ौ है।
पतौ परो टोरो धनु रघुवर, रन झंडा गाड़ो है।।
'दयाराम' आ जाव सामने, परशुराम ठांड़ो है।।

संदेश अंगद द्वारा

जाकें दशकंधरसें कैना, सिया अबई दै दैना।
सिया हरी सो हरी शरन जा, अपने शीश झुकैना।।
गलती मना प्रार्थना करकें, चरन हरी के गैना।
'दयाराम' नातर दशकंधर, बिगरी तोई बनेंना।।

सती

धर लओ सीता भेष सतीनें, संग न दओ मती नें।
शंकर की कई मानी नइयां, दैदई ढील पती नें।।
राम लओ पैचान सती खां, भेजो करम गती नें।
'दयाराम' शंकर ने छोड़ो, जारी देह सती नें।।

राम राज में कलंक

राते तें कां रई हिरानी, कैसी मति पगलानी।
मोरे मनें खटक गई पूरी, तें हो गई बिरानी।।
अब तौ मैने छोड़ो तोखां, सुन लै त्रिया जवानी।
'दयाराम' नें सीता राखी, बना लई फिर रानी।।

सूपनखा

सज बन आ गई सुगर स्यानी, चाल चलै मस्तानी।
सोरउ करें सिंगार नवेली, कहै राम सें बानी।।
तो सम पुरुष न मो सम नारी, विधि की नैयां जानी।
'दयाराम' कयें जाव लखन ना, बेई बनावें रानी।।

मंदोदरी

हर लई सिया पिया नई पलनें, बिरथां गये ते छलनें।
वे ना पुरुष ईश औतारी, हांत पछाऊं मलनें।।
अबै कछू ना बिगरो प्रीतम, नातर कंचन ढलनें।
'दयाराम' कर देवें अबहूं, बात उनई की चलनें।।

मंदोदरी

जिदना रामादल खां चलनें, उदना बातें खलनें।
मानो पिया सिया ना दई तौ, होरी सी है जलनें।।
वंश नाश लंका पै डंका, रघुवंशी कौ घलनें।
'दया' राम की सबरी चलनें, एक न तोरी चलनें।।

मंदोदरी

कैरई दशकंधर की प्यारी, मानों पिया हमारी।
रार करौ ना उनसें सैयां, वे हैं प्रभु औतारी।।
नाव निशान मिटै लंका कौ, कां गई अकल तुमारी।
'दयाराम' तुम जग जननी खां, जान रये हौ नारी।।

मंदोदरी

जानें जानें कै ना जानें, मानें कै ना मानें।
कें हम अवश्य शरन गौ हरि की, सदा सुक्ख जो चानें।।
करुना सिंध करें वे करुना, उनकी सिया पठानें।
'दयाराम' मंदोदर मन के, भाव राम जी जानें।।

सूपनखा

आई बा बन ठन कें गोरी, विश्रवा की छोरी।
कर लो व्याव राम जी हमसें, सुन्दर बन जै जोरी।।
तुम सौ पुरुष ना हम सी नारी, खिल जावै रंग होरी।
'दयाराम' हंसकें मुसकाकें, बोली नैन मरोरी।।

मंदोदरी

ना कोउ उन समान है दूजा, सैयां बात घरू जा।
दैदो सिया पिया उन हरि की, बिनती रोज करूं जा।।
पी लई काय हद्द सें जादां, तुम मद की दारू जा।
'दयाराम' है सार एइ में, करौ राम की पूजा।।

सूपनखा

मानों मानों मोरौ कैना, व्याव संग कर लैना।
हमरे तुमरे सम ई जग में, ब्रह्मा और रचेना।।
क्वांरे भइया लखन हमारे, हमना दार गलैना।
'दयाराम' नें नाक कान की, दई लखन खां सैंना।।

मंदोदरी

हरकें ल्याये पराई नारी, सबरी बात बिगारी।
चेतौ अबई भूल सब सुदरै, मांगौ छमा विचारी।।
लैकें सिया शरन में जाओ, वे हरि हैं औतारी।
'दयाराम' धनु टोर लियाते, जो तुम थे बलधारी।।

सूपनखा

मोरौ रूप रती से प्यारौ, मोरी कोद निहारौ।
तुम मन बसे मोय अपना लो, बचन न मोरे टारौ।।
काटे नाक कान छोटू ने, पाकें तनक इशारौ।
'दयाराम' कयें रघुवंशिन ने, एक नार व्रत धारौ।।

धनुष भंग

टूटो धनुष शब्द भओ ताजा, परशुराम आ गाजा।
पोंचे जाय जनक के दोरें, कैसी जुरी समाजा।।
देखो धनुष डरे दो टूंका, जनक तें हमें बताजा।
अलग होय नातर सब मारों, डंका मुनि का बाजा।।
'दयाराम' कीनें टोरो धनु, आय कौन बौ राजा।।

राम राजा

दरशन करें राम राजा के, बड़े भाग हैं बाके।
रोजई करें प्रनाम भगत जो, चरनन शीष नवाके।।
करवें कृपा दास अपने पै, दें भव फंद छुड़ाके।
'दयाराम' पै दया राखियो, नंदन कौशिल्या के।।

सीता की खोज

खोजत फिर रये डांग मंझारी, रो रो कहें पुकारी।
पशु, पंछी, विरछा उर भौंरा, बांटौ विपत हमारी।।
मारत मूड़ विलाप करें प्रभु, कां गई जनक दुलारी।
'दयाराम' कैसी कां हुइयै, हा सीता! सुकमारी।।

रावन

रावन जी में ना कुछ जानी, मगन भओ दिलठानी।
सादू वेष भई बदनामी, करम जगत सब जानी।।
छाया माया जान न पाओ, मात जानकी जानी।
'दयाराम' सीता की छाया, हर ल्याओ अभिमानी।।

लवकुश

काये घर सें तुमें निकारे, काये जुलम गुजारे।
बिना कसूर काड़ दये कैसें, कैसे राम तुमारे।।
हम सब उनसें पूछें जाकें, दिइयो ज्वाव हमारे।
'दयाराम' लव कुश खिसयावें, सीता के गब वारे।।

रावन वध

हरि ने अगन वान काड़ो है, रावन पै छांड़ो है।
नाभि बीच अमरत पै घालो, जाय छिदो ठांड़ौ है।।
खाय पछार दशानन गिर गओ, फूटो मद भांड़ौ है।
'दयाराम' को बच पावै जब, हरी कोप बाड़ो है।।

सीता से

विरथां रंज करो है दिलनें, कमल कली सौ खिलनें।
टोरें धनुष लिलोर लगे जे, इनखां नहीं पिछलनें।।
पूरन हो अभिलाष ललीकी, और न कोउ पै हिलनें।
'दयाराम' सखियां कयै सुनलो, सियै जेई वर मिलनें।।

सीता को आरोप

वौ पति भौतई गुस्सा वारौ, हतो भौत हत्यारौ।
मार देत पत्नी खां कै कै, रैन समय कां सारौ।।
हम वे राम नौइतें सुनलै, सीता खां बैठारौ।
'दयाराम' को धर देतो कओ, ऊके मों पै पारौ।।

मंथरा (सि. वि.)

हो रओ राज राम खां रानी, रानी काय चिमानी।
मानी बात बड़ों की राजा, का दिल बीच समानी।।
मानी नईयां चार रोज को, भरत घरै ना स्यानी।
स्यानी का कन्नें है मोये, होने हमें न हानी।।
हानी का होती बुलवाते, राजा बड़े ज्ञानी।
ज्ञानी 'दयाराम' कैंकयी कयै, कुबरी कहा सुजानी।।

दशरथ

मुनिजू वचन न ठीक उचारो, सोचौ और विचारो।
चौथे पन में लरका पाये, इनकी ओर निहारौ।।
जे का करें चलत हम संगै, खल दल सब संहारौं।
भूमि लेव, धन, चांदी सोना, हीरा मोती सारो।
राज पाट गज धेनु मांग लो, घोड़ा कीमत वारौ।।
'दयाराम' दशरथ कयें सुत हैं, मोरो प्रान सहारो।।

राम विवाह

मूसौ गनपत जू कौ दौरा, सिंह विराजी गौरा।
सरसुत हुलस हंस पै बैठीं, खूब मचो दमचौरा।।
विष्णू गरुड़ विराजे सजकैं, राम व्याव कौ दौरा।
'दयाराम' शिव देखन सोउ गये, सजा नादिया धौरा।।

धनुष यज्ञ

जोरत राम सिया सें नातौ, बात लगी है बातौ।
रघुवंशी जो होय सभा में, कोउ न ऐसी कातौ।।
बेटा राम उठौ धनु टोरौ, मेटौ जनक पिरातौ।
'दयाराम' तुम सादें रइयो, सुन लो शेष धरा तौ।।

नारद

जादू विश्व मोहनी डाला, बाबा भओ मतवाला।
भूल गये वे धूनी सूनी, तजी गौमुखी माला।।
जानें कितै तमूरा डारो, कवै परै वर माला।
'दयाराम' दै देव रूप हरि, वरै हमें बा वाला।।

दशरथ

मुनिजू राम लखन हैं छोटे, निश्चर लम्बे मोटे।
उमर लिलोर अबै कुंवरन की, खल दल भारी खोटे।।
जे का करें उतै रखवारी, काल परों के ढोटे।
'दयाराम' लै लो धन मुनि जू, कछू न धन के टोटे।।

दशरथ

लरका चौथे पन में पाये, मुनि जी मांगन आये।
हमखां तौ प्रानन सें प्यारे, सेना दूं पोंचाये।।
मैं खुद चलों करों रखवारी, धन लो सब हरषाये।
'दयाराम' कुछ और मांग लो, लै लो जो मन भाये।।

धनुष यज्ञ

सुन लो समाचार सब ताजा, धनुष जज्ञ है साजा।
जो भूपत धनुवां खां टोरै, हार गिरै हो काजा।।
जनक करो प्रन कठिन सोस में, परगई भूप समाजा।
'दयाराम' कयें हला पाओ ना, शंकर धनु कोउ राजा।।

स्वर्ण मृग

हिरना देख सिया खल बल की, करी न देरी पल की।
जा मृग खाल ल्याव हरि हम खां, धरौ वान पै फल की।।
सारंग धर सारंग के पाछें, दौरे माया खल की।
'दयाराम' जी ने सब जानी, बात मृगा के छल की।।

सरमन के दशरथ वाण

बेटा तूमी भर ला जल की, देर ना कर अब पल की।
लागी प्यास दोऊ प्रानिन खां, सरमन नें खल बल की।।
दशरथ सादें वान डटैते, धुन सुन लई कल कल की।।
'दयाराम' दशरथ जी कै रये, बात न कौनऊं छल की।।

सरमन के दशरथ बाण

सरमन नीर लैन गयो खासे, लौट न पाये मां से।
बान घलो मिरगा के धोकें, दौरे दशरथ खासे।।
पाप भओ पछता रये राजा, करम लिखे जे पांसे।
'दयाराम' लै जइयो पानी, मात पिता हैं प्यासे।।

सीता हरन

रावन पंचवटी जा मेला, जान सुनहरी बेला।
लक्ष्मन रेखा पार करै ना, पाप ने ऊखां ठेला।।
देदो भीक वायरें कड़कें, लयें हाथ में बेला।
'दयाराम' सीता हर लै गऔ, पौंचो जान अकेला।।

रावन अंगद से

तैंने बदलौ खुद ना लओ है, चमचा फिर बन गओ है।
ओई राम नें तोय बापखां, सुर पुर भेज दओ है।।
लै लै सैन हमारी अंगद, राम अबै रो रओ है।
'दयाराम' बाली कें सांसउ, तै कपूत इक भओ है।।

लव कुश से सीता

सीता पकर हतुलियां तानो, हाल चाल सब जानो।
फेंक दई लै छुड़ा धनैयां, लवकुश मन खिसयानो।।
छूट गये लरवे खां भागे, धनुवां तनो दिखानो।
'दयाराम' जी पिता तुमारे, बेटा मानो मानो।।

धनुष भंग

तड़ तड़ तड़ तड़ाक भऔ नाटो, घड़ घड़ात भओ घाटौ।
दम दमात दामिन सौ दमकौ, घर घर भओ घर्राटौ।।
गये तड़फड़ा लोक तीनऊ जब, चर चर भओ चर्राटौ।
'दया' राम ने धनुवां टोरो, खिंचौ उतै सन्नाटौ।।

मंदोदरी

काये अपनी नाक कटाते, लंका नाश कराते।
वीर हते तौ धनुष टोर कें, सिया व्या कें लाते।।
इक बंदरा के हाल न देखे, कैरई पति के नाते।
बिगरी बात अबै सब बन जै, काय न शरनन जाते।।
'दयाराम' तुम चोरी करकें, घर पै ऐंठ बताते।।

--

जीके राम होत रखवारे, को का करत विगारे।
ध्रुव, प्रहलाद, विभीषण, पंडा, जिनपै करी कृपा रे।।
तीन लोक चौदा भुवनन में, को उनके ब्रत टारे।
'दयाराम' जो उनकौ होजै, सब हो जायं सुधारे।।

राम वनवास

हरि नें दूद मंगाये बड़के, वांदे जटा रगड़ के।
सन्यासी के भेष धर लये, गये अंगाई बड़के।।
चौदा साल विपिन में काटे, लये धन बान पकड़ के।
मारो मंत मंथरा ऐसो, कैकई गई बिगड़ के।।
'दयाराम' सीता संग लक्ष्मन, राम गये वन कड़के।।

कैकयी

लल्ला राम कैकई माता, लाड़ प्यार सब पाता।
राम भरत सें जादा प्यारौ, पुत्र मात कौ नाता।।
राज तिलक की बेरा आई, फेरी मती विधाता।
चमत्कार वनवास राम कौ, देखौ कौन कराता।।
कां गओ लाड़ प्यार कैकई को, इये जानते ज्ञाता।
'दयाराम' बैरिन सी हो गई, आज कैकई माता।।

अंगद

अंगद शंक न मन में खाता, रावन को समझाता।
दैदो सिया काउ में ना तुम, बात तत्त की काता।।
मोरौ पांव कोउ हुमसावै, तौ मैं सिया हराता।
'दयाराम' दशकंध सभा में, अंगद पांव जमाता।।

रामकथन

हनुमत द्रोना गिर को जाओ, मूर संजीवन ल्याओ।
बूटी तुमें ल्याने मांसे, बिन दिन ऊरत आओ।।
लक्ष्मन इत बेहोश परे हैं, शोक सभा में छाओ।
'दयाराम' सूरज ना ऊरें, जाओ बूटी ल्याओ।।

सरमन

बेटा तनक गम्म खा जाओ, थक गये हौ सुस्ताओ।
प्यास लगी तूमी लो अपनी, अब ना देर लगाओ।।
को जानत होनी का होनें, सरमन उतै पठाओ।
'दयाराम' कई मात पिता ने, जाजा पानी लाओ।।

मंथरा

आ गई नई पाटी बा पड़के, कैकई सें कयै कड़के।
राज तिलक कर रये राम कौ, धरै नईं दो लड़के।।
कोउयै मिलै राज का कन्नें, होनी छाई घुमड़ के।
'दयाराम' कैकई के दिल में, बात गई जा गड़के।।

केबट

धूरा धुआ लेव पांवन की, करौ कृपा आवन की।
नारी बनै काठ की नैया, जैसें भई पाहन की।।
बड़जै जौ परवार नार सें, भीर परै लरकन की।
'दयाराम' समजत सब रघुवर, निज भक्तन के मन की।।

नारद

पर गये मुनि चक्कर में भइया, देखत सौन चिरैया।
देखत हांत हांत मन ना रओ, निकर न जाय समैया।।
हरी रूप देव घरी भरे खां, मिलवै सिकी गकैया।
'दयाराम' नारद खां चानें, वेई सुघर दुलैया।।

सूपनखा

मन की हो गई डग मग नैया, मोही लख रघुरैया।
सज वन सब सिंगारन करके, आई कपट कुलैया।।
मो सम नार पुरुष ना तो सम, लगनें नहीं रुपैया।
'दया' राम सें सूपनखा कयै, हमें बनाव दुलैया।।

चेतावनी खंड

उनकें खुलो सबई को खातो, फरक न तनक दिखातो।
जो कोउ जैसी करै मजूरी, उतनई, फल वौ पातां।।
राई घटै न तिल बड़ने है, सुख हो चाय पिरातो।
'दयाराम' जो मन ना मानें, देखौ करकें तातौ।।

तत्त

मिलजै किदना पवन पवन में, सोचत नइयां मन में।
तन कौ तेज तनक में जाकें, मिलजै कवै अगन में।।
पानी उतर जाय पल भर में, रयै न नेह द्रगन में।
सबद न काऊं सुनाय, देखियो मिलजै कबै गगन में।।
'दयाराम' का तत्त रयै फिर, ई सोने के तन में।।

टूईयां

जौ लौ बसै बाग में टुइयां, हंसत दिखावै मुइयां।
साजी लगत बोलतन भारी, बैठी कौन डरैयां।।
बोलौ वैन रस भरे ऐसई, जौ लौ है परछैयां।
गरव न करौ इतै काउ कौ, भरम जार सब गुइयां।।
'दयाराम' तौ सांसी कै रये, कोउ काउ कौ नइयां।।

धरती

धरती सदा अमर जेई रानें, काय खां कड़ी कृपानें।
का है सार लराई में कऔ, छूटें महल खजानें।।
नेकें चलौ मधुर सब बोलौ, नाव जगत में रानें।
'दयाराम' कोटन कौ लोहू, पी लऔ एइ जांगानें।।

बलबूला

देखौ हाल चाल नर नर कौ, बरबूला अतपर कौ।
भारी करै गरूर न मानें, लरै भिरै वे दर कौ।।
झूंठौ आडम्बर सब जोरै, देखौ दुनियां भर कौ।
'दयाराम' ई घर में भूलौ, ध्यान नहीं ऊ घर कौ।।

जाल

जौ जग भरम जार अतपर कौ, दुख हैं नारी नर कौ।
मकरी कैसौ जारौ जानों, कै फूला सेमर कौ।।
देखत में सब सांसौ सांसौ, झूठ सबई वे दर कौ।
भूलौ फिरत सबई माया में, विरलौ है जो वरकौ।।
अपनों अपनों सब कोउ कावै, सपनों है पल भर कौ।
'दयाराम' रैवे जौ घर दओ, बना लओ तैं घर कौ।।

सत्यता

इक दिन बननें सबखां दूला, कनवा हो चाय लूला।
लै जै उठा पालकी तोये, भौत बजै रमतूला।।
परकम्मा सोउ परै तुमारी, चलौ बरात झडूला।
'दयाराम' कयें विदा हुयै जब, पइसा लुटवें फूला।।

माया

मानुष भरम जार में भूला, चल रओ मटका कूला।
बात बात में शान बगारै, होवै आग बबूला।।
ईकौ ऊकौ धन हड़पै फिर, चड़ा पाप कौ चूला।
हुस्न-जोत पै परवाना भओ, भओ शहीद बन दूला।।
'दयाराम' जा शम्मा ऐसी, जैसे सेंमर फूला।।

पुतरा

जौ तन पानी कौ बलबूला, अहंकार में भूला।
भूल गओ करता धरता खां, बनो फिरत है दूला।।
चेतत नहीं समय चेतावै, बजा बजा रमतूला।
'दयाराम' माटी को पुतरा, काय पै फिर रओ फूला।।

माया

प्रानी काय करत अभिमानी, अपनी अपनी ठानी।
पर धन हरत लरत ई ऊसें, चुगली तोय पुसानी।।
जपत न हर नित उदर भर रत, एसई उमर बिलानी।
मद, माया, ममता में मोहो, व्याव बरातें छानी।।
ना संतोष भओ हिरदे में, दुख की जर हरयानी।
'दयाराम' समरत ना काये, बनत काय अज्ञानी।।

बुलौआ

भइया सब खां ऊ घर चलनें, चलनें सांसऊं चलनें।
चलनें नहीं एक काऊ की, कोउयै भौत मचलनें।।
चलनें कोउयै सुनो पछाऊं, कोउयै पैलां चलनें।
चलनें 'दयाराम' कयें सांसी, आय बुलौआ चलनें।।

परमारथ

जौ तन परमारथ के लानें, नर खां दओ विधना नें।
चार रोज कौ थोरौ जीवन, कथा कहानी रानें।।
ना लैकें कुछ इतै आव कोउ, ना लैकें कुछ जानें।
'दयाराम' सबरे जीवन में, वेई राम समानें।।

माया

कर रये सब अपने दिन पूरे, रै गये जौन अधूरे।
लिपटे मान्स मोह माया में, भरत भौत बगड़ूरे।।
उनखां निठुअंई भूल जात है, भारी बता गरूरे।
'दयाराम' भज लो भगवानें, ना लै जैव कछूरे।।

सत्यता

कैसे मटका रयेजे कूले, चार रोज खां भूले।
लै जोरा की जा नौटंकी, जोरे लंगड़ा लूले।।
जै दिन बँदे तमाशो कल्लो, पानी के बलबूले।
चार रोज की चटक चांदनी, फिर अंदियारे झूले।।
'दयाराम' कोऊ ना पूछें, नाहक मद में भूले।।

विदा

रोवें वैन भाई उर मैया, आ गओ विदा समैया।
सखियां सबई पोंछ रई अंसुवा, हो रई हा हा दइया।।
फेंके भौत बताशा पइसा, सैकरयांव रुपैया।
'दयाराम' डोली में जावे, देखी सजी दुलैया।।

मायकौ

नैके रही मायकें भइया, देखत रहे दिखैया।
नैचे सें ऊपर ना हेरी, खूब खिलाओ मइया।।
आ गये सजन लुवावे अबतौ, टिया न कोउ टरैया।
'दयाराम' से मिलवे देखौ, चली अटाइ दुलैया।।

काया

बगिया एसई नई रानें है, फूला मुरझाने है।
फरने जबई सुनों फल ईके, हरिया मड़राने है।।
इन हरियन सें रखा पाओ को, कबै कतर खाने है।
माली देखभाल नित करवै, कछू न कर पाने है।।
'दयाराम' कितनऊं कोउ सींचौ, सूक इयै जाने है।।

चेतावनी मन करनी

मानों कर देखों खुद तातौ, मनुष करम फल पातौ।
करें पाप अत्याचारी नर, कोउ कछू ना कातौ।।
बचो दिया दैवै कोउ नैयां, चलो पाप कौ जांतौ।
'दयाराम' जो जैसौ करवै, वैसौ इतईं दिखातौ।।

मैना

जौ लौ बसै बाग में टुइयां, मुसकावै जा मुइयां।
साजी लगत बोलतन भारी, बैठी कौन डरैयां।।
गरव न साजौ ई बगिया कौ, भरम जार है गुइयां।
'दयाराम' मैना कब उड़जै, जा कोउ जानत नैयां।।

घमन्ड

मानुष सूदी गैल जो जातो, दुक्ख नेंक ना पातो।
साड़े तीन हांत कौ पुतरा, उचम न नेक मचातो।।
करें सरग में टोंका फिर रओ,रात न तनकई सांतो।
दद्दा सें दद्दा भइया सें, भइया जो नर कातो।।
'दयाराम' कयें सबई धरो है, धर्मराज कें खातो।।

स्वार्थ

जौ नर भौत स्वारथी जानों, मानों चाय न मानों।
स्वारथ हेत बाप कत फिरवै, रोज फिरत पछयानों।।
हा हा करत पांव पर परकें, हांत जोर गिगयानों।
धोकौ देत शरम ना खातई, गुनियन नें पैचानों।।
'दयाराम' जो एक बाप को, चोखो सोउ वखानों।।

सरल भक्ति

सूदी गैल चलत ना काये, टेड़ी टेड़ी जाये।
टेड़ी गली कटीली भारी, कौन तोय समझाये।।
पथरीली भारी पगडंडी, रीछ शेर दर्राये।
आफत विपत भौत सी आवै, सूदी शांति बनाये।।
'दयाराम' का कन्नें कोउयै, करौ जियै जो भाये।।

कुधान

जो कोउ खात गुफत कौ खाना, बांचौ लेख सुजाना।
बुद्धी लगै पाप में ऊकी, तुरतई करम नशाना।।
करम नशांय पापफिर फैलो, दुख कौ भरो खजाना।
सब परवार दुखी रये निसदिन, बरजी एक न माना।।
'दयाराम' आखिर की बेरा, उदरा परै चुकाना।।

करनी

कर सें करी न नीकी करनी, खूबई करी कतरनी।
होजा सई लैन पै आजा, मन में सुमर सुमरनी।।
चल ना इतै फुला कें छाती, भरी कौन सी भरनी।
चार दिना खां इतै आव तें, पकर सत्य की तरनी।।
'दयाराम' सोने सी काया, घास पूस सी जरनी।।

बिना लाठी मात्रा की चौकड़िया (सिंहाविलोकन) भजन

अब नर जपत न हर हर पल-पल, करम करत अघ पर चल।
चल चल मत भरमत रत रतकर, हर अपजस कर पल पल।।
पल भर कल न परत फरकत रत, फसत रहत चल दल दल।
दल दल बचत भजन कर हर हर, कर न तनक मन छल बल।।

घमंड

निस दिन करौ हरी पद बंदन, बंदन असुर निकंदन।
विरथां सोच करै मन मूरख, वे काटत जग फंदन।।
तन मन धन सें उनके हो लो, वे मेंटत दुख दंदन।
'दयाराम' सीता पति सुमरौ, दीन बंधु रघुनंदन।।

घमंड

मैं मैं कंस कहै मानें ना, मैं कम रावन में ना।
मैं मैं हिरनाकुश अपनाई, हरि खां मनें डरैना।।
मैं मैं गाड़र छिरिया करवै, छुरियां चलत रुकैना।
मैं मैं करी जबै जीनें सो, ऊकौ पतौ परैना।।
'दयाराम' सांसी सब मानों, जा सांसी है मैं ना।।

घर

खाली करनै परै कुठरिया, लिइयो वांद पुटरिया।
मानै ना मालिक कयै कोऊ, डुकरा सुनों डुकरिया।।
मन की खुशी राखनें जौ लौ, तौ लौ खुली किवरिया।
'दयाराम' जीनें दई तीखां, दिइयो सोंप कुठरिया।।

खाली हाथ

आये चले जैव जा जानों, मानों चाय न मानों।
बिरथां फूले फूले फिर रये, अपनी अपनी तानों।।
अहंकार लर भिर ललकारै, लूटौ माल खजानो।
'दयाराम' जैव खाली हांतन, विरथां करौ धिंगानों।।

चिरैया

काये बनो फिरत कठकोला, खो रओ समय अमोला।
जौ घर ना है तोरौ राने, माया बिरथां ढोला।।
ऊ घर की ना खबर करै कुछ, जितै उतरनें डोला।
'दयाराम' उड़ जात चिरैया, छोड़ छाड़ जौ चोला।।

स्वार्थ

दुनियां सब स्वारथ पै जाती, लरका हो चाय नाती।
मेरी कुड़क जात चुरिया सौ, स्वारथ कला दिखाती।।
स्वार्थ स्वार्थ की नातेदारी, स्वारथ रंगे बराती।
तात मात बिटिया स्वारथ की, करौ बात सब ताती।।
'दयाराम' ई जग में नैयां, सासऊं कोउ संगाती।।

गरूर

मानुष तन भारी अनमोला, क्यों गरूर में डोला।
कर लै पर उपकार धरम कुछ, पाप रंग क्यों घोला।।
चार दिना की होत चांदनी, फिर अंदयारौ बोला।
'दयाराम' तक लियो एक दिन, कितै बिला जै चोला।।

गरूर

मानुष क्यों गरूर में डोला, कब लग जै हिचकोला।
चार जनें ईंधन पै धरकें, बारें बसत अमोला।।
दस मइना में बनो सुहानों, चलो न सूदौ गोला।
बड़ौ भओ मल मल के धोओ, अतर कान पै बोला।।
'दयाराम' माटी में मिल गओ, जौ माटी कौ चोला।।

सत्यता

साजे जात जात पाखंडी, नागा होय चाय डंडी।
गरमी भौत दिखावै तन की, धन की बनी बरंडी।।
कोउ न आखिर कामै आवै, जो करवै बलखंडी।
'दयाराम' का कोउ करै जब, काया पर गई ठंडी।।

माया

सम्पत जोर धरी जां तांकी, बंदूकें धां धां की।
लूटो खूब मस्त मस्ती में, ना कौनउं परवा की।।
कर्मन कौ फल परै भोगनें, याद आई दादा की।
'दयाराम' इत कैसौ भूलो, खबर नईं कुछ मां की।।

स्वार्थ

फेंकत सब स्वारथ के पांसे, कोउ झूठे कोउ सांसे।
बिन स्वारथ कोउ पास न आवै, स्वारथ करै तमासे।।
मायके जात सौत के अटकें, पूंछत नइयां खासे।
'दयाराम' बेई जात कुआ पै, जो कोउ होत प्यासे।।

माया

माया है मीठी शक्कर सें, दुष्टन शेर बबर सें।
मीठौ जहर जाल माया कौ, है कठोर वज्जुर सें।।
पानी कौ बरबूला माया, लेती फसा हुनर सें।
'दयाराम' कयें को बच पाओ, माया के चक्कर सें।।

माया

माया है कोरी परछाईं, कोउ पकर न पाई।
जोगी जपी तपी सब मोहे, का औकात हमाई।।
जान जान जा फसत जार में, जौ मन तकत नुनाई।
ठगनी ठगै मनें मुसकावै, रई निज मंत चलाई।।
बिरलौ काट पाय जौ फंदा, बंदा बोई कहाई।
'दयाराम' माया में मूरख, निज लौ रहो लगाई।।

माया

ऊंचे बन गये अटा अटारी, सम्पत धरी समारी।
जौ मोरौ जौ तोरौ कइये, लरी लराई भारी।।
दिन उर रैन चैन लओ नइयां, जबसें सुर्त समारी।
इक दिन सब कुछ परो छोड़नें, उनकी खबर बिसारी।।
'दयाराम' करनें है सबखां, जावे की तइयारी।।

सपना

जौ लौ दवो मान्स खां सपनों, तौ लौ कै रओ अपनों।
आंखें खुले जगे पै जानें, जौ जग सबई किलपनों।।
सोवे की तौ बात दूर है, आंखन आय न झपनों।
देखत रऔ सपने की माया, सबकौ अपनों तपनों।।
'दयाराम' सांसी कयें सब जौ, जपौ राम कौ जपनों।।

झूठौ नातौ

जो जग जियत जियत कौ नातौ, पूंछत ताप पिरातौ।
जी कड़ गओ कहें सब मट्टी, बारौ सब कोउ कातौ।।
दिना चार छै याद करौ फिर, हलुवा पूड़ी खातौ।
'दयाराम' जब पिंड छोड़ दये, काय को रै गओ नातौ।।

स्वार्थ

लरका बउयें नाती पोता, बिरलौ है दुख ढोता।
अचल भये खटिया जब गै लंई, सबई लगावें गोता।।
बउयें कतीं तुमाव बाप है, तुमई लगादो पोता।
नाकें मूंद मूंद कड़ जातीं, पैल छुड़ा लओ धोता।।
'दयाराम' बिरलौ सरमन सौ, बाप को सेवक होता।।

माया

कै दो को ना चाय जरूरी, माया मन सें पूरी।
जनमई सें माया में फसते, कई ना जात कछूरी।।
देव राक्षस मनुष संत सब, विद गये है मजबूरी।
माया सें जो दूर होय सो, मिलवै मजा जरूरी।।
'दयाराम' माया की भूकी, दुनियां पूरी पूरी।।

लक्ष्मी

कोउ ना ईखां पाओ पकड़ के, ईसें को ना छड़के।
कितने करे छोड़ दये कितने, सती बनी है बड़के।।
ईखां कोऊ रखा पाय ना, लै गये कई अड़ अड़ के।
ना विस्वास करौ कोउ ईकौ, बिलकुल गई बिगड़के।।
बैठे रये सबई देखें रये, जे कड़वें वेधड़के।
'दयाराम' कयें कां हो कां खां, लछो फुआ गई कड़के।।

भ्रम

सब कोउ कात आय जौ मोरौ, भजन करत ना तोरौ।
तोरी कृपा होय ना जौलौ, कोउ न नातौ जोरौ।।
माया कुटुम सबई है झूटौ, भरम जार है कोरौ।
स्वारथ की सब दुनियां दारी, बनत काय तें भोरौ।।
'दयाराम' नाहक क्यों फिरवै, जौ मन दोरौ दौरौ।।

बुलौआ

जिदना सम्मन आय करारौ, कोउ न रोकन हारौ।
लैजें पकर सिपाई शाना, रोवेगा घर सारौ।।
रिस पित उतै चलै ना एकऊ, धर दो लाख हजारौ।
'दयाराम' विरथां में कै रओ, जौ जौ आय हमारौ।।

भ्रम

मानुष काय फिरत इठलानों, मद में फिरत भुलानों।
जौ जग तौ बेकार सबई है, दुख कौ भरो खजानों।
पानी कौ फुकना है जीवन, तैं मद में अँदरानों।।
'दयाराम' माया है धोको, मानों चाय न मानों।।

स्वार्थ

ना कोउ संगी तोव जमानें, सब स्वारथ पैचानें।
चिकनी चुपरी बातें कै कें, लै जावें खैमानें।।
दै विस्वास पिला विष देवैं, ऐसे चतुर स्याने।
'दयाराम' विरथां में भूले, कोउ न संगी रानें।।

मनुष जौन

अपनी अपनी तानी तैनें, समजाओ तो मैनें।
कान न दई भौत कई रुच रुच, चलौ उभांड़ी लैनें।।
अब का होत सबई भओ चौपट, कौन जौन फिर लैनें।
'दयाराम' मानुष तन पाकें, करी न साजी कैनें।।

सम्मन

किदना कीकौ सम्मन आनें, जान न कोउ खां पानें।
कब लगनें तारीक उतै की, पेशगार ना जानें।।
हिल मिल चलौ बोल मुसकैकें, का ई में गिर जानें।
'दयाराम' जो जैसौ कर लै, वैसी चरचा रानें।।

करनी

तैनें बेरीं बई बमूरा, रेंवजा और खजूरा।
कांटे लगें रोउत है काये, फल लै लै अब पूरा।।
आमन के फल कांसे मिलवें, बनो रओ तें सूरा।
'दयाराम' अब कछू न होनें, भोग करम फल कूरा।।

अज्ञान

काये करत फिरत नादानी, अपनी अपनी तानी।
काये फिरत गरूरन फूलो, दो दिन की जिंदगानी।।
काये चलत न नेंके भूपर, मिट गये कैउ अजानी।
रावन और कंस से ना रये, भूलो काय कहानी।।
'दयाराम' अत करो मरो सो, फूटो फुकना पानी।।

स्वार्थ

माया की चरखी दुखदायी, पेर रही हरषाई।
गन्ना कैसौ निचो लओ रस, छुकला डरे दिखाई।।
बूड़ौ तन रयै हड़रा केवल, सब कोउ रओ तिलयाई।
'दयाराम' जीतै सोई नर, अमर परम पद पाई।।

माया

कीनी खबर न विरधापन की, चाल चलो कुड़पन की।
बालापन खेलन में बीतो, टोली संग लरकन की।।
ज्वानी आई मस्त मस्ती में, माया गिरी मदन की।
'दयाराम' आखिर की बेरां, घलवै मार जमन की।।

माया

ऐसी माया में जे भूले, भूल गये खुशबू ले।
सेमर फूलन सुवा भुलाने, सुदर डरैयन झूले।।
फलियां फरीं चौंच जब घाली, रुई के उड़े गदूले।
'दयाराम' जां मिलत मधुर फल, ऊ बगिया खां भूले।।

गरूर

जो कोउ जादा करत अखाड़े, ओंदे होत नगाड़े।
चार रोज खां फूलौ फिरलै, मिलें न रीते भांड़े।।
जो गर्रानों अर्रानों सो, कितनऊं पड़े पहाड़े।
'दयाराम' कयें नेंकें रैलै, रावन कंस न छांड़े।

आत्म-शुद्धि

पूजौ मन मंदिर के रामें, दाम लगें ना जामें।
करनी सुदर जाय सब तोरी, क्यों डूबो चिंता में।।
करलै शुद्ध डाट मन अपनों, खुशी आत्मा बामें।
'दयाराम' का पथरन पूजत, समय जात विरथा में।।

नारी

करवै तास नास हत्यारी, चलवें तेग कटारी।
बंगा से फट जांय मूंड़ कई, बैबै रकत पनारी।।
जरा मूंड़ से मिट गये कइ इक, जानत दुनियां दारी।
'दयाराम' ईसें ना तकियो, कभऊँ पराई नारी।।

गरूर

गर्रा गर्रा चाल चलौ ना, जौ जग जानत हौना।
करत तीन की तेरा पल में, चुगली करै बचौना।।
है हुशियार बोउ ई जग में, कोउ के फंद फसौना।
'दयाराम' कयें ना समरे तौ, सांसउ कभऊं सदौना।।

अत

काये मांस चलत सूदौना, तनकउ मन चेतोना।
अनरथ रत दिन रात दिखावै, घलो अबै हूदौना।।
ही कीं खुलीं अबै हैं नैयां, ऊपर की मूंदौना।
'दयाराम' कब डेरा उठजें, कोउ जांदा कूंदौना।।

कर्म

गठरी पापन की बांदौना, अपनी ही धांदौना।
जैसो बोव फरेगो वैसौ, बरन झूंठ आदौना।।
कर जुग है जौ करकैं देखौ, फल मिलनें भर दौना।
देर होत अंदेर होत ना, कूंदो उर फांदौना।।
'दयाराम' कुकरम-कर जग में, पाप बोझ लादौना।।

करनी

जीनें जैसो बीज बओ है, वैसो फल लग गओ है।
बीज बमूरन के बये जीनें, झकरन में विद गओ है।।
गेंदा बये फूल के गजरा, गो गो हार बनओ है।
'दयाराम' कयें जैसी करनी, वैसो हाल भओ है।।

माया

काये कात हमाव हमारौ, इतैनकछू तुमारौ।
दऔ निस्तार करन तोय बंगला, अपनों काय विचारो।।
रौनक देख काय लुभयानों, विरथां टैम गुजारो।
'दयाराम' जा हाट अनोखी, मानुष बनो हटारौ।।

गरूर

जांदा करौ न अत्याचारन, बे हैं गरब उतारन।
रावन कंस हने हिरनाकुश, मारे स्वयं हजारन।।
अतकौ करत अहार अनौखे, हैं जन अधम उधारन।
'दयाराम' चेतौ तौ चेतौ, नातर विकौ बजारन।।

सत्य

सबखां जानें ऊ चौराहे, दोउ फैलायें बाहें।
काये करौ सोस विरथां सब, काय खां भरते आहें।।
दुख सें कड़ौ पोंच जौ सुख में, उतै हैं टंडी छाहें।
'दयाराम' संसार अजब है, अजब रंग की राहें।।

सबेरा

अब तौ खोलौ बजर किवारे, हो आये भुंसारे।
खिल रये कमल बिहंगा बोले, कुकरा बांग पुकारे।।
सूरज कड़े सिरा गये चंदा, तारे छिपे विचारे।
'दयाराम' दरशन के लानें, तरसें नैंन प्यारे।।

अन्त

लैकें कौन मूड़ पै जावै, जिदना राम बुलावै।
मात, पिता, सुत, भाई, त्रिया संग, कोऊ ना पछयावै।।
दौलत सबई अटा उर गड़ियां, इतई धरो रैजावै।
'दयाराम' सोने सी काया, पल में राख दिखावै।।

सासरौ

जबरईं जैव सासरे गोरी, हुयै विदा जब तोरी।
संगी नैयां बाप मताई, बातें हैं सब कोरी।।
आजें छैल लुबौआ जिदना, चलै न फिर वर जोरी।
'दयाराम' ना बृथां विखूंड़ौ, मिलै तुमारी जोरी।।

माया

मानुष काय फिरत इठलानों, माया मोह भुलानों।
जौ संसार असार सबई है, दुख कौ भरो खजानों।।
पानी कौ बलबूला जीवन, तैं मद में अंदरानों।
'दयाराम' जा माया ठगनी, मानों चाय न मानों।।

घमन्ड

मनके करम करे वेखट के, रौब जमाये डट के।
भूलौ उयै बनाओ जीनें, अहंकार गओ सटके।।
नेकें चलो न एक घरी जौ, जल्दी गओ रिपट के।
अहंकार ने धूर मिला दओ, कैउ बेरां भू पटके।।
'दयाराम' कयें सब दुनियां में, भरम जार में भटके।।

जीव

हंसा जब चौरासी भटके, फिरत रओ खा झटके।
बन गई कछू मान्स तन मिल गये, लैन लगो फिर लटके।।
ऊनत नहीं गुमान भरो है, काम करत है घटके।
एक तमाचा घलतन सुदरै, पिंडा बने सिमट के।।
'दयाराम' तुमरी किरपा बिन, जीव जगत में अटके।।

सत्यता

कोउ हंसा हो चाय कौआ, बूड़ौ हो चाय जौआ।
जीनें जनम लओ धरती पै, ऊके आंये लुवौआ।।
एकऊ नईं चलत काऊ की, कितनऊं होवै पौआ।
'दयाराम' कयें जानें परवै, जिदना आय लुबौआ।।

सत्यता

सबकी ऊके हांत चुटैया, धरो न पाप पुटैया।
वो देखत सब सांसी मानों, कै गये कथा कबैया।।
तुमना देखत उयै एक पल, गुनों गुनत लगवैया।
नौ नौ हांत कूंदवै हिन्नी, आय भूम पै भइया।।
जो गर्रें सो अर्रें जल्दी, मिट जै बनी मड़ैया।
'दयाराम' जेइ सोस समज कें, खे लो जीवन नैया।।

रसना

रसना काय भजत ना रामें, आय आखरी कामें।
बन्न बन्न के स्वाद चाय तें, बड़ी हान है जामें।।
काऊ सें ना बुरओ बोल री, करलै अपने नामें।
'दयाराम' बोली ना बोली, अखिर पै हरि नामें।।

सत्य

एक दिन सब खां ऊ घर जानें, खाली कर दालानें।
कोउ कल्ल कोउ आज चले गये, भुंसारें कोउ जानें।।
कोउ कोउ ठन गन करत भौत हैं, करते कैउ बहानें।
कोउ कौ पतौ परत ना जातन, कोउयै दुनियां जानें।।
'दयाराम' सब अपुन हटारे, सौदा लई घर जानें।।

ईश्वर रखवारा

जीके राम चंद रखवारे, को का करत बिगारे।
ध्रुव, प्रहलाद, विभीषन, शबरी, जिनपें करी कृपा रे।।
तीन लोक चौदा भुवनन में, को उनके ब्रत टारे।
'दयाराम' उनकौ संग गयें रऔ, सब हो जाये सुधारे।।

मैंना

भारी मीठे बोलत बैना, जा पिंजरा की मैंना।
जौ लौ जा बोलत पिंजरा में, तौ लौ तुक तुक तैंना।।
मन की खुशी कोउ का करवै, रैना जौ तक रैना।
सपने में अपनी ना जानों, जा कोऊ की हैना।।
'दयाराम' कयें कील खोल कें, कब उड़ जै जा मैंना।।

माया

मिलनें हरी भजन में चैना, सदा चित्त में देना।
जौ संसार लगत है साजौ, तत्त कछू तौ है ना।।
स्वारथ की सब दुनियां दारी, सम्पत बांदी रैना।
'दयाराम' कयें माया झूटी, ईमें मन भरमैना।।

-सभा पती-

फिर रयें सभापती के लाने, दसकत कर ना जानें।
उंगठा छाप बोल ना जानें, जे पद खां बरयानें।।
जो है जोग उनें को पूंछत, फिर रये सब अंदरानें।
'दयाराम' की की किसमत के, झंडा हैं लहरानें।।

कर्म

भारी चलो पाप कौ चालौ, मकरी कैसौ जालौ।
जां देखौ तां दिखा परत है, कछू दार में कालौ।।
कछू न खौफ आज के नर ने, हांत पाप में डालौ।
'दयाराम' जैसौ बओ जीनें, अपने हांतन गालो।।

ईश्वर

हरि ने भरम जार में डालो, तोय पेट में पालो।
स्याने भये बिसर गये ऊखां, बन रऔ भोलौ भालौ।।
फुरसत मिली घरी भर नैयां, तोय जान फिर सालो।
'दयाराम' अबहूं तुम चेतौ, ऊसें नेह लगालो।।

जीव

जौ है पांच तत्त कौ तालौ, कीनें ईखां ढालो।
चाबी एक लगी को अबलौ, खोलै कोउ दिल वालौ।।
तारौ लगौ रओ फिर कैसें, लुटो खजानों हालौ।
'दयाराम' ऐसे ऊ हरि सों, अबहूं नेह लगालो।।

विदा गौनों

इक दिन होनें सबकौ गौनों, रैव मायके कौनों।
प्रीतम के जब आंय लुबौआ, डोला सजै सलौनों।।
सखी सहेली विदा करें सब, रो रो करें पठौनों।
'दयाराम' कयें वे ना मानें, लटौ लगै चाय नोंनों

गौनों

सांसी सांसी सुन लो वाई, कौ लौ रै पौनाई।
कौ लौ रनै मायके तुमखां, चेतो तनक अंगाई।।
घर वर ढूंड़त फिर रये तुमखां, तुमरे बाप मताई।
सबकी विदा होत है इक दिन, सोस करौ ना माई।।
'दयाराम' इक दिन डोली में, बैठा करें बिदाई।।

सत्यता

सबखां सदा रनें है नइयां, सुनों प्यारी गुइयां।
उन आमन पै कागा बोलें, जिनपै बोली टुइयां।।
हांत पसार चले सब जावें, खुल जै नैंन पुतइयां।
'दयाराम' संग कछू न जानें, जानें कछू लकइयां।।

बखरी

बखरी सांसऊ जा देखत की, रंगी कैउ रंगत की।
कटे कटाव चाव सें साजे, पक्की बनी दुपट की।।
लीप पोत कें झारें फूकें, साफ रखें कीमत की।
'दयाराम' अपनी ना जानों, जानों केवल रत की।।

घमन्ड

तोरौ मन काये में भूला, फिर रओ फूला फूला।
काये फिरत अहं में भूलो, पानी कौ बलबूला।।
चार रोज खां आओ इतै तें, अपनों बादा भूला।
'दयाराम' कुछ करनी करलै, का मटकावै कूला।।

सत्य

बातें करत भौत तें ठांटी, पर सम्पत तैं सांटी।
मन मद मोह भुलानों फिरवै, सब मर्यादा काटी।।
कर रओ हजम लूट ई ऊ की, तें आंटी की आंटी।
'दयाराम' मन मूरख भूलो, मिलजै इक दिन माटी।।

माया

जा सब चली आई परपाटी, कोउ सकै ना काटी।
जोर जार धन कोटन धर लओ, माया कितनी सांटी।।
छल कपटन में मस्त रहो नित, जूंठी पातर चाटी।
'दयाराम' अभिमान छोड़ दै, मिलनें इक दिन माटी।।

स्वार्थ

सुनतन सवै लगत है खाटी, लैकें पर रये पाटी।
स्वारथ के सब प्रेम दिखावें, नातर बातें ठांटी।।
अधरम धरम न तकत अधर्मी, दावें कइ इक घांटी।
निर्धन खां लूटें उर मारें, सब मर्यादा काटी।।
'दयाराम' सोने की काया, इक दिन होनें माटी।।

बुलौआ

जिदना हुकम आय सरकारी, खांय डाक्टर हारी।
गोली, सुई, दवा, रस भस्में, कितनेउ कर लो जारी।।
राई घटत न बड़त सुनों तिल, टरत घरी ना टारी।
'दयाराम' कयें पारौ धरती, सजलो नई सवारी।।

घमन्ड

प्रानी काय करत अभिमानी, अपनी अपनी तानी।
पर धन हरत लरत ई ऊ सें, हिंसा तोय पुसानी।।
जपत न हर नित उदर भरत नर, ऐसें उमर विलानी।
मद, माया, ममता में मोहो, व्याव बरातें छानी।।
ना संतोष पुंजी लई तैनें, पाप डगर तें तानी।
'दयाराम' चेतत ना प्रानी, पाप बेल हरयानी।।

गरूर

विरथां काये करै गरूरा, भरो नशा में पूरा।
राजा रंका सबई चले गये, मालिक और मजूरा।।
करनी करकें नाव कमालै, पैर सुजस के चूरा।
'दयाराम' माटी में मिलनें, जौ तन होनें धूरा।।

सत्य

मानुष भरम जार में भूला, चल रओ मटका कूला।
बात बात में शान बगारत, हो रओ आग बबूला।।
झटका लगै कितऊँ कौ ना रै, सेंमर कैसौ फूला ।
दयाराम कड़ गये हैं, बे दिन बनो हतो जब दूला।।

सत्य

सत की डूबत कभऊं न तरनी, सत्य कला दुख हरनी।
सांसे फांके करत दिखावें, विधि की का गत वरनी।।
लबरा लड़ुवा रोज मसक रये, सत्त बात सब बरनी।
पूरव जनम कला का की की, भर रये मन में भरनी।।
'दयाराम' वैसई फल मिलते, जीकी जैसी करनी।।

चेतावनी- मायकौ

मायके कौ लौ कें रानें है, टिया न टर पानें है।
चलनें नहीं बहाने एकउ, राजा खिसयानें हैं।
हिल मिल लेव सखिन सें हंसके, दो दस दिन रानें है।
'दयाराम' जब गौनों होने, सवै घरै जानें है।।

माया

माया नें तोखां है पकड़ा, भौत जोर सें जकड़ा।
तन धन बल में फूलो फिर रओ, भारी अकड़ा अकड़ा।।
लोक संग ना देवै तोरौ, परलोकऊ भी बिगड़ा।
'दयाराम' संगै ना जानें, इक लत्ता कौ टुकड़ा।।

माया

चाये गुरु होय चाय चेला, है दो दिन कौ मेला।
फूलौ फूलौ फिरत काय पै, करें फिरत बाबेला।।
जोरे लाख करोड़न तैनें, संग न जानें धेला।
'दयाराम' आखिर पै जानें, जौ तन सुनौ अकेला।।

माया

माया जियै खटक जा जावै, माया में ना रावै।
जा माया ईसुर की दई है, कोऊ समझ ना पावै।।
माया बिना होत ना काया, माया जाल बनावै।
'दयाराम' लाखन में एकई, माया से बच पावै।।

माया

माया ऐसो जाल पसारो, मकरी कैसो जारौ।
जा जा विदत जात हैं सबरे, कौन करै निनवारौ।।
ज्यों ज्यों भगन चाय चक्कर सें, और विदे नर सारौ।
'दयाराम' माया में रैकें, को दै पाओ किनारौ।।

माया

माया बड़ी है जादूगरनी, मांया है मन हरनी।
बड़े बड़े ऋषि मुन नारद लौ, भर गई जिनखां भरनी।।
बड़े बड़े बलधारी हारे, चली न नेंक कतरनी।
'दयाराम' माया भई की की, को कवि लीला बरनी।।

माया

माया प्रभु ने अजब बनाई, सब चक्कर में भाई।
माया दुक्ख देत है सबखां, सबई रहे चिल्लाई।।
छोड़त तोउ न ई माया खां, वृथां रहे पछयाई।
'दयाराम' कयें ज्ञान भये बिन, माया दुक्ख न जाई।।

विदा

सब कोउ चलो जात कां भइया, कोउ न पतौ बतइया।
एक एक सब धीरें धीरें, जा रये छोड़ मड़इया।।
राजा रंक सबई कोउ जा रये, अपनी बांद गठइया।
'दयाराम' कोउ रोक पाय ना, खुल जै कवै किवइया।।

मन

भर लै दान पुण्य से बरतन, मिलो मसाकें नरतन।
कर स्नान राम गंगा में, साजौ लगै सपरतन।।
कन कन में बौ राम रमो है, जनम पशू गओ चरतन।
कूरा काम मोह कौ फेंकौ, साफ बना रयै तन तन।।
'दयाराम' निरमल मन होजै, लोभ दम्भ के जरतन।।

नरतन

सोचत नहीं पाप के करतन, पग कुपंथ पै धरतन।
चोरी ठगी करी दम सें तें, जनम काढ़ दओ लरतन।।
पाप घड़ा जब छलकन लागो, कैसो लगो सपरतन।
अब का होत फसो फंदा में, गैल मिली ना भगतन।।
'दयाराम' मद में भूलो रओ, पा सोने सौ नरतन।।

पाप

कैसौ जौ कलजुग बरयानों, अब लौ नहीं सुनानों।
बैन भनेजन गिनत न कूकर, अधम फिरत अंदरानों।।
बउयें बिटियां कितनी मर गईं, नर पशु बनो दिखानों।
'दयाराम' कामी नर नें कऊं, नातौ कोउ न मानों।।

करनी

आंखों चड़ीं चेंथरी भाई,भारी रये गर्राई।
आगी खाय अंगारे हगवै, को का करै सहाई।।
चूले हगै शनीचर कोसै, सारी मती नशाई।
'दयाराम' जैसी हो करनी, वैसी देत दिखाई।।

ईश्वर प्रेम

जौ मन परख पाय ना हीरा, होत न प्रेम अधीरा।
उनके प्रेम पगत ना ऐसें, बुंदी संग ज्यों सीरा।।
माया जार कठिन है भारी, राई आय ना जीरा।
'दयाराम' चंचल मन ऐसें, जैसें फिरत भमीरा।।

गाड़ी

गाड़ी कब पंचर हो जावै, कहौ जान को पावै।
साजी भली चाल सें जा रई, कब कांटौ गड़ जावै।।
कितै गड़ै गट्टी को जानें, कबै बस्ट हो जावै।
कितै हवा गाड़ी की निकरै, को कऔ गुनत लगावै।।
'दयाराम' जौ लौ है गाड़ी, सुख सें राम चलावै।।

शरणागत

उनकी सरन मनई सें जानें, तौ तोखां मिल जानें।
शरनागत हो जा तन मन सें, उनें सोंप सब स्यानें।।
जो वे करें होय राजी तें, हां में हां तो कानें।
ना कोई दुक्ख सुक्ख तोय व्यापै, चमकत किरन दिखानें।।
'दयाराम' है स्वर्ग एइ में, जितै तोय है जानें।।

पुतरा

काये छुक छुक कर रओ छुकरा, बनो फिरत तें जुखरा।
कामी बनो फिरत ऐसें ज्यों, कूकर सूकर बुकरा।।
अहंकार उर रंगो मोह में, भओ ज्वान सें डुकरा।
अबै उनें ना चीनों तैनें, रओ कंडी सौ उतरा।।
'दयाराम' मांटी में मिलजै, ओ माटी के पुतरा।।

संगी

ना कोउ संगी कोउ कौ भइया, बाप होय चाय मैया।
नातेदार मित्र उर लरका, भाइ न बात पुछइया।।
बैन बड़ी ना भइया बड्डौ, सबसें बड़ौ रुपैया।
कभउं कोउ के संग न जाती, कानी कौड़ी भइया।।
'दयाराम' लै जात लाद कें, आखिर चार लदइया।।

सत्यता

कितनऊं कोउ सिकावै भइया, सांसौ कात समैया।
कोऊ देत संग फिर नैयां, फंसत भंवर जब नइया।।
सेंटा संगी एक दिखैना, मरवै कुआ तलैया।
'दयाराम' भंवरें संग परतीं, दूला संग दुलैया।।

रामरस

रसना राम नाम तें कौरी, बोल न कोउ सें खौरी।
ई रस सें मीठो कुछ नैयां, तोखां लगत निबौरी।।
जीनें पियो राम रस देखौ, सब दुख दूर भगोरी।
'दयाराम' पाछें पछतावै, बात मान लै मोरी।।

रामरस

रसना राम रसायन पीलै, जीवन सुख में जीलै।
कन कन में रस पगी रसायन, भौत मिलत सस्ती लै।।
तीन लोक चौदा भुवनन में, जा संजीवन जीलै।
'दयाराम' दुख दंद छूट जै, जो कोउ ई खां पीलै।।

रसखान खंड- प्रेम

भँवरी मिलन आई भंवरे सें, बोली दिल भोरे सें।
झुला देव बंइयन के झूला, झुक झुक झकझोरे सें।।
तुम पै जा बलहार जिंदगी, बंदे प्रेम डोरे सें।
'दयाराम' पै जादू कर दये, कड़-कड़ हो दोरे सें।।

नेत्र

अखियां कजरा से हैं काली, बड़ी कटीली आली।
तक उजयाव चंद मुख वारौ, परै जुंदैया काली।।
ऊकी को उनहार बतादो, कौन घरी विध ढाली।
जो देखौ सो होय दिवानों, सुर मुनि खोली ताली।।
'दयाराम' लाली शरमा गई, लख औंठन की लाली।।

रूप शोभा

मुइयां इनकी है मन हरनी, किनकी हैं जे धरनी।
इनके नैंन देख कें दुक गई, बीच डांग में हरनी।।
औंठन देख कमल शरमा गये, भई जिया में जरनी।
चुटियां तक नागनना निकरी,को कवि जो छवि वरनी।
मोती दुके समुद्र तरी में, दांत जोत दुख दरनी।।
'दयाराम' इनकी चालन से शरम छिपी जा करिनी।।

मुग्धा

बेला देखन गई ती मेला, भीर में ठेलम ठेला।
छैलन पैल पतौ दैगई ती, भग गई घाल कंदेला।।
लैला बनी कितै जा बिलमी, तुली जलेबी पैलां।
रबड़ी और मलाई मसकी, भारी भओ झमेला।।
'दयाराम' खा गई दम सें बा, दस भुसावली केला।।

जुवना

जुबना जमतन बने निबौरी, हो गये बेर बहोरी।
निबुअन से मदराने भारी, जोड़ी रात तने री।।
नरियल केंथन सें करें भये, बड़ गयेदोउ वरजोरी।
'दयाराम' अब मदन मचल रये, जुबना झंडा जोरी।।

--

जुबना लगत भौत ललकीले, गोल गोल मस्तीले।
जे अनार सें करें हुइयें, नोंकें पैनी कीले।।
फेरत हांत लगत है कोंरे, मसकत लगत गठीले।
'दयाराम' कीकी छाती खां, काम बान दो ढीले।।

रूप

तुमरी जा सूरत मन हरनी, चाल लजावै करिनी।
दिन उर रैन रऔ तुम सामें, नैन न पावें हरनी।।
रै लो संग दिना दो दस लौ, बन जाओ चाय घरनी।
'दयाराम' मन की कै डारौ, भरै रऔ ना भरनी।।

यारी

काये मुसकातीं कऔ जीकी, हेरन तुमरी नीकी।
नीकी लगत सैंन नैनन की, कहौ बात सब हीकी।।
हीकी लगी बुजालो करकें, बात न होवै फीकी।
फीकी 'दयाराम' ना करियो, यारी मूर अमीकी।।

जुबना

जुबना काय कसें चोली सें, दोऊ हमजोली सें।
छाती पै बांदें दो लुड़ियां, चोली अनमोली सें।।
करें लगत उठी दो नोंकें, गोल गोल गोली सें।
'दयाराम' किन हांतन दबनें, एक एक टोली सें।।

रूप

धनियां पंछीली लाशानी, गोरी गोरी स्यानी।
चली गई हिन्नी सी हुमसत, लरकें भगी नजानी।।
धुतियां कखियायें डगयारई, नई बाला रिसयानी।
'दयाराम' पूंछत पति फिर रओ, कोउयै कितऊं दिखानी।।

घूंघट

घूंघट बिरथां बड्डौ डारौ, जा दिल कात हमारौ।
मिला लेव नैनन सें नैना, जौ दिल उनपै हारौ।।
लै दै लेव प्रेम की सौदा, का है हर्ज तुमारौ।
'दयाराम' ई मुख चंदा कौ, फैलन देव पसारौ।।

जुवना

कैसें छैल लगावें छाती, सोच सोच रै जातीं।
जुबन अनी सूजन सें पैनी, प्रिय खां छिद छिद जातीं।।
चाउत दोउ डार गल बैयां, अनी बीच अड़ जातीं।
'दयाराम' छैला की छतियां, दूर दूर सोउ रातीं।।

इच्छा

छैला के दोरे में दोरौ, होत रतो मों जोरौ।
का दिन उर का रातें कइये, मन कौ सपरौ खोरौ।।
नाव करम खां मुंस बनो है, मूरख भारी भोरौ।
'दयाराम' कयें गांव है मोरौ, असल नाव है तोरौ।।

इच्छा

तकतीं घुंगटा में मुसकाकें, घूंघट तनक उठाकें।
हेरत हंसत सबई कै लेतीं, नजर सें नजर मिलाकें।।
को का करत कहौ जो जी में, लौंका चौंका पाकें।
'दयाराम' बरसन सें तरसें, हरषें हिया लगाकें।।

नैंना

कजरा इन नैनन ना आँजौ, पैनी धार न माजौ।
बिन काजर जे बने दुधारी, काटत जियरा साजौ।।
चीरत जात पीर ना इनखां, दिल छैलन कौ ताजौ।
'दयाराम' को इनखां रोकत, इनकौ डंका बाजौ।।

सिंगार

फूलन के पैरें हैं गानें, बेला बने तिदाने।
चंपा हार हिये पै सोहे, जूड़ा जुही जुड़ाने।।
जे गुलाब गालन पै लटकत, कमल करधनी तानें।
'दयाराम' जाबनी पुंगरिया, हर सिंगार हरषानें।।

चाल

तुमरी चाल अजब चटकीली, हिन्नी सी चमकीली।
ठुमका चाल चलन मन मोहै, हेरन हँसन रसीली।।
ना कऊं ऐसी और दिखानी, विधि की कला छवीली।
'दयाराम' खां कबै मिलौ कऔ, मन भावन पंछीली।।

रूप

धनियां खेप धरें भर पनियां, कमर कसें करधनियां।
तनत ताँत सी नें नें जावै, हो गई कमर कमनियां।।
तीरई सी बा झिकत जात है, मन में मथत मथनियां।
'दयाराम' डस लये कई एकन, गोरी बनी नगनियां।।

मुख

ऐसी दिपत तुमारी मुइयां, जैसी कंऊ है नइयां।
जो देखै सौ देखत रातई, झिरें नैंन रस रइयां।।
मुसकाकें को इनखां देखै, कोऊ दिखानो नइयां।।
हेरन दूरई सें कर देती, दिल खां कइयां बइयां।
'दयाराम' हेरौ ना हम पै, का हौ रजउ करइयां।।

तिल

जौ तिल दिपत गाल पै कारौ, गोरी कौ अनियारौ।
मानो मिटा भौंर मर्यादा, चुम्बन डेरा डारौ।।
कै विधि दओ डिठूला मानो, टोंना लगै न सारौ।
'दयाराम' सिंगार कुदरती, शोभा खां विध ढारौ।।

रूप

गोरी बनी वीर अनहोनी, सौ नोंने से नोंनी।
भोंय कमान नैंन की तरकस, पैने वीर विरौनी।।
सेंन कटार हंसन की बरछी, भाला बनी चितौनी।
'दयाराम' अंखियन की गोली, दाग देत अनहोनी।।

नैंना

नैंना सीके मन की पीवौ, फिर मस्ती सें जीवौ।
दूरई सें पी लेत न मानत, सीके जाम न छीवौ।।
रूप वरंडी को ना पीवै, कितनऊं हो ज्ञानी वौ।
'दयाराम' वेचैन नैंन सें, घायल भओ ध्यानी वौ।।

--

कइ इक डरे कलारत कूलें, इन नैंनन की भूलें।
गोली घली नैंन की छाती, कर रये दवा फिजूलें।।
एकउ घाव कितउं ना दीखै, ठटीं करेजें शूलें।
'दयाराम' बेचैन नैन सें ही में भाला हूलें।।

--

नैंना कैउ कतल कड्डारे, तोउ न जे हत्यारे।
कई एकन खां एसौ मारो, डरे कलारत द्वारे।।
तऊ पै लगत सबई खां नोंने, अधिक प्रान से प्यारे।
'दयाराम' जे नैंना विधि ने, कौन घरी में ढारे।।

--

तोरे नैंन दोउ अनियारे, चीरे हिये हमारे।
बेदरदी का करन बिचारें, तलफें प्रान विचारे।।
का अरिया की ताब चलै जो, ऐसी धारन वारे।
'दयाराम' जेई नैंना हरदम, करते जुलम करारे।।

नैंना

बोलें विना जीभ के बैना, जे नैंना कम हैना।
सब कै लेत होत जो मन में, कमी काउ की रैना।।
बिना लिखे मों के सब अक्षर, बांच लेत चित दैना।
'दयाराम' नैना भये घुरवा, एक लगाम खठैना।।

- सिं० वि०-

नैना बिन तरवारन मारें, पैनी इनकी धारें।
धारें काजर कोर जोर की, जीपै वार उवारें।।
वारें ना कड़पांय कोउ जब, नैना भये उतारें।
तारें 'दयाराम' कई एकन, डरे हरी के द्वारे।।

--

नैना रूप कसौटी कारे, सुबरन परखन वारे।
सुवरन कमल दूर से चिपके, नैन भंवर मतवारे।।
उड़ उड़ जात नजर संग रंगी, सब रस पियत न हारे।
'दयाराम' नैनन नें काका, तकौ जुलम कर डारे।।

--

नैंना विरथां सुरमा सारे, करम करें अनियारे।
पैलऊं हते कटीले भारी, मानो टिमी कटारें।।
पैनी बाड़ काड़ कें कीके, इनने कतल बिचारे।
'दयाराम' जे नैना पाकें, करौ न जुलम करारे।।

--

अखियां लर लर कें पछतातीं, मन मसोस रै जातीं।
अपनी करी कयें कऔ की सें, जेइ सोस में रातीं।।
लरतन तौ लर गई सहज में, लरकें प्रेम बनातीं।
'दयाराम' सब करम सबई के, जेइ अखियां करवातीं।।

--

नैना हैं जग जीतन हारे, तिरछी नजरन वारे।
बड़े बड़े भट मारे इनने, त्राहि त्राहि उच्चारे।।
दिल लै लेत देत फिर भाला, नजर बान सें मारे।
'दयाराम' कयें इन नैंनन सें, रिष मुन जन सब हारे।।

--

जो कोउ इन नैनन से उरजै, जनम जनम ना सुरजै।
जनम जनम खां नातौ पक्कौ, नेह डोर सें जुरजै।।
सोनो चांदी कुटम कबीला, सबई छोड़वे ढुरजै।
'दयाराम' उनसें उरजालो, तो सब काम निनुरजै।।

रूप

बूंदा दमक दयें प्यारौ है, माथे उजियारो है।
करिया तिल जा वसो गाल पै, सोहै अनियारो है।।
नैन कटीले जनमई सें हैं, पैने ज्यों आरो है।
देखत ज्वान खिंचत आवैं जौ, तन चुम्बक सारौ है।।
'दयाराम' वा चुटिया जैसें, असल नाग कारौ है।।

नैंना

अखियां सवरे काम करावें, जियै भौत ललचावें।
पैलां लड़ें मिलत आपस में, पीछें बिरह करावें।।
कबहूं गम्म खांय ना देखौ, गोली सी बरसावें।
'दयाराम' कयें इन नैंनन सें, तरवारें खिच जावें।।

--

देखे ना ऐसे कंऊ नैंना, कातन हाल बनेंना।
पैने तीर लयें ढांड़ी ज्यों, समर समर की सेंना।।
जां लग जांय करेजौ फारें, इनसें कोउ बचैना।
'दयाराम' बेचैन डरे हैं, घायल घाव दिखैना।।

नैंन

नैंना घुंघटा तरे दुकायें, खुलकें हेर न पायें।
मन मसोस मईं के मईं रावें, कछुअई ना कै पावें।।
तनहाई सी सजा बोल दई, कब सुतंत हो जावें।
'दयाराम' कयें इन नैंनन की, उपमा कौन ल्यावें।।

--

कीनें मिरगा से उनहारे, खंजन कौन पुकारे।
ना जे भरत चौकड़ी कबहूं, जे निस दिन दरसाये।।
जे ना भंवर भन्न भन्नावें, दीन मीन ना प्यारे।
'दयाराम' जे भये मोहनी, मोहें मंत विनारे।।

घूंघट

घुंघटा चलन चलाये कीने, हमें बतादो ज़ीनें।
मुख चंदा खां राहु भओजौ, जग अंदियारे कीनें।।
आदौ कड़े ढकै जब आदौ, मन ना होय मलीनें।
'दयाराम' देखो देखन दो, डारौ घूंघट झीनें।।

नैंन

नैंना झीनें पट में फरकें, चंचल मृग से घरकें।
जल बिच मीन चिलक दयें जैसें, ऐसई चमक समरकें।।
देखत कात हिये की बातें, सैन नजर सर धरकें।
'दयाराम' मुख चंद मजो तो, नैन तरैयां करकें।।

।। कली ।। यारी

वारी कली भली दीवानी, तोरी अमर कहानी।
केवला से करिया हैं भौंरा, हिये नहीं सकुचानी।।
छाती लगा झुला दये झूला, रंग रस दये लाशानी।
'दयाराम' जा नेह नतैती, ना कऊं और दिखानी।।

रूप

तोरी चाल वतकिया वारी, चलतन लगत प्यारी।
घूंघट से गोली गज भरकें, हिये मिलाकें मारी।।
बा मुसकान सहज है तुमखां, हमखां भई दुधारी।
'दयाराम' का करन विचारें, कड़कें गैल हमारी।।

इच्छा

तुमनें कभऊ दई ना मांगें, मांगी अटकें खांगें।
का नुकसान तुमारौ होतो, तनक हिये सें लागें।।
दिल लैकें नई दैन बिचारें, परे रात दिन जागें।
'दयाराम' गोरी की लिख दई, जे रस वारी फागें।।

रूप

तुमरौ सै ना पांय चितैवौ, मरवौ होय मुसकैवौ।
तुमरी चाल प्रान खैंचत है, अजब इशारे दैबौ।।
मिलकैं कबै एक है होनें, कौ लौ जौ दुख सैवौ।
'दयाराम' जग में रै जावै, कोरौ कोरौ कैबौ।।

--

जिदना हमें न इतै दिखातीं, दोउ अखियां पछतातीं।
गैल घाट इत उत जे तुमखां, निस दिन ढूंड़त रातीं।।
कड़ कड़ गोरी करै इशारे, मन ही मन मुसकातीं।
'दयाराम' तुम अपने मन की, खुलकें काय न कातीं ?

नैंन

गोरी तोरे नैन कटारी, कैं हैं पैंनी आरी।
जीखां लगत सोउ जानत है, कैसी नैन दुधारी।।
पैने तीर छोड़ छेदत है, हियप्रेमी कौ प्यारी।
'दयाराम' की कोद न हेरौ, दिल में दया विचारी।।

नायिका मोहित

किदना मिलौ खोल दिल प्यारे, काय रहे तरसारे।
अंग अनंग सताय रात दिन, कौ लौ रये मन मारे।।
लैदे लेब मजा नर तन कौ, मन के अभर निकारे।
'दयाराम' ना डर कोउ मानों, जो हम बने तुमारे।।

रूप

जा मत नये जुवनन पै भूली, नजर उनई पै झूली।
नैचे ऊपर देखी नैयां, कानी होय चाय लूली।।
पैनी वाड़ चड़े जे ऐसें, जैसे काम त्रिशूली।
'दयाराम' बेचैन बना गई, मदन की बगिया फूली।।

चित की चोरी

लै गई मोरौ चित्त चुराकें, तिरछी नजर चलाकें।
पक्की चोर किते सें आई, हम तौ गये गम खाकें।।
आगे घायल करन चली मन, समरे यार मसाकें।
'दयाराम' अब कहा चुरैहो, हम सब दओ लुटाकें।।

कामना

लगलो आन गरे सें गोरी, जा मनसा है मोरी।
तुमरे मन की हमनें जानी, मोरी मति ना भोरी।।
जो हम तुम राजी तौ दुनियां, का करवै वरजोरी।
'दयाराम' कै डारौ खुलकें, बांद प्रेम की डोरी।।

पतरी नायिका

पतरी कमर गौर रंग नीकी, चाल चलत हिरनी की।
सुटौ शरीर फकत पंछीली, रौनक मदन जनी की।।
जा रई तनत तांत सी लफलफ, धरें खेप पानी की।
'दयाराम' को शोभा बरनें, ऐसी बनी ठनी की।।

मुख

अपनी जा मुइयां ना ढांकों, मुख चंदा सौ झांकौ।
धीर धरत ना जिया हमारौ, कात कै दै दो डांकौ।।
रूप रंग की असल बरंडी, नशा देखतन बांको।
'दयाराम' के नैंन शराबी, पियत पियत को छाकौ।।

हँसन

हंसकें मो ताई ना हेरौ, नैनूं सौ दिल मेरौ।
तुम तौ हंसौ फसौ दिल मोरौ, देव कनाओ डेरौ।।
मन बेचैन रैन दिन प्यारी, गिने ना शाम सवेरौं।
'दयाराम' ई सें रओ गुस्सा, मुख नायें ना फेरौ।।

घुंघटा

घुंघटा इतनों ना तुम डारौ, जा दिल कात हमारौ।
गालन की गड़कुइयां देखें, मुइयां तनक उगारौ।।
बांकी बनक देंय का उंजस, चिबुक लसै तिल कारौ।
मुसकातीं आफत हो जावै, को है सैवे वारौ।।
तिरछी नजर हेरियो ना तुम, कोमल हियो हमारौ।
'दयाराम' सादा दो दर्शन, रोजई तकें द्वारौ।।

कामना

हम ना धरी देह बालन की, घुंगरारे बालन की।
झूम झूम दिन रैन चूमते, लाली इन गालन की।।
स्नो और पाउडर होते, कैलाली लालन की।
'दयाराम' कै तिल हो जाते, छवि बड़ती गालन की।।

यारी

यारी यार जान खां जावै, कोउ निभा ना पावै।
बाली बान लगो छाती में, अंत लोक तज जावै।।
दुस्सासन की भुजा उखर गई, रावन नास करावै।
'दयाराम' जे चना लोय के, कोउ चबा ना पावै।।

नायिका

पानी भरवे भोर निकर गई, मन ही मन में हंस गई।
दागत गई फैर घूंघट सें, सूदी गोली धस गई।।
छैला बिदी लगावन लागे, प्रेम वेल बा गस गई।
'दयाराम' रजुवा गुंडन में, धीरें धीरें फस गई।।

कामी

जैसें लपकत वाज चिरैया, डाट लगांय लगैया।
गुर ढीलौ कुछ बनियां ढीलौ, छानन लगे छनैया।।
हार खेत घर का खरयाना, होवे ता था थैया।
अपुन होत को मुल्ला काजी, राजी गाक लिवैया।।
'दयाराम' दुनियां दारी की, कछू कहौ ना भइया।।

नायिका

पतरी सोट धना पंछीली, पैरें सारी नीली।
गोरो आंग चिलक दयें नीकौ, झिकत जात गर्वीली।।
छरकत सी पग धरत चलत में, रूप की बड़ी नशीली।
'दयाराम' पै हेर न दिइयो, आंखें बड़ी कटीली।।

जवानी

विन्नू खुदईं फिरें इठलानी, दिखा दिखा मिजमानी।
छैला खैला से पछयाने, जे ऐसी सर्रानी।।
कुआ आय प्यासे के ऐंगर, को ना पीवें पानी।
'दयाराम' का करै कोउ जब, जीखां चड़ी ज्वानी।।

नायिका

मोरे दोरे हो कड़ जावें, देखत मुसका जावें।
बिना कयें जे सब कै लेतीं, नैना बात बतावें।।
हम जानी कै जानी ऊनें, कोउ भेद का पावें।
'दयाराम' की खुलीं किवरियां, जब चाये आ जावें।।

चाल नायिका की

कैसे धरती हौ पग ठुमका, हमें न जानों तुमका ?
काय छरकतीं सी चलती हौ, हला हला के झुमका ?
लैलो दैलो कैलो दिल की, मजा लेव मौसम का।
'दयाराम' जेदिन कड़जें जब,फिर करवें कऔ हमका?

रूप

जुवना हल हल लेत छलांगें, जैसें उड़कें भागें।
हिन्नी सी हुमसें जे जानों, फिरतीं आंगें ओंगें।।
अंगिया में मुसकिल से डटवें, देंय न मांगें मांगें।
'दयाराम' कौ लो गोरी कौ, कब लौ रैव तुम टांगें।।

जुवना

जुवना बन्न बन्न के जानें, रचे काय विधनानें।
कइइक करें नरियल से हैं, गदियां हा हा खानें।।
भये जाम फल कै अनार कई, देखत कई ललचाने।
'दयाराम' दोउ होड़ा होड़ी, बड़वे की जे ठानें।।

नायिका

धनियां जा पंछीली साजी, चलवै चाल मिजाजी।
लचकत लफत जात करयाई, ना करवै ना हांजी।।
घूंघट में हो नैनन सैनन, सब कै लेंय धनाजी।
'दयाराम' ईखां फुरसत में, रची हुये विधना जी।।

--

गोरी प्रान खान जा की की, चाल चलत हिरनी की।
दिखा देत मुंइया फिर ढांकत, सूरत लयें रती की।।
नैनन सें कै लेत कनें जो, समज लेत सब जी की।
'दयाराम' जस करनें किदना, दैकें मूर अमी की।।

नायिका

धनियां पनियां खां आई है, देखत मुसकाई है।
ठुमका चाल चलै हिन्नी सी, लफवे करयाई है।।
हुमसत जात हंसत है धरती, चंद छटा छाई है।
'दयाराम' कौ दिल जा लै गई, फिर फिर पछयाई है।।

इच्छा

रोजई दिखा दियो जा मुइयां, बन्नी वैस लरकैयां।
लियो दियो तुम कछू न कवहूं, ईसें मतलब नैयां।।
तुमें तकें हम हमें तकौ तुम, कभऊं गिरें गल बैयां।
'दयाराम' तौ तुमरे लानें, टोरें सरग तरइयां।।

रूप

आई सज बनकें मतवारी, चंद चांदनी प्यारी।
समर समर के जुद्ध करन हित, नैंन बनाये कटारी।।
लाली औठ भाल पै बूंदा, मांग भरी रुच प्यारी।
'दयाराम' भँवरी सी फिरवै, काम कामनी वारी।।

इशारे

धनियां खुलकें काय न कातीं, कौ लौ रौ शरमातीं।
मुसकातीं हंसती हौ टेंकें, तक तक तीर चलातीं।।
टोरौ लगी शरम की टटिया, हमसें बृथां डरातीं।
'दयाराम' नाहक में अपनों, मोरौ जीव जरातीं।।

इच्छा

होवै जो मन में कै डारौ, मन में रिस ना मारौ।
साजी बुरई कछू तौ कै कें, बातन डोरौ डारौ।।
बिना कयें कछु होनें नइयां, ऐंगर हिरकौ यारौ।
'दयाराम' मन की सब बांची, लगा लओ गुंतारौ।।

नायिका

चौकस वेथी भर कम्मर की, है नई धना उमर की।
पतरी सोट कनैर डार सी, लफ लफ जात ससुर की।।
अरिया का काटै जो नैना, काटें धार हुनर की।
'दयाराम' तुम फिरौ उजागर, कला बनी ईसुर की।।

नेत्र

तोरे नैन भौत हत्यारे, बिन हतयारन मारे।
गोली, बान घाव का करवें, जो इन्नें कड्डारे।।
का तरवार दुधारौ चीरे, जैसें जे फाड़ारे।
'दयाराम' बेचैन विचारे, घायल डरे द्वारे।।

सौन्दर्य नायिका

हमनें कई ना हमें दिखइयो, आंखन ओटें रइयो।
हमें हुस्न बौ तकनें नइयां, जा कऊं और निरइयो।।
अपनी बसत न कोउ के लानें, जा मन तौलें रइयो।
'दयाराम' बेचैन बिगरजै, ईसें पास न अइयो।।

जुवना

कीनें बाड़ धरी जा पैनी, कऔ कओ तुम मृगनैनी।
जीके हांत परें जे छतियां, घाव करें दुख दैनी।।
देखत जुवना जचत रसीले, उतै लौट जै छैनी।
'दयाराम' को झेल सकत है, इनकी नौकें पैनी।।

नायिका

गोरी फरफरात पंछीली, नोंनी नार नवेली।
फरक जात मछरी सी आगें, दैकें घाव कटीली।।
हुस्न हाट जा दिखा-दिखा कें, मन मुस्काय छवीली।
'दयाराम' का करन विचारें, काम कामिनी ढीली।।

रूप

जुवना जे चलतन में हलनें, हमें देखतन खलनें।
जो बूंदा झक्काटौ पारें, देखत कैउ मचलनें।।
पैनी वाड़ चड़े जे नैना, सैकरयांव कतरनें।
'दयाराम' सज बन ना चलियो, छैला कैउ निकरनै।।

रूप

देखौ जा पतरी करयाई, लफ रई बिना लफाई।
गोरे गाल लाल ओंठन पै, लाली लली लगाई।।
करिया तिल मनु भौरा चिपटो, जियरा रहो जराई।
'दयाराम' कयें प्रान खान है, सांसउ बनक तुमाई।।

वीर नारी

गोला कसें बड़े लाशानी, कौन जरूरत जानी।
लयें काय खां बरछी भाला, हमें बताव स्यानी।।
तानें बान काय के लानें, नागिन संग दिखानी।
'दयाराम' कऔ की सें हुइयै, विकट जुद्ध घमसानी।।

सौन्दर्य

सिर पै नागिन सी लहरानी, जा चुटिया लाशानी।
बान विरोनिन के जा तानें, भोंय कमिनयां मानी।।
नैन दुधारी धार दार है, हँसी की बरछी जानी।
'दयाराम' जोधा भई कामिन, लग रई भौत सुहानी।।

नायिका

हमनें तुमनें सबनें जानी, धना भरन गईं पानी।
प्लेंन विलाउस वैंयन कसगओ, धोती पैरें धानी।।
सैकरयांव कतरकैं धर दये, भारी दुष्ट दिखानी।
'दयाराम' चल रई उर चलनें, जग में तोइ कहानी।।

नायिका की नजर

तोरी नजर बान सी चलनें, छाती बीचें घलनें।
देखत चाल हंसनी तोरी, जानें मुलक मचलनें।।
को बच पाओ कहौ धरती पै, हँस हँस कें है छलनें।
'दयाराम' तें जग जीतन है, कोउ की चाल न चलनें।।

नायिका

काये जा बैठी तुम ओंटा, विखरायें हो झोंटा।
तेल डार पटियां तुम पारौ, विछुवा पैरौ मोटा।।
लाली लगा-लगा लो सुरमा, सज लो नये अनौटा।
'दयाराम' कयें भर-भर मारों, इन नैंनन के टोंटा।।

चाल

झुमका करदौनी कौ हलनें, गोरी खां जब चलनें।
देख देख कैउ तने जुबनवा, कइक मनें मचलनें।।
इतै गैल में तुम चल ठांड़ी, उत बतकाओ चलनें।
'दयाराम' जा सही है धोखा हो गया है।।

रूप

सजके काम कामनी आई, कैउ हतयार ल्याई।
चुटिया नाग फांस ल्याई है, नजर बान दुखदाई।।
छाती पै दो गोला बांदें, चौला खां तलफाई।
'दयाराम' दोउ नैना कतली, पैनी बाड़ धराई।।

नायिका

अपनी दिखा गई जे मुइयां, की की आंय मुनइयां।
ऐसौ लगै लेइलेय चूमा, उठा लै भगै कइयां।।
लगा लेय छाती सें प्यारी, बुजा लेयं हिलकैयां।
'दयाराम' छैला पछया गये, परन लगीं लौलइयां।।

विचार

मोंसें दिल की सब कै डारो, शरम किवारे फारौ।
हमरौ तुमरौ एकम एका, कब होनें निनवारौ।।
तन मन धन सब तुमखां अरपन, परखै परखन हारौ।
'दयाराम' तन दूर पास मन, ऐसौ प्रेम हमारौ।।

शुद्ध नायक

कोउ कौ माल होय अनहोंनों, माटी होय चाय सोनों।
लालच लोभ अपुन खां नइयां, हमें लुभाओ कौनों।।
कड़ कड़ जाव दुआरे हो तुम अपनों, दिखा निरोनों।
'दयाराम' जौ बौ गुर नइयां, चिटियां खांय चटौनों।।

प्रेम

खोवै कौन लिड़इयन गोली, पर परकें हमजोली।
डिगे न कभऊं डिगांय कोउ के, भारी करी ठठोली।।
भोंरी सी मड़रानी गैरऊं, कोहल सी बड़ बोली।
'दयाराम' कयें जतन करे कई, हम ना खेली होली।।

चाल

ठुमका चाल चलौ बन ठनकें, खून हमाये छनकें।
झुमका हलत जात करया पै, पांवन पायल झनकें।।
घूंगट में हो तकौ गौर सें, नजर लगे छन छनकें।
'दयाराम' बेचैन हते तोउ, नजर बान दये हनकें।।

जुबन

जुबना नौकदार अनियारे, गुल मेखन से ढारे।
अंगिया और पोलका इन्नें, कैउ दुपट्टा फारे।।
फोर पसुरियां जे दोइ हुमसे, बाड़ चड़े हत्यारे।
'दयाराम' बज्जुर की छाती, जे दोउ लगन विचारे।।

सौंन्दर्य

विधनै कौन घरी में ढारौ, गोरौ रूप तुमारौ।
हज्जारन घायल कड्डारे, सैकरयांवन मारौ।।
नैना, कमर, रूप रंग हेरन, हुस्न सबई अनियारौ।
'दयाराम' जो भलौ चाव तौ, कड़ौ न वार विचारौ।।

रूप कामना

हंसकें एकई बेरां हेरौ, जी भर जावै मेरौ।
नजर वान नैनन की गोली, बनें निशानों मेरौ।।
डारौ चीर हेर कें सांसऊ, हरां हरां तुम फेरौ।
'दयाराम' जो हुयै सो भुगतें, कबै तिली सी पेरौ।।

चाल

रजुवा ठुमका चाल चलौना, नातर हुयै भलौना।
जीखों चाल अखर जै तुमरी, ऊकौ मन समरौ ना।।
लैजै उठा तुरत वौ कइयां, बइंयन सें बरकौना।
'दयाराम' कयें चलो समर कें, समजौ चाय समजौना।।

दीवाने

कोउ कोउ मरवौ लौ अखत्यारें, छोड़न नहीं विचारें।
चल जावे गोली चाये बा, चाय तेज तलवारें।।
शम्मा के प्रवाने कई भये, भसम डरी ती द्वारें।
'दयाराम' प्रेमी नई सोचत, जो कन्नें कड्डारें।।

कामी प्रेमी

फिरवें रोज इश्क के मूड़ें, भुंसारे दिनबूड़ें।
तन तन से जौआ चक्कर दें, अपने छैलन ढूड़ें।।
गर्रानी गुड़ियां कैउ एकें, छैला बिना बिखूड़ें।
'दयाराम' ऐसी देखीं कईं, कलजुग भररओ गूड़ें।।

वातावरन

तक तक हमै न आई राई, लादें वेशरमाई।
गैल घाट में चूमा लै रये, लोक लाज विसराई।।
जो चायें वे गेंदन खेलें, खावें माल मलाई।
'दयाराम' कलजुग की मैंमा, कौन कवी कै पाई।।

धृष्ट नायक

गोरी एक वेर हंस बोलौ, शरम किवइयां खोलौ।
हम भौंरा मड़रात फिरत हैं, रस कलियन सौ घोलौ।।
कै दो किते कबै की बेरां, बौ रस दैव अमोलौ ?
'दयाराम' नैयां है साजी, भरमाऔ ना कोरौ।।

नायिका

गोरी नइयां जादां पतरी, ना चौरी ना चकरी।
मोटी नहीं मजे की लगतई, ना ऊँची ना ठसरी।।
पंछीली मद भरी पदमनी, बनी दाव की सवरी।
'दयाराम' तक तक मुसका रये, दोउ जनै बेबस री।।

यारी

यारी असल नागिनी कारी, डसें कैउ बलधारी।
मीठी छुरी करेजौ फारै, सुरग लोक की त्यारी।।
छिन भर कौ आनंद वृथां है, आनंद कंद बिहारी।
'द्रयाराम' इनसें तज करकें, उनसें करलो यारी।।

रूप

घुंगटा मुख चंदा पै डारो, कर डारो अंदियारौ।
हटा देव घूंगट की बदरी, चंदा दै उजियारौ।।
नैंन चकोरन देख लेन दो, का नुकसान तुमारौ।
'दयाराम' घूंगट पट बैरी, दै रओ डटो सहारौ।।

नेत्र

नैंनन दयें ती कजरा कारौ, कर रई जुलम करारौ।
ऊसईं तौ वे हते कटीले, हारी खावे आरौ।।
ऐसौ काट करो है उन्नें, ना कर पाय दुधारौ।
'दयाराम' नैंनन कौ कजरा, जादू भरो पिटारौ।।

रूप

तोरी मुइयां पै बलहारी, कौन घरी विधि ढ़ारी।
सदा लगांय रयै छाती सें, ऐसी लगत प्यारी।।
फोटू मड़ा गरे में डारै, चंदा की उनहारी।
'दयाराम' सब जान मान कै, ब्रह्म फांस जा डारी।।

रूप

पनियां भरन गई ती धनियां, कम्मर कस करधनियां।
हरई उठत पग धरत फूल से, जैसें चलत हिरनियां।।
तक तक लेवें हंसत मनई मन, कम्मर बनत कमनियां।
'दयाराम' का करें देख कें, मों भर आवै पनियां।।

धृष्ट नायक

हम तुम एक होन खां तरसें, पतयातीं ना डर सें।
तुमरी चाल खटकवै जीमें, कढ़ौ न प्यारी घर सें।।
हम सें कई बेचैन विचारे, घायल डरे नजर सें।
'दयाराम' कैसऊं ना बरकौ, बिदजौ जबई जबर सें।।

रूपसी

बाला अजब रूप की आई, आई मन मुसकाई।
का ईकी रौनक खां कइये, मानों रती दिखाई।।
कै बा रमा देव कन्या कै, इंद्र अप्सरा धाई।
'दयाराम' बा सूरत हमखां, गई बेचैन बनाई।।

रूपसी सिं. वि.

नारी हँस मुसकावै भारी, भारी लगत प्यारी।
प्यारी हुस्न पाओ अनहोनो, रति कैसी उन हारी।।
हारी खाई ऋषी मुन ईसें, जा है काम दुधारी।
धारी 'दयाराम' नर देवन, हिये रूपसी नारी।।

रूपसी

अंगिया कसी दिखावै सामी, गोरी हो गई नामी।
जां कड़ जाय सनाको होवै, कइइक चाई थामी।।
फूली गजब हुस्न की बगिया, भौंर बड़े पैगामी।
'दयाराम' कई करें थराई, हमखां भर दो हामी।।

मुग्धा

मोहित भई मदन के मारें, कइ कड़ आवें बारें।
देखत इत उत दुक दुक प्यारी, कां गये प्रेमी प्यारे।।
गौर बरन नैना रतनारे, बार भंवर घुंघरारे।
कै वे मदन सजीवर आ गये, मिलवे मोय द्वारे।।
भंवरी सी मड़रात फिरत बा, उनपै सब कुछ वारे।
'दयाराम' दिल उनखां दै दओ, प्रेम रोग के मारे।।

रूपसी

गालन गड्ढा परत हंसत में, लेतीं प्रान चलत में।
प्लैन विलाउस बैयन गांसी, देखी खेप धरत में।।
हांत लगांय गगरिया ऊपर, लगवै गजब लफत में।
'दयाराम' चलतन रस बरसै, बैठे कैउ जुगत में।।

निरलोभी प्रेमी

कितनेंउ नैंन सैन दै हेरो, चित्त डुलैना मेरौ।
तरकस नैन रीत जै तोरौ, बिरथां नजरें फेरौ।।
बा मुसकान करै का हमरौ, कितनऊं द्वारो गेरौ।
गोरौ बदन चाल मोरनियां, रौनक गाबौ केरौ।।
'दयाराम' पै रंग चड़ै ना, चड़ो स्याम रंग गैरौ।।

(रहस्य वाद)

ऐसी देखी कंऊ है नइयां, जैसी है बा मुइयां।
ऊकी उन्जस ई धरती पै, विधि नें रची है नैयां।।
पैरै मड़ा गरे में ऊखां, जा आवै मन भइयां।
'दयाराम' जो बा मिल जै तौ, मिलजें खुलीं किवइयां।।

कल्पना

होवै रात चांदनी कौरी, सेज सजी हो भोरी।
मौसम होवै जोउ बसंती, या दिन होवें होरी।।
मड़रावें ऐंड़ाई लैलै, जैसें फिरवै भौंरी।
'दयाराम' सोरा बरसन की, होय अमोली छोरी।।

नायिका

लफ लफ लफ रई बिना लफाई, पतरी सी करयाई।
चौअर हो हो जात जात में, खेप धरें मुसकाई।।
पंछीली है सोट कामनी, विधि नें कवै बनाई।
'दयाराम' कऊं सुनी न देखी, ऐसी अजब नुनाई।।

--

विधि नें कौन घरी में ढारो, रजउ जौ रूप तुमारौ।
कांसें कौन मसालौ ल्याकें, तुमें रचो है न्यारौ।।
मानों मदन नार बन आओ, मंत मोहनी मारौ।
'दयाराम' कै रती आई फिर, दयें रओ हमें किनारौ।।

--

बातन वारांती हो भारी, नैयां करौ करारी।
अकती जेठ दशारा कड़ गओ, का तुम मनें विचारी।।
हरौ हरौ चौमासौ काटो, काटी निस अंदियारी।
पूस माव दिल घाव करे हैं, जिया विकल है भारी।।
'दयाराम' कयें टिया फाग्र कौ, कड़न न दियो प्यारी।।

अनौखा रूप

की की जा पतरी सी धनियां, ईकी कमर कमनियां।
जा रई झिकत तांत सी तनवै, लाजै चाल हिरनियां।।
चौअर हो हो जात चलत में, कमर कसें करधनियां।
'दयाराम' जा कौन निठुर ने, भरन भेज दई पनियां।।

--

नारी वीर जगत में भारी, सब जोधा गये हारी।
है मुसकान बान वे ऊना, बे गई रकत पनारी।।
सैकरयांव कलारें घायल, सुध वुध कई खो डारी।
'दयाराम' कयें कऔ को वरको, इनकी तेज दुधारी।।

कुल्टा (छिनार)

यारन देख धना मुसकानी, वे मन की सब जानी।
गेरैं फिरें मछौं से गेरऊं, चढ़ रओ रंग ज्वानी।।
नैंनन सैनन का का करवें, जानें जीनें जानी।
'दयाराम' लज्जा खुद लाजी, ना बा छोत लजानी।।

बातावरन

जीकौ उतर गओ है पानी, वेशरमाई दिखानी।
नामी कैउ दुकानें खोलें, पुंजी न कौड़ी कानी।।
दिन उर रात गाक गेरें रये, जिंस न एक बड़ानी।
का कर लेंयपुरा पाले के, की की का है हानी।।
'दयाराम' का का गत हो रई, जगत भरे की जानी।।

कुल्टा

फेरी देतीं जैसे भौंरा, हेरें चारऊ ओरा।
चौअर चलें फरकती चलतन, नैन बान दिल फोरा।।
नाव करन खां घूंघट डारें, करें खूब मौजोरा।
'दयाराम' भारी इठलातीं, धरती पांव मरोरा।।

प्रेम

है कोउ दुनियां में दिलवाला, बचालेय जो भाला।
दूरई सें हनवें हत्यारी, परवै बड़ौ कसाला।।
घाव न एकऊ घायल जांदा, कठिन परो है पाला।
'दयाराम' का करन विचारें, वीर बनी बा वाला।।

सखी

गौनें हो आई हौ बैना, बना कटीले नैना।
बदली चाल शरम कुछ छूटी, कातन कछू बनैना।।
वीरा पान चबाये जी भर, मदन समर समरैना।
'दयाराम' जैसे थे जुबना, वैसे कसे ठसेना।।

रूप

बिधि नें कौन घरी में ढ़ाला, जौ सांसौ है आला।
पेटई सें हतयार ल्याई, तीर कमनियां भाला।।
लयें कटार दुधारी संगैं, करे कैउ बेहाला।
'दयाराम' बिन मारे मररये, ऐसी कातिल वाला।।

प्रेमिका

मो लओ ऊ धुतिया वारी नें, पंछीली नारी नें।
लफ लफ जात जात नागिन सी, हेरन मद प्यारी नें।।
गोली दागै होय न चटकौ, मारो हत्यारी नें।
'दयाराम' चित चुरा लओ, है गाल गड़ा वारी नें।।

नायिका

कड़तीं विरथां रूप दिखावे, कोरौ जीव जरावे।
मुसकातीं कातीं कुछ नइयां, ललकौ हिया लगावे।।
मन की कहौ कसक कड़ जावै, लखतीं हौ वारावे।
देखत हँसत करेजौ फटतई, हेरौ हंसौ हंसावे।।
'दयाराम' आ जातीं नाहक, सूरत हमें दिखावे।।

मुग्धा

नजरन हमें छैल वौ झूला, सुंदर रूप न भूला।
हँस मुख बदन रंग कौ गोरौ, मिला देव सखि तू ला।।
मानो मदन रूप धर आओ, झूलैं बैंयन झूला।
'दयाराम' देखत व्याकुल भई, दिल दर्शन पा फूला।।

सिंगार

बेंदी दमक देत ऊपर को, चका चौंध सें बरकौ।
ऊसई मुख चंदा सें गोरो, गोरी धना सुधर कौ।।
बूंदा दमक बड़ायें दूनी, नैन संग काजर कौ।
'दयाराम' मुख दूनों दिपवै, संग होय बेसर कौ।।

- खराब आदमी -

कैसे कल में पजे उचक्का, सुनतन छूटे ठक्का।
झूंठ फरेब करत है हर पल, देखें तक्का झक्का।।
पर धन हरें तकें पर नारी, बादें होड़ी हक्का।
लूटें चांय जिये उर मारें, लैंकें लट्ठ तुबक्का ।।
'दयाराम' जे जल्दी मिटते,काते फिरवैं कक्का।।

प्रेम

गोरी ठांड़ी रयै द्वारे में, छैला गलियारे में।
बड़ी बिजत्तर बेला बिन्नू, कोउ न कुल सारे में।।
नैनन बैनन उर सेंनन सें, मिलतीं अंदियारे में।
ऐसी धार नैंन की इनकी, जैसी ना आरे में।।
'दयाराम' कयें अब का होतई, विगर गई बारे में।।

प्रेमिका

लरवे चली काम कौ जँग है, सजें अजब नग नग है।
दो हतगोला सामें वादें, दिखै एई सें तंग है।।
बिन ऐरे नैनन सें टौंटा, दागत जावै संग है।
बान विरौनी भोय कमनियां, मार देत की ढंग है।।
'दयाराम' हेरनं के हूला, हूल देत सारंग है।।

रूप

हेरन ही में बसी कसकती, हिन्नी चाल हुमसती।
मुसकैबौ तौ तुमें सरल है, ही में बरछी धसती।।
गड़कुइयां गालन गैरी हों, गोरी गर्वी हँसती।
'दयाराम' बा विसरत नइयां, जो जी के मन बसती।।

नैंन

गोरी काय खां काजर सारें, का तुम करन बिचारें।
बिन कजरा कजरारे नैना, कोरे बनी दुधारें।।
आरन सीं बे अनी तनी हैं, भोंय भई तरवारें।
जीपै चलें कटीली धारें, मर जावें बिन मारें।।
'दयाराम' बेदर्दिन गोरी, गोला छाती धारें।।

मौन संकेत

हमसें काय छरकतीं राती, मौ सें कछू न कातीं।
हम समजत नैनन की भाषा,जो तुम लिखलिख जातीं।।
मन मन की दोउ जन जानत, बिन बोलें सब कातीं।
बिना बतायें बिना बोलें कछु, गुड़ी फूट ना पाती।।
'दयाराम' कै डारौ खुलकें, वृथां रोज मुसकातीं।।

संकेत

तकती घुंघटा से मुसकाकें, घूंघट तनक उठाकें।
हेरन हंसन सबई कै लेवैं, छिन में नजर मिलाकें।।
को का करत कहो जी की सब, लोंका चौंका पाकें।
'दयाराम' बरसन सें तरसौ, हरषौ हिये लगाकें।।

नैन

कजरा इन नैनन ना आंजौ, पैनी धार न माजौ।
बिन काजर जे बने दुधारी, काटत जियरा साजौ।।
चीरत जात दरद ना इनखां, दिल छैलन कौ ताजौ।
'दयाराम' को इनखां रोकत, इनकौ डंका बाजौ।।

हेरन

बाला तिरछी नजर चितै गई, हरां हरां मुसकै गई।
बिना कयें सब मन की कै गई, जो कानें ती कै गई।।
चली गई बा कौन दिशा खां, तनक पतौना दै गई।
'दयाराम' का कयें काऊ सें, मन की मन में रै गई।।

- तिल -

भौंरा बदन कमल पै आओ, भागत नहीं भगाओ।
रैगओ चिबुक कली पै चिपको, रस पी नहीं अगाओ।।
तिल भौंरा जौ विधि बैठारो, शोभा भौत बड़ाओ।
रुच रुच गोरे गाल बनाये, देखत रती लजाओ।।
'दयाराम' ई तिल की शोभा, कौन कवी कै पाओ।।

- चरित्र -

देखौ हाल चाल दौरे सें, पूछौ हिल मोरे सें।
सतुवा सत्यानाश भउयो सब, का होने घोरे सें।।
चाल चलन की फसल नष्ट भई, रिसपित के ओरे सें।
'दयाराम' नौकर डरात ना, साहब के दौरे सें।।

- राजनीति -

घुसजा राजनीति में भइया, होजै चम्म मड़ैया ।
चिलकन लगें गाल पिचके जे, कारन चलै दुलैया।।
बंगला तनें कैउं शहरन में, कोटन जुरैं रूपैया।
लिइये निपट घुटाला करकें, बीसन मिलै बचैया।।
'दयाराम' का करत जेल बौ, जनमें जितै कनैया।।

- घूस -

चाय कोउ मानें चाय न मानें, सब कउं घूस दिखानें।
बिना लांच के आंच लगत ना, सांच के नाच नचानें।।
लांच बिना कुछ होनें नइयां, सौ-सौ बीगें छानें।
घुसी घूंस की घुरिया चक में, ईंखां मन भर खानें।।
कोउ बन जावें 'दयाराम' कयें, घूस मिटाना पानें।।

- जीवन दर्शन -

जीवन रांट घरी कौ फेरा, चक्कर चलै घनेरा।
लख चौरासी भरमत फिररओ, जौ प्रानी तन तेरा।।
जोत में जोत मिलै का करवै, काल चक्र दै फेरा।
'दयाराम' को जानें कां कां, भये जन्म कई बेरा।।

कुलटा

कइइक यारन खां बुलवावें, उनके घर घुस जावें।
सात भांवर कौ भगादओ फिर, यारन गरें लगावें।।
यारी करें खुलासा कइइक, की खां नहीं दिखावें।
अंदरा मूतै तकै जगत भर, को कऔ की की कावें।।
'दयाराम' जे विष की बेलें, भारत रोज करावें।।

जुबना

कैसीं तनीं जुबन की टोनें, इनें मीड़नें कौनें।
जीकी छाती लगें दोऊ जे, घाव सो गैरे होनें।।
रोजई रोज फार रये रेजा, भारी अजव निरौनें।
'दयाराम' ऐसे ना देखे, जे जोबन अनहोंनें।।

- -

जुबना अबै बड़न ना पाये, छैला नैंन गड़ाये।
उठतई बड़त रुकत ना रोकें, अंगिया नहीं समाये।।
निरखत हते रोज कैउ इनखां, कबै हांत में आयें।
'दयाराम' तक लये मसककें, पथरन से हम पाये।।

- -

की खां दो हतगोला बांदे, चोली बंद सें सादें।
जीखां घलें हुयै का ऊकौ, घलतन खोज मिटादें।।
जीके मूड़ घलें जे लुड़ियां, रन बन कौ करवा दें।
'दयाराम' केंथन से जुबना, खट्टे दांत करा दें।।

जुबना

जुबना दोउ काम के शाना, पैनो भाला ताना।
करें तने बने गुलपेखा, कीखां करें निशाना।।
हांत धरत गदियां हा हा कयें, छाती छिदै सुजाना।
'दयाराम' इनसें बरके रओ, इनको नहीं ठिकाना।।

--

ऊपर बाड़ धरे हैं पैने, नोंक दार का कैनें ?
नेंचें स्याम चक्र सौ तानें, फिर लालामी लैनें।।
रुई सी गेंदे बांद खेल रये, मदन लला दै सैनें।
'दयाराम' जे बता बता कें, प्रान खेंच लये तैनें।।

--

जुबना मड़ियां बने मदन की, कलश जड़ें टोनन की।
गुम्मटदार विधाता ढारे, जड़े छबी छतियन की।।
का कइये शोभा अनहोनी, चक्र सांवरे पन की।
'दयाराम' रति एकें बैठी, दूजी मड़ी मदन की।।

--

जुबना बड़ रये हैं दिन दूनें, मसके इनें कछूनें।
काल हते निबुअन से देखे, आज जामफल छूनें।।
नरियल से बड़ करें हो रये, कसे काय खां ऊनें।
'दयाराम' अब भये गड़ई से, घर कर लये दुद्दू नें।।

--

अंगिया एक दिना में फारें, इन जुबनन की धारें।
घनी सिमाई खटानी नैयां, टौनें कड़ी द्वारें।।
नीचट जीन हार मानी है, छूतन फरिया फारें।
'दयाराम' जे छाती लग कै, कऔ का करन विचारें।।

यारी

ऐसी सुनी न देखी यारी, भौतक भई संसारी।
गांवई की गांवई में हो गई, सात भांवर की नारी।।
भैया लगै कै लगै भतीजौ, गल वैयां जे डारी।
कका लगै चाय बब्बा लगवै, प्रेम न तकत चिनारी।।
'दयाराम' का करत कोउ जब, दोउ जनें दई तारी।।

काजर

तैनें घायल कर दओ पल में, जुलम गुजारे दल में।
कई इक डरे कलारें कूलें, विद गये चहल पहल में।।
वान घले ना घाव दिखावै, का दुख वरनें कल में।
हारे वैद्य हकीम डाक्टर, मर्ज न मिलो असल में।।
'दयाराम' कातिल सें जांदा, गुन तोरे काजल में।।

प्रेम

छोड़ौ दोउ जनन नें घर है, लड़ गई नजर नजर है।
लै दै लओ दिल उननें ऊकौ, धर लई प्रेम डगर है।।
प्रेम गांठ अब नईछूटनें, रूठै दुनियां भर है।
'दयाराम' ई प्रेम रोग पै, दवा न करत असर है।।

- मुग्धा -

गोरी देव न काजर कारौ, बिना मौत ना मारौ।
सहजई में घायल जे करवें, दया न तनक विचारौ।।
दोरे डरे तुमारे कबसें, का तुमनें अखत्यारै।
'दयाराम' तुम वेदर्दिन हौ, करती जुलम करारौ।।

-वीर सैनिक-

अपनी हद सें अगर हटोना, हमसें कोउ लटोना।
सुन लै पाक दोस्ती नातौ, ऐसें कभी सटोना।।
मौं पै राम बगल में छुरिया, तैने जोउ रटोना।
'दयाराम' दें मिला धूर में, डाटें अगर डटोना।।

मुग्धा

जाओ ना परदेशी छैला, रात होय रंगरेला।
जेठ दूर रये ननद घरै ना, बालक देवर अकेला।।
प्रीतम गये परदेश हमारे, ठंडौ घर दैं घैला।
तुम पै दिल रीझौ है मोरौ, भई अंदयाई बेला।।
'दयाराम' लओ परदेशी खां, बदमासन नें मेला।।

- -

हेरत चित चोरो प्यारी नें, चंद-बदन वारी नें।
वा मुसकान भाग्गी देखत, चाही संसारी नें।।
रंग जावे गागये प्रेमरंग, मोहो नथ वारी नें।
'दयाराम' दुनियां वश कर लई, पीरे पट वारी नें।।

- -

छैला आ जइयो दिनबूड़ें, उठै करेजें गूड़ें।
हम तुमखां तौ ढूड़त दिल में, रोजई रोज विखूड़ें।।
मन बेचैन मिलौ ना जौ लौ, शोक में उखरें बूड़ें।
'दयाराम' प्रीतम तुमरे बिन, मिले जात हम कूड़ें।।

- -

होकें टांड़ीं होत किवारन, मुसकानी का कारन।
खुलकें कहौ कसक कड़ जावें, टोर शरम के तारन।।
का डर बदनामी कौ जग में, ई में लुटत हजारन।
'दयाराम' परवानन की जा, साजी शमा संहारन।।

तिल गाल का

जेतिल दिपत गालपै प्यारे, दिल खुश भये न्यारे।
कारे शालिग राम पुजत हैं, राम कृष्ण दोउ कारे।।
कारे केश नाग से लटकत, देखत लगत लछारे।
कारे पाख जनम लये कृष्णा, कैसे दिपत प्यारे।।
गोरे तन पै कारे कपड़ा, गजब करें दिल फारे।
'दयाराम' कारे सासउं, सब होत बड़े अनियारे।।

प्रेम जाल

कइ इक संगै करें पड़ाई, नैंना लये लगाई।
दोउ हांतन की तारी बजरई, सो रये बाप मताई।।
घूमन लगे संग का कानें, रंग चड़ों तरनाई।
बंदगई गांठ फुर्र कैउ उड़ गये, को कऔ पतौ लगाई।।
'दयाराम' कयें प्रेम जार में, चिड़िया कैउ फसाई।।

नैंना

अंखियां सवरे करम करातीं, उड़उड़ कें लड़ जातीं।
बुनती जार यार यारी कौ, जी में खुद फंस जातीं।।
रैन दिना बेचैन रतीं फिर, सूजीं लाल दिखातीं।
हटकी नईं मानतीं एकऊ, सजा लरे की पातीं।।
'दयाराम' सब रातन जगतीं, औरन राज छिपातीं।।

- -

देखत नैंना मन लुभयावें, मनें बांद को पावें।
रूप शराब पियत ना छाके, जगत शराबी कावें।।
मन झूमत मस्ती आनंद में, मन मन में मुसकावै।
'दयाराम' नैंनन सें सबरो, जौ तन मन रंग जावै।।

- -

कुअलन भरन चलीं गई पानी, दिखा गई मिजमानी।
घूंघट में हो दिल की सबरी, हँस कै गई कहानी।।
तुम मुसकाव इतै भये घायल, को कवि पीर बखानी।
'दयाराम' बेचैन न होते, नांय न तकतीं रानीं।।

- -

हो गये मस्त रूप तोरे सें, पूंछौ दिल मोरे सें।
चाये जो हो जाय न टूटें, प्रीत कभऊं टोरे सें।।
अगन बुजत तुम हमखां देखो, हम देखें गोरे सें।
'दयाराम' दियो न लिइयो, कड़ जइयो दोरे सें।।

- नैन -

सांसउ अरियन सें कम हैना, इन परियन के नैना।
डारत चीर बीच सें दिल खां, अब लौ कोउ बचेना।।
जा लाली औठन गालन की, उर नैनन की सैना।
बान बिरौनी भर भर मारै, की खां कहौ छिपैना।।
'दयाराम' बेदरदी नैना, इनके फंद फसैना।।

-शारदा माँ -

बीना बजा देव मां खुलकें, भगत कयें मिल जुलकें।
हेरौ अम्ब निजी भगतन पै, गीत गांय उर पुलकें।।
विनती करत जोर कर दोऊ, कवै माई जें ढुलकें।
'दयाराम' विसरें ना सपनन, भजन गांय मिल जुलकें।।

देशप्रेम खंड- मातृभूमि

सब कुछ मातृभूमि पै वारों, आरति रोज उतारों।
जेई है पिता जेई हैं माता, सब कुछ जेई पुकारों।।
जनम देत पालत पोषत है, कां तक जस उच्चारों।
अपनी गोद राखती निसदिन, बेर बेर तन धारों।।
'दयाराम' जेई हैं ईश्वर, भारत मात विचारों।।

जन्मभूमि प्रेम

दिइयो जनम एइ झांसी में, राम कहौ सासी में।
झांसी में तैसीली मऊ हो, करौ नहीं हांसी में।।
जन्म भूमि हो जेई स्यावरी, बिन्ती कई खासी में।
'दयाराम' पै किरपा करियो, का मथुरा काशी में।।

स्वतंत्रता सेनानी

कर दओ गोरन कौ मौ कारौ, जिननें जुलम गुजारौ।
आदीं रात बँदा दये विस्तर, रेद रेद कें मारौ।।
आजादी के हेत अपुन सब, तन मन धन सब वारों।
'दयाराम' तुम धन्य धन्य हौ, साहस धन्य तुमारौ।।

देश की माटी

मानें ई माटी खां चंदन, बार बार कर बंदन।
जनम भूमि की रज में लोटें, मिटा देत दुख दंदन।।
सबसें बड़ी मातृभूमि है, शोभा ज्यों बन नंदन।
'दयाराम' प्रानन सें प्यारी, व्रत लयें रक्षा बंधन।।

हिमालय

जै जै हिम गिर पर्वत राजा, उत्तर दिशा बिराजा।
रक्षा करत सदा भारत की, चांदी मुकुट है छाजा।।
चांदी पट शोभै शुभ तन पै, नदियां दैं जल ताजा।
'दयाराम' जीवन खां जीवन, देत सदा गिरि राजा।।

- - -

वर्षा करै सुक्ख हो भारी, हिम गिर खड़ो अंगारी।
मानसून खां छेंक लेत है, वर्षा रित हो जारी।।
हरौ भरौ भारत राखें रयै, हिम गिरि की बल हारी।
'दयाराम' बरदान हिंद खां, जै जै सदा पुकारी।।

प्रकृति

नदियां बन पर्वत लख लैना, झरना हैं सुखदैना।
हीरा, मोती, सोना चांदी, भूमि देत कम हैना।।
फसलें सबई पजें अनहोनी, कमी काउ की रैना।
बारउ मास बसंत बनो रयै, की कौ मन ललचैना।।
'दयाराम' निज देश प्रेमी, स्वर्ग सें प्रेम हमेंना।।

कामना

मैया सजों तुमारी आरत, जश निशदिन उच्चारत।
दुख दारिद नाशें पल भर में, जो तोखां जल ढारत।।
हरौ भरौ सब हिंद करौ मां, तै सब काज समारत।
'दयाराम' जग भर में ऊंचौ, रयै हमारौ भारत।।

जन्मभूमि

जीनें जनम भूमि ना चाई, जनम अखारत जाई।
ऊ मानस सें कुत्ता साजौ, सुअर स्यार कयें गाई।।
जनम भूमि को कर्ज चुकावे, देह मनुष की पाई।
'दयाराम' कुछ करै देश खां, सब कोउ करै बड़ाई।।

स्वदेशी

देशी छोड़ विदेशी चायें, जितै मिलै लै आयें।
ईसें और चौगुने पइसा, दै दै माल मंगाये।।
देशी चीज देत मन खां सुख, ज्ञानी अर्थ लगायें।
'दयाराम' सब चीज स्वदेशी, लेवें और लिवायें।।

कवि से

कवि अब ऐसौ छंद बनादो, मोहन राग सुना दो।
सबमें प्रेम भाव की धारा, एकम एक बुवा दो।।
करिया नाग करै कन नीचो, ऐसी बीन बजा दो।
'दयाराम' भारत नित बड़वै, ऐसी कला दिखा दो।।

हिंद की माटी

माटी जा प्रानन सें प्यारी, माटी पै बलहारी।
माटी में खेले कूदे हैं, माटी पालन हारी।।
अन्न, फूल, फल माटी देवै, रतनन खान न्यारी।
'दयाराम' ऐइ में मिल जानें, चोखी मौर तुरारी।।

गांधी

गांधी! तुम सुरधाम बसे हौ, देवन बीच लसे हौ।
आंवन न देत देवता फिरकें, ऐसे घिरे गसे हौ।।
विगरे एइ हिन्द के वासी, उत सें देख हंसे हौ।
'दयाराम' भारत होय आरत, मन में तुमईं बसे हौ।।

भीमराव अम्बेडकर

धन्य धन्य भीमराव औतारी, संविधान दओ भारी।
दीन हीन दलितन के ईश्वर, अपुन बने सुखकारी।।
शोषित हती समाज जौन की, करी सदा रखवारी।
'दयाराम' फिरकऊं तुम आओ, हैं सब दलित दुखारी।।

दलितन हेत लड़ाई ठानी, भीम राव भये ज्ञानी।
छुआ छूत भारी मानें कई, भरन न देवें पानी।।
अत्याचार करें दलितन पै, गड़लई जुलम कहानी।
'दयाराम' समता समाज में, तुम ल्यावे की ठानी।।

वीर सैनिक

रन में पर गओ तो चर्राटौ, चीनन खां जब काटौ।
भारत मां की लाज बचावे, हिन्द वीर रन डाटौ।।
चीनी भुंजे चनन से देखौ, गोलिन कौ दन्नाटौ।
'दयाराम' इनके हौले तक, मच गओ रन सन्नाटौ।।

सैनिक

तक तक मारे भारी टोंटा, शत्रु वेशरम मौटा।
कुटो पिटो फिर कुटवे फिर रओ, पैल रुई सौ औंटा।।
जानत ना नापाक मूर्ख तें, बजरंगी कौ घोंटा।
'दयाराम' सुन लै अबकी तें, लै ना पाय करौंटा।।

पाक से

जो तुम खैर अपनी चाओ, सूदी रस्ता जाओ।
नाव पाक नापाक काम सब, नाहक बैर विसाओ।।
काश्मीर बौ खाली कर दो, है अधिकार हमाओ।
जोरत रत हतयार जुद्ध खां, तोय ज्ञान ना आओ।।
'दयाराम' सब टैंक टोर दें, कितने बिसा ल्याओ।।

--

होंनी जीपै आ मड़राती, ऊकी अकल नशाती।
भारत सैन शत्रु सब अपने, जमपुर तुरत पठाती।।
जानत जगत हिंद वीरन खां, भगें शत्रु उत्पाती।
'दयाराम' दुश्मन की सेंना, हा हा कर भग जाती।।

वीर सैनिक

कैसउ जुद्ध होय अनहोंना, परै शत्रु खां रोना।
गोला गिरा लाई सी भूंजै, खोजें कौना कौंना।।
रन खेतन पाटें लाशन सें, भागै कितऊं बचौना।
'दयाराम' भारत कौ जोधा, रन सें कभऊं हटौना।।

--

अपनी आजादी के लाने, निस दिन चौकस रानें।
होना पांय घुटाला एकउ, एसों पाठ पढ़ानें।।
कैसें लहरा पाओ तिरंगा, ईकी लाज बचानें।
'दयाराम' भारत वीरन के, गीत रैन दिन गानें।।

--

कैसें बनो तिरंगा स्याने, बिरले ईखां जानें।
खून रचा केसरिया पाओ, सत्य सेत में सानें।।
हरिल सदा बनायें धरती, हरे रंग हरयाने।
'दयाराम' नित नये झंडा के, गीत सदा हैं गानें।।

--

निस दिन पाप विचारे मन में, नाव पाक कातन में।
काश्मीर पै लार डार ना, बरसै अगन चमन में।।
कौलौ गम्म खांय हम तोरी, की की भरो भरन में।
'दयाराम' लातन की देवी, मानत ना बातन में।।

भारत देश

ऐसौ हिंद देश देशन में, बस गओ रोम रगन में।
धरती पै ना दूजौ ऐसौ, है सिर मौर सबन में।।
जगत गुरू सोने की चिड़िया, ज्ञान भरो ग्रंथन में।
सोंनो स्वर्ग न नोंनो हिंद से, देख लेव दर्शन में।।
'दयाराम' जब जब तन धारें, जनमें एई बतन में।।

कामना

जो मैं बौ मंत्री बन जातो, हिंद सैन हथियातो।
फहरातो लाहौर तिरंगा, कोउ न कुछ कर पातो।।
काश्मीर की बरोंटी खां, पल में उयै भुलातो।
'दयाराम' कयें पापी पाकै, मैं फिर कछू बतातो।।

--

जन्नत काश्मीर की चानें, कई तोरे अब्बा नें।
जौ अखंड भारत कौ टूंका, भारत कौ ही रानें।।
खालै दवा होश की मुल्ला, नातर करें ठिकानें।
'दयाराम' नरदा की बिन्ती, बखरी तोय गमानें।।

चेलैंज

लल्लै जंग गाड़ कें झंडी, रन में किलकै चंडी।
मार मार सागर में डारें, उतराजै ज्यों कंडी।।
भूंकन मरें बीबियां सबकीं, जान लगें सब मंडी।
'दयाराम' कयें काश्मीर पै, आह भरे क्यों ठंडी।।

वीर सैनिक

आजा आजा वारें कड़कें, हमें चीन लै बड़कें।
टूट परै चीता ज्यों मृग पै, तड़ तड़ तोपें तड़कें।।
गिरें गाज से दुश्मन पै हम, भौत भुजायें फड़के।
कऊं ना बचै सिरा कें पी रये, मठा दूध के छड़के।।
'दयाराम' लें अपनी धरती, दुश्मन से लड़ लड़कें।।

हिंद जवान

जब हम शेरन कैसे दड़कें, छाती फारें चड़कें।
आंख उठाई हिंद पै जीनें, जन्नत भेजें बड़कें।।
गदिया पै धर प्रान जंग में, जावें घोड़न चड़कें।
जग जाहर नाहर भारत के, सदा भुजायें फड़कें।।
'दयाराम' कोउ जीत न पाओ, हिन्द सैन सें लड़कें।।

--

अब हम छोड़ें नाक रगड़ कें, पैल लरें ना चड़कें।
पल भर में जमपुर पोंचा दें, तड़ तड़ तोपें तड़कें।।
गम्म खांय ना बम्म मार दें, हिंद वीर जब फड़कें।
'दयाराम' कबरें खुदवादें, देख लिये अब लड़कें।।

स्वराज्य

गोरा आये हिंद पै चड़कें, वीरन खां गये गड़कें।
आपस फूट राज हतया लओ, काका दुख दये बड़कें।।
हज्जारन फांसी पै झूले, लेख देखलो पड़कें।
'दयाराम' ने लओ स्वराज जौ, उन गोरन सें लड़कें।।

भारत माता

निरमल नीर सदा सुखदायी, सबको रई पिवाई।
सदा रखै अपनी गोदी में, पालन करै मताई।।
खावे देत दूध, फल सोना, इमरत स्वाद बनाई।
सब रतनन की खान भूमि जा, छमा करत कुटलाई।।
चरन धरत मां तोरे ऊपर, कां लौ कहौ ढिठाई।
'दयाराम' धरती मां सब कुछ, कहौ आरती गाई।।

वीरभाव

जो हम बौ हौदा पा जाते, सांसउ खेल दिखाते।
चूं चपाट करते ना कोऊ, ऐसो पाठ पढ़ाते।।
देते भुला हेरवौ हिंद पै, रन डंका बजवाते।
नन्नों भूत बड़न डरवा रऔ, ईकौ मजा चखाते।।
अगर पार सें मूड़ मारते, मूड़ फुरा भग जाते।
लेते मिला पाक भारत में, नकसा सही कराते।।
देते भुला कतन्नी करवौ, बैठे रते न सांते।
'दयाराम' सीमा पै अरिखां, बंदरा सौ बमकाते।।

धोखेवाज पड़ौसी

अपनों समज पड़ौसी भाई, दीनों हांत बड़ाई।
आस्तीन कौ सांप कड़ो बौ, भोंको छुरा पछांई।।
चोरी चोरी घुसो हिंद में, दीनी छेड़ लड़ाई।
'दयाराम' भारत की धरती, पाक न तिल भर पाई।।

--

बरकौ दगाबाज सें भाई, धयें रऔ टिमी कुलाई।
मौ पै राम बगल में छुरिया, पापी पाक चलाई।।
हम जानी कै दोस्त बनै जौ, बौ तौ कड़ो कसाई।
'दयाराम' दुश्मन नें ऐसी, दोग्लापनी दिखाई।।

भारत माता की पाती

चिठिया भारत मां पौचाई, करगिल सें है आई।
भइया किते घुसे तुम सो रये, ओंड़ें चोर बनाई।।
गीदड़ की जब आउत मौत सो, सामें गांवों धाई।
'दयाराम' सब भूमि छुड़ा लई, लरकें वीर सिपाई।।

कारगिल धोखा

काजी मुल्ला करी चड़ाई, करगिल लओ दवाई।
मुख में राम बगल में छुरिया, दीनी चला कसाई।।
मार मार कर दये ढ़ेर सब, कोउ न भओ सहाई।
'दयाराम' भग गओ पाक बौ, तिल भर भूमि न पाई।।

सत्ता बदल

जनरल पाक फौज कौ उखड़ा, लाल लाल कर मुखड़ा।
देखो ना गओ है जनता कौ, भारी ऊपै दुखड़ा।।
कैद करो सेना बदला कें, जा नमाज को पकड़ा।
'दयाराम' कयें बेई शरीफ अब, खांय जेल में टुकड़ा।।

भारत वीर

गोरा करी खून की होली, वीरन 'जय हिंद' वोली।
भये बलदान वीर हज्जारन, लयें तिरंगा टोली।।
हो गई लाल धरा खूनन सें, आयी मौत की डोली।
हो गये अमर लाल भारत के, हो गई छाती पोली।
'दयाराम' जलियां के बाग की, बीनी नेहरू गोली।।

गोरे

गोरा पक्के कुटिल कसाई, तिनें लाज ना आई।
जी पतरी में खाओ उन्नें, ओई में छेद बनाई।।
हिंद देश की दौलत ढो ढो, अपने देश पठाई।
जीनें बात सई कई ऊखां, कैद दई करवाई।।
फांसी लौ हज्जारन चड़ गये, को किस्सा कयै गाई।
'दयाराम' कितने दुक्खन सें, जा आजादी पाई।।

स्वतंत्रता सेनानी

अपनों तन मन धन सब वारो, प्रन ना तजो न्यारौ।
बीसन वेर विपत सई जेलन, वीर न हिम्मत हारो।।
मोती वीर जवाहर प्यारे, साहस धन्य तुमारौ।
'दयाराम' कयें आदी राते, गोरन देश निकारो।।

अखंड भारत

भारत रहै अखंड प्यारौ, सब दुनियां सें न्यारौ।
अब फिर गल्ती होन न दैनें, कोउ न हिम्मत हारो।।
गुरु की सीख न मानें देखौ, वै रओ रकत पनारौ।
'दयाराम' हिंद के शेरन नें, स्यार कायरन मारो।।

- एकता -

भइया अबहूं कछू विचारौ, घर ना निजी उजारौ।
भाई भुजा दायनी कइये, ईखां ना टोड़ारौ।।
खालिस्तान मांग सिक्खन नें, अनरथ पै पग धारौ।
बांट न पाय हिंद खां कोऊ, चाय मरौ चाय मारौ।।
'दयाराम' आ गई समज में, मिल कै रान विचारौ।।

इंदिरा

इंदिरा थी गरीब खां मइया, जन की लाज बचैया।
भारत खां वे कामधेन भई, बनी सूदरी गैया।।
अरि दल दलन कालका थीं वे, मानो कुलिश कुलैया।
'दयाराम'-भारत अकाश की, थीं वे विमल जुदैया।।

पाक चालाकी

तोरी जा चतराई आंसी, नहीं मानिये हांसी।
हिंद देश के टुकड़ा करवे, कर रई मदद खुलासी।।
जानत अबै न कैसी हो गई, बाला रानी झाँसी।
'दयाराम' विष देत हिंद खां, बना बना विश्वासी।।

--

सुन लै खरी खरी जा मोरी, कर ना सीना जोरी।
आतंकवाद मचाय हिंद में, होजै मूड़ा फोरी।।
एक वेर दो वेर बरज दें, बात मान लै मोरी।
'दयाराम' जब हम रिसयावें, धर दें घींच मरोरी।।

फूटन

कैसौ फूटन नें दओ मौका, दुनियां खां दओ चौंका।
निरदोषन खां मार काट रये, लगा लगा कें मौका।।
खालिस्तान बनें ना कैसऊं, छोड़ दियो सब लौंका।
'दयाराम' आतंकी देखौ, करें सरग में टौंका।।

हिंद वीर

जै जै भारत मां की बोली, वीरन की हमजोली।
दीवानी भई आजादी की, नये वीरन की टोली।।
खेली बिना फाग की जमकें, रोज खून की होली।
'दयाराम' वर्षा सी वरसी, बंदूकन की गोली।।

--

अब क्यों लगत सबई खां खाटौ, जाय करेजौ फाटो।
आस्तीन के सांप पले कई, इनें न जानों नाटो।।
हमला करत पाक ना डरवै, बोलत हरदम ठांटौ।
'दयाराम' पैलऊं सें तोरो, पाक देश हम बांटौ।।

हिंद सेना

भारत वीर धीर कम हैना, दुनियां में सुन लैना।
अमरीकन, अफ्रीकन, चीनी, मुल्लन कभंऊ डरैना।।
पाकिस्तान कितैतें टिकरओ, इक झटका खां हैना।
'दयाराम' दुनियां सें न्यारी, है भारत की सैना।।

भारत मंदिर

ई में खून मास कौ गारौ, ईंटा हड्डी वारौ।
नी में प्रान चटान जमीं हैं, बन गओ महल करारौ।।
लालई लाल लहू कौ ब्रानस, रुच रुच पोतो सारौ।
'दयाराम' आजादी मंदिर, के ऊपर सब वारौ।।

आजादी

अपनी आजादी के लानें, गई कितनी हैं जानें।
राजगुरू, सुकदेव, भगतसिंह, फांसी पै मुसकानें।।
लक्ष्मीबाई बनी रन चंडी, उन गोरान के लान्नें।
कयें 'बेचैन' रखायें रानें, जा आजादी स्यानें।।

प्रकृति

नदियां गंगा जमना वारौ, भारत देश हमारौ।
काश्मीर है स्वर्ग धरन कौ, हिम गिर जचै न्यारौ।।
छै रित वारा मास निराले, धरम अनेकन वारौ।
'दयाराम' कयें सब दुनियां खां, लगवै हिंद प्यारौ।।

हिंद वीर

हम हैं वीर हिंद के न्यारे, हमसें उरज न सारे।
मां कौ दूध छोड़ के जावें, रन में अरि ललकारे।।
बैरी खां जमपुर डेरा दैं, पक्के नियम हमारे।
'दयाराम' शेरन संग खेलें, भारत के गववारे।।

--

गोरा भौत हते वे गुंडा, भारी कुटिल मुचंडा।
वेपारी बन भारत आये, राज करे मिल संडा।।
डारी फूट हिंद में उन्नें, करो करेजो ठंडा।
'दयाराम' मिल वार निकारी, हिंद वीर दै डंडा।।

--

दुश्मन करत समर की त्यारी, मन में घात विचारी।
दाग देत सीमा पै तोपें, ज्वान डटे हैं भारी।।
देत जबाब शेर भारत के, मानी कभऊं न हारी।
'दयाराम' दुश्मन की छाती, करवे पार कटारी।।

भारत की माटी

कावें का परवत का घाटी, जेई रही परपाटी।
रोम रोम में झांकी बस गई, हिंद की नई छटा की।।
टुकड़ा ना हो पाय हिंद के, जरें चुखरवन काटी।
'दयाराम' बैरी ना पावैं, जा भारत की माटी।।

कश्मीर

ललचै काश्मीर के लानें, पाजी पाक न मानें।
आतंक वादी सिका सिका कें, कित्ते तोय पठाने।।
सबखां स्वर्ग पठा कें पल में, कर दें होश ठिकाने।
'दयाराम' तें वरकै कां लौ, हिंद शेर भुकयानें।।

ललकार

करदें दुश्मन कौ मों काला, चलत कुढंगी चाला।
गिंडा करदें बैरी के बड़, छुअन न देवें पाला।।
काश्मीर सब खाली करदै, है तैयार मसाला।
'दयाराम' रन चंडी बन जै, भारत की हर बाला।।

वार्निंग

भूलो फिरत कौन की भस में, की की बता हवस में।
काश्मीर में दयें दौदरा, मिटजै एक दवस में।।
बिना कुटें ना मानें सांसउं, कपट भरो नस नस में।
'दयाराम' पल में सुरजादें, विष घोरै तैं रस में।।

समझौता

ऊसें करा लेव सब कसमें, करौ फैसला रस में।
कै इतिहास मान लो दोऊ, लिखा पड़ी हो दस में।।
कड़ जावै जा कील एक दिन, सब है अपने बस में।
'दयाराम' ना भओ फैसला, इतनीं कड़ीं बरस में।।

बीर

जो कोउ मातृभूमि पै मरवै, नाव जगत में करवै।
सूदौ जात स्वर्ग वौ जोधा, पग ना पीछे धरवै।।
मातृभूमि सें कौन बड़ौ भओ, कुरमा ऊकौ तरवै।
'दयाराम' सुरपति लौ ऊकी, उतै आरती करवै।।

देश भक्ति

पूजन, अर्चन, श्रवन कहावै, अर्चन, बंदन गावै।
जे नों भगति परै सब फीकी, देश भक्ति मन भावै।।
दुनियां बन्दै देश भक्त खां, कुरमा सब तर जावै।
'दयाराम' तन खेत तजै जो, जाय परम पद परवै।।

मातृ भूमि

करवै मातृ भूमि खां बंदन, ई की माटी चंदन।
ई कौ नीर सुधा सें साजौ, जेइ है आनंद कंदन।।
सौ सौ सरग पाय ना ईखां, पालन करै अनंदन।
'दयाराम' निज मातृ भूमि की, करों बंदना छंदन।।

--

जननी मातृ भूमि तन देवै, तन देवै धन देवै।
हवा देत इमरत सौ पानी, सब दै कछू न लेवै।।
पालन करै सुलावै गोदी, जीवन भर सुख सेवै।
'दयाराम' वौ वीर धन्य जो, ईपै तन दै देवै।।

--

तोसें ऊरिन को हो पाओ, हमखां आन बताओ।
तोरी धूरा में सब लोटे, अन्न नीर सब पाओ।।
शीतल मंद सुगंध हवा लई, मन कौ माल खबाओ।
'दयाराम' रिन मातृ भूमि कौ, कोउ चुका ना पाओ।।

स्वतंत्रता सेनानी

उनखां नमन कोट कयें आकें, दुख सये जेलन जाकें।
घर परवार कछू ना देखो, झंडा लओ उठाकें।।
जो दुख सये देश हित उन्नें, कौन कवी कयै गाकें।
'दयाराम' उनके पद बंदन, सदा करों हरषाकें।।

एकता

कई इक धरम इतै कई जातें, कइ इक दिखी जमातें।
कइ इक भाषा बोली कैऊ, एक देश के नातें।।
बन्न बन्न के फूला जैसें, माला में गुथ जाते।
रूप रंग पैराव भेद में, हिंद वासी ना आते।।
'दयाराम' भारत रक्षा हित, सबरे एक दिखाते।।

हिंद सौन्दर्य

जां तां झरना कल कल करते, झिर झिर पानी झरते।
लगे घने बन कइ इक जांगा, चीता शेर विचरते।।
हाती हिरन अनेकन पशु मां, मोर नाच सोउ करते।
'दयाराम' भारत भू तोखां, सदा नमन सब करते।।

स्वर्ग से बड़ी

नाचें मोर पपीरा बोलें, पंछी करें किलोलें।
तोता मैना का का कै रयै, सारस जोड़ी डोलें।।
उड़ उड़ जांय परेवा आवें, व्या घेंचुवा गोलें।
सीटी देत तीतरा देखो, बुल बुल कोहल बोलें।।
'दयाराम' भारत की माटी, स्वर्ग सें भारी तौलें।।

हिंद सौन्दर्य

हंसा झीलन में सुख पावें, चकवा बोलत रावें।
चकवी डटी दूसरे छोरें, विछुरें रात वितावें।।
बगला खंजन बतक पनगुड़ी, जलमुर्गा इठलावें।
'दयाराम' निसदिन जे चारण, जश धरती कौ गावें।।

भारत माता

छायी हरी हरी हरियाली, कऊं ना धरती खाली।
सारी पैर हरीरी ठांडी, धरती मात निराली।।
फूलन के हैं जड़े सितारे, हृदय नीर रस वाली।
'दयाराम' भारत की सब कोउ, करें सदा रखवाली।।

दिन में सूर आरती करवें, महा मोद मन भरवें।
राते चंदा विछा चांदनी, तारन सों नित भजवें।।
पंछी गीत गांय धरती के, प्रेम प्रेम में तरवें।
'दयाराम' सागर पद धोकें, हरष मनई मन करवें।।

--

देती भूमि अन्न खावे खां, घर देती रावे खां।
अमरत सौ नित नीर देत मां, जीवन सुख छावे खां।।
जो कुछ चानें देत सोई मां, पुत्रन हरषावे खां।
'दयाराम' भारत मां के गुन, हैं अपार गावे खां।।

--

गोदी लओ जनम जब धारो, भारत मात समारो।
पालो पोषो ज्वान बना दओ, सबई बुड़ापौ गारो।।
पंछी प्रान उड़े जी वेरां, तेईं ने गोदी पारो।
जौ लौ जियो खवाओ प्याओ, निस दिन मां पुचकारो।।
'दयाराम' लें कोट जनम तोउ, रिन ना चुकै तुमारो।।

--

जौ तन आय मात के कामें, जाय स्वर्ग के धामें।
जी खां प्रेम न ई धरती सें, भूत प्रेत सो सामें।।
नमक हराम मात ना मानें, जीव न जानों तामें।
'दयाराम' कयें जनम भूम भज, भज ना चाहे रामें।।

भारत वीर

हमखां समझ न मूरख सूदौ, कितनऊं उचकौ कूंदौ।
सबरे फंदा काट देंय हम, जो तुम जाल विरूंदौ।।
भारत पै जो आंख उठावै, घलै पसुरियन हूदौ।
'दयाराम' भारत वीरन ने, बैरी तेगन गूदौ।।

शत्रु से

तोरो मन जानें कां भूला, परचावै नओ चूला।
आतंकवाद बढ़ाय न मानें, लरौ बजा रमतूला।।
बबर शेर जे वीर हिंद के, हूंक देंय जब हूला।
'दयाराम' दें मिटा मिनट में, पाक फिरें कां भूला।।

होली

खेलें वीर हिंद के होली, दाग शत्रु पै गोली।
रंग छुओ ना लई पिचकारी, खेली भौत अमोली।।
लालई लाल धरा कर डारी, जयहिंद जयहिंद बोली।
'दयाराम' दुश्मन के खूनन, ज्वान खेलते होली।।

कवि घासीराम (मऊरानीपुर)

सुन लो बात आज सांसी को, ना मानों हांसी को।
करवें दूर गुलामी इत सें, अरि गर्दन गांसी को ?
जान गये गोरा दिल अपने, मऊ के कवि घासी को।
'दयाराम' जग नाव बड़ा दओ, घासी नें झांसी कौ।।

आतंक

जीके भये शहीद घरवारे, ऊके कौन सहारे।
आतंकवाद लील गओ जिनखां, लूट लये घर सारे।।
दिन उर रैन चैन है नइयां, बेकसूर माड़ारे।
'दयाराम' देखौ उनके घर, किलप रये गववारे।।

भारत की माटी

फसलें बन्न-बन्न की काटी, अटा अटरियां पाटीं।
फल, फुलवारी, हीरा मोती, सोना, चांदी बांटी।।
पैरे अन्न बन्न के उन्ना, घूम रये चौपाटी।
'दयाराम' सब जुर मिल पूजौ, ई भारत की माटी।।

शत्रु से

साजी बात लगत ना नौनी, मड़रा रई का होंनी ?
नाव पाक नापक काम सब, सूरत सकल सलौनी।।
फूलो फिरत इतै नई कतनें, एक सेर में पौंनी।
काश्मीर की बात छोड़ दै, हमें समझ ना मौनी।।
'दयाराम' देखत हैं तोरी, है गैरी कांलौ नी।।

--

सोचै चीन पाक का मन में, भूले हैं सपनन में।
आतंकवादी पते परें ना, जब हम कूंदें रन में।।
ककरिन सें काटें जब कोपें, हिंद शेर बातन में।
'दयाराम' ऊखां सोउ देखों, जी की भरो भरन में।।

चीन

चीनी भारी भूम दवाई, अब लौ ना लौटाई।
दबैं दबैं मांगत क्यों नेता, बात समझ ना आई।।
कऔ दो टूंक हांई कै नाईं, फिर हम करें दवाई।
भूजें अबकी बार चना सौ, चिंटिन दैं चुनवाई।।
'दयाराम' वापिस ना दै तौ, भारी ठनै लराई।।

कामना

आंनद बरसै हिंद चमन में, हर्ष होय तब मन में।
दुख-दारिद ढूड़ें ना मिलवै, जा अभिलाषा मन में।।
दुश्मन के अरमान मिटा दें, बढ़न न दें सपनन में।
'दयाराम' बेचैन कोउ ना, सुख हों सबई बतन में।।

मातृ भूमि

सब कोउ जौ तन तोसें पाता, तुझ में ही मिल जाता।
नाज, नीर, फल, फूल, हवा सब, मात तोई सें पाता।।
पालन पोषन करत जनम भर, रखें पुत्र कौ नाता।
'दयाराम' सबखां दै जीवन, जेई भूमका माता।।

वीर जवान

एकउ शंक न मानें मन में, बड़ जावें सहसन में।
दुश्मन दल पै टूट परें जा, जैसें बाज लवन में।।
छक्के छुड़ा बीन कें भूंजें, नाव करैं बीरन में।
'दयाराम' कयें धन्य बीर जो, लरवै रन खेतन में।।

परमाणु परीक्षण

भारत परमाणु बम पेला, परखो ठेलम ठेला।
धरती अंदर अंदर देखौ, अजब खेल जे खेला।।
अपनी रक्षा करवे भारत, है तैयार अकेला।
'दयाराम' भई स्वर्न जयंती, लगै साल भर मेला।।

यारी प्रेम

भारत बनै जगत की झांकी, को कयै छटा छटा की।
आंख उठाय स्वर्ग पोंचादें, वीर सैन है बांकी।।
माटी कन ना देंय देश कौ, जा हट रई सदा की।
कीमा कर कूरन कौ कसकें, याद करांय कका की।।
'दयाराम' दल देवें दुश्मन, सांग मार कें मांकी।।

पाक से

तोरी करनें परै दवाई, मर्ज बड़ो अधकाई।
एक गोली में टनगौ होजै, आय होश में भाई।।
सब बीमारी मिटै तनक में, रोग समज में आई।
दैने परै जुलाब तोय सुन, कोठा पाक कराई।।
'दयाराम' हुलिया सई करदें, पुरिया चलै हमाई।।

वीर सैनिक

भारी जोधा भारत वारे, सैनिक सुनौ हमारे।
लाखन खां लाई सौ भूंजत, देवें समर सुवारे।।
चीनी भुंजे चनन से देखौ, है इतिहास गवारे।
'दयाराम' जे पोंचा देवें, अरि खां जमपुर द्वारे।।

पाक

काये फिरत उतारें मुखड़ा, रोवै झूठौ दुखड़ा।
कावै कपट रोज इठला रओ, फिरवै उखड़ा उखड़ा।।
तोरी हमनें कदर जान लई, रंगो रंगाओ लुखड़ा।
'दयाराम' वौ कभंउ न दें हम, जौन स्वर्ग कौ टुकड़ा।।

पाक

रोवै ईना ऊना दुखड़ा, पाक फिरत है उखड़ा।
गोलावारी सहज काम है, लयें शरीफ कौ मुखड़ा।।
अब नईं बटत हिंद जौ सुनलो, करौ कितेकउ खुचड़ा।
'दयाराम' टुकड़ा हों तन के, होंय न हिन्द के टुकड़ा।।

हिमालय

देखौ सब दुनियां सें न्यारा, भारत देश हमारा।
चांदी मौर मुकट लांदें सिर, हिमगिर चमक दुलारा।।
काश्मीर सिर यू.पी. दिल है, मध्य पेट है प्यारा।
'दयाराम' सागर पग धोवै, देख रओ संसारा।।

हिंद एकता

कोउ कौ मंत इतै ना फुरनें, दार न एकउ चुरनें।
चीनी हो या पाकिस्तानी, भगवौ सिकओ न गुर नें।।
भारत के हित प्रान लगा दें, भाव भरे ईसुर नें।
'दयाराम' भारत रक्षा हित, भारत के सब जुरनें।।

कामना

इमरत कवै हिंद में बरसै, कबै बाग जौ सरसै।
भारत वासी सबई मिलें, उर हिय-हिलोर सें हरषे।।
धरम जात कौ भेद मिटै कब, हंसमुख हर मुख दरसै।
'दयाराम' वे दिन लखवे खां, अंतर मन निज तरसै।।

रानी झाँसी

गोरा अपनी अपनी धांदें, झांसी राज मिटा दें।
गोदी सोदी हम नई मानत, खाली किलौ करा दें।।
रानी कात आंय तौ झांसी, नाक चना चबवा दें।
'दयाराम' रानी झांसी कयें, अपनी झांसी ना दें।।

राष्ट्र एकता

हिन्दू मुसलमान दोऊ हीरा, हरौ हिंद की पीरा।
आजादी के हेत सबई नें, सई जेलन की पीरा।।
भये कुरवान वीर पंजाबी, भगत सिंह से हीरा।
'दयाराम' मिलकें भारत खां, रओ रखांय रनधीरा।।

शत्रु से

रोकें रइये अपनी फौजै, नातर जर सें खोजै।
आगे खां तनकइ ना बड़िये, बिना मौत मारो जै।।
डंडा घलै चाब पै खिंचकें, कईं कईं करत चलो जै।
'दयाराम' उदना न गम्म खें, जिदना बेजां होजै।।

वीर सैनिक

भारत बबर शेर ना सोजै, पाक बुकइया खोजै।
देवें दांक हांक कें बनका, गीदड़ भगत चलोजै।।
नन्नो भूत बड़न डरवावै, खेंच तमाचा दओ जै।
'दयाराम' कयें अबै मान जा, नातर पिरलौ होजै।।

--

रन में मच गओ तौ भर्राटौ, जबई चीनियन काटौ।
भारत मां की लाज बचावे, हिंद वीर रन डाटो।।
चीनी डारे भूंज लाइ सौ, गोलन कौ भन्नाटो।
'दयाराम' वीरन खां लरवें, रन में भओ सन्नाटौ।।

रानी झाँसी

जग में जाहिर हो गई झांसी, लक्ष्मी भई दुर्गा सी।
गोरन कौ मौं कारौ करवे, किलकी काल कला सी।।
काट काट कुटलन के कंठन, बन गई विकट बला सी।
'दयाराम' तरवार बाई की, हती खून की प्यासी।।

--

तनकउ ना हो पावै हांसी, हम ना देवें झांसी।
गोरन खां मैं काट काट कें, लै लौं जान टका सी।।
रुंड मुंड करकें कई खंडन, गरजों काल कला सी।
'दयाराम' तरवार हमारी, धरी खून की प्यासी।।

देश प्रेम

धनधन वीर प्रताप अकेला, छत्रशाल बुन्देला।
देश हेत सब अरपन कर दओ, बचो पास ना धेला।।
बा भा वीर शिवाजी तुमनें, रोपो जंग अकेला।
'दयाराम' आजादी के हित, आ गये वीर बघेला।।

पर्यावरण

भारत हरौ भरौ जो चावै, पेड़े ना कटवावै।
वर्षा हुयै हवा रयै साजी, बनता सब बन जावै।।
विरक्ष लगा कें जनम जनम खां, भारी पुन्य कमावै।
'दयाराम' जां बनें जानभर, पेड़े खूब लगावै।।

माटी देश की

सुंदर कउं पहाड़ कऊं घाटी, घूमन की परपाटी।
जातो कौन चार धामन खां, पाप जरें सब काटी।।
होतीं फसलें कितै बतादो, दूद का देती रांटी।
'दयाराम' कयें कऔ को होतो, जो ना होती माटी।।

भारत वीर

जो कोउ हिंद पै आंख उठावै, बौ कऊं जियत न रावै।
देवें भूंज भटा सौ ऊखां, भर्ता तुर्त बनावै।।
जिंदा जियत भार में भूंजें, फूलन सौ फुटकावें।
'दयाराम' जी दया करें ना, लटका आग लगावें।।

शत्रु को

जो कोउ हिंद पै आंख उठावै, उयै पकर डड़यावै।
ऊकी खाल खेंच भुस भरदें, सौ विछुवा चिपकावें।।
उल्टौ टांग आग फिर वारें, गम्म तनक ना खावें।
'दयाराम' कटिया मशीन में, उल्टौ उयै लगावें।।

वीर जवान

अपनी जनम भूम पै रावें, नोंन की सबई भंजावें।
धन्य धन्य सौ वेर धन्य वौ, वीरगती जो पावै।।
पावै स्वर्ग अमर हो जग में, जौ लौ दुनियां रावै।
'दयाराम' ऐसे वीरन की, गाथा जुग जुग रावै।।

देश भक्त

जो कोउ भलौ देश कौ चावै, हीरा बोउ कुआवै।
पूजनीय बौ वीर लाख में, अपनौ देश रखावै।।
जो कोउ बदी विचारै अपनी, बंदरा सौ बमकावें।
'दयाराम' दुश्मन खां बड़कें, हिल्लै तुरत लगावें।।

शत्रु से

कर रओ करम भौत ख्वारी के, देखत संसारी के।
काश्मीर लख लख ललचावै, फूल चाय क्यारी के।।
आतंकवाद रोज करवावै, वीर जां रखवारी के।
'दयाराम' देखौ जे कुकरम, बैरी मति मारी के।।

- सपने -

रइये पाक ठौर पै अपने, काम ना करो तुरपनें।
काश्मीर की हवा न पावै, फिरकें भारत नपनें।।
जां तक हद्द हिंद की निकरै, खेत लेंय सब अपने।
'दयाराम' दैं होंन न पूरे, तोरे कोरे सपने।।

- -

बीबी बच्चा लगें किलपने, छोड़ भगें घर अपने।
सोचो हिंद देश हथयालें, बान लगे हिय धसनें।।
मार मार बैरी रन खेतन, होरी सी है तपनें।
अल्ला अल्ला करवें मुल्ला, जिनें जान लओ सबनें।।
'दयाराम' आवें तौ आवैं, रातें ऐसे सपने।।

शत्रु से

अपनी ही औकातै रइये, गांठ बांद जा लइये।
हिन्द जमीं की माटी कौ कन, भूल न तें छू लइये।।
जो तें चाय खैर प्रानन की, अपने मैड़ें रइये।
'दयाराम' कोउ की बातन, भूल कैं ना आ जइये।।

पुकार

प्यारे बीरन भुजा उठाओ, राखी नई बंदवाओ।
मोरौ अन्न, हवा उर पानी, सब जी भर कें पाओ।।
लाज हमाई तुमाये हांतन, राखौ चाय गमाऔ।
'दयाराम' तुम हिंद वीर सब, तिलक करालो आओ।।

झलकारी

आवै याद वीर झलकारी, पूरन की घर वारी।
कोरन गोरन कौ बल लैवे, तेगा तान रिसाई।।
करगई नाव अमर धरती पै, सबै बनी उजियारी।
'दयाराम' रन खेतन तानीं, ऊने जाय दुधारी।।

रानी लक्ष्मी बाई

सब कयें धन्य लक्ष्मी बाई, तेगा तान रिसाई।
गोरन पै काली सी किलकी, काटे कुटिल कसाई।।
रन चंडी बन गई जंग में, आंदी सी अर्राई।
'दयाराम' प्रानन की आहुति, दैकें जोत जलाई।।

झलकारी

रन में तेग भयानक करतीं, मन में तनक न डरतीं।
दुश्मन दल के बा झलकारी, झला के झला कतरती।।
रन में तेग करै रन चंडी, महा गाज सी गिरती।
'दयाराम' जिंदा में दईना, जा भारत की धरती।।

शत्रु से

अब्बै लुवा ल्या तें अपने, फिरत काय खां खपने।
अब लौ दबे नहीं काऊ खां, नहीं अगाऊं दबनें।।
मां की चाय अगर तें माटी, कीमां करें न चपनें।
हम सोउ बम्म धरें तें सुनले, काकरलओ तोई धपनें।।
'दयाराम' सब चूर चूर कर, धूर मिला दें सपनें।।

पाक से

आवै हंसी तोय सुन सपने, होश में आ जा अपने।
काश्मीर की बातन बातन, तोय गपे में खपने।।
हिन्द शेर ना सोउत जगइये, नातर परै किलपने।
लुवा ल्या जीखां तैं जानें, इतै न कोउयै चपनें।।
'दयाराम' सोउतन में बमकें, देख न पावै सपने।।

मातृ भूमि

लाखन मिटे देश के काजा, सजे विगर गये साजा।
कैसे कें अंग्रेज भगाये, जानत सबई समाजा।।
भब्वड़ भओ सुतंत्र प्रजा भई, कर रई मन के काजा।
लूट रये हैं जुर मिल भारत, बैकन करें तकाजा।।
'दयाराम' कैसें है पाओ, कऔ जौ हिंद स्वराजा।।

फूटन

गोरा भारी हते कसाई, बनियां बने दिखाई।
देखी ई भारत में फूटन, लये निज पांव जमाई।।
बन बैठे राजा वे दुष्टी, लूटी पूंजी हमाई।
भगा देव भारत सें डाकू, दीनों विगुल बजाई।।
'दयाराम' खल आदी राते, भग गये पूंछ दवाई।।

इच्छा

वे दिन किदना राम दिखावै, भारत सब हरयावै।
सबमें एका प्रेम रहै नित, ममता निज दरसावै।।
हीर पीर में सब हों शामिल, जुर मिल दुक्ख बटावें।
एक कुटुम से कबै रयें सब, कऊं ना पाप सुनावें।।
'दयाराम' पापी पाखंडी, चोर न कितउं दिखावें।।

इच्छा

गोरा एसई ना भग पाते, पकर उनें हम ल्याते।
मुश्कें बांद पटक कें धरती, सबकी नाक कटाते।।
भटियन में जिंदा भुंजवाते, होरा सौ वरवाते।
कटवा कटवा कान खलन के, बूचा सबै बनाते।।
फुरवा देत गटा सबन के, हांत दोउ कटवाते।
'दयाराम' बड्डे हम होते, उनखां मजा चखाते।।

चुनौती शत्रु से

मिलवे हांत बड़ा रये बड़के, धरे पैल के छड़के।
नाव पाक नापाक धरो है, पार न पावै लड़के।।
सांसी कात शेर भारत के, छाती पै जें चड़के।
पतौ परै ना नाव मिटा दें, कर तोपन के धड़के।।
'दयाराम' अब तोय न छोड़ें, आजा वारें कड़के।।

रानी झाँसी

धर लओ रूप मर्द कौ बड़के, तेगा लओ पकड़ के।
बमक चड़ी घुरवा पै रानी, बांदौ कुंवर जकड़ के।।
काली रूप धरो चंडी नें, आई जंग में बड़के।
गोरन खां झांसौ दै कड़ गई, रानी घोड़ा चड़के।।
'दयाराम' बा भा रानी तें, गई किले सें कड़के।।

स्वदेशी अपनाना

होरी बार दई है ऐसी, कपड़ा जोर विदेशी।
गोरा सब पइसा लयें जारये, जे तौ हैं परदेशी।।
कातौ सूत बना लो कपड़ा, चीज बसात हो देशी।
'दयाराम' गांधी बब्बा कई, पैरौ बसन स्वदेशी।।

रानी झाँसी

बाभा ओ झाँसी की रानी, कर गई अमर कहानी।
गोरन खां काली बन आई, आंदी सी भर्रानी।।
होन न दई झांसी की हांसी, रन में बनी भुमानी।
'दयाराम' जय हिंद सदा कयें, जै झांसी की रानी।।

शत्रु से

चीनी भूंजे रन खेतन में, करो कपट जब मन में।
पैंटन टैक पाक के टोरे, हिन्द वीर खेलन में।।
नाव निशान मिटा दें अबकी, हिन्द शेर गरजन में।
'दयाराम' बड़िये ना आंगें, धोकें सें सपनन में।।

--

अब ना सोउत शेर जगईये, मेड़ें भीतर रइये।
अबकी दया करे ना छोड़ें, नजर न कभउं उठइये।।
भूलई कें अब हिंद जमी पै, नेंक न पांव बड़इये।
'दयाराम' कयें रमा के व्याड़ै, पाक न अबकीं जइये।।

जब तक चोला में जी रानें, तब तक जंग मचानें।
भारत वीर करें दुश्मन के, बिगड़े होश ठिकानें।।
गुड़िया से सब टेंक टोर दें, हम खां दुनियां जानें।
'दयाराम' जौ तन भओ पैदा, मातृ भूमि के लानें।।

प्रार्थना

पटकौ शीस गाज कौ गोला, दुश्मन बनवै होला।
दुर्गा चंडी काढ़ करेजो, कर कलेउ अनमोला।।
शीस फोर चटका नरियल सौ, खाक बना दें चोला।
'दयाराम' भारत कौ दुश्मन, मैंने बल खां बोला।।

रानी झाँसी

रानी जब रन में अररानी, अरि की अकल हिरानी।
रकत न पियो शत्रु कौ जौ लौ, ना तरवार सिरानी।।
झाँसी के पानी ने गोरन, याद करा दई नानी।
'दयाराम' ने जियत दई ना, झाँसी झांसी रानी।।

शत्रु से

अब हम छोड़न नहीं विचारें, धरें टिमी तरवारें।
मेड़े भीतर पांव धरो तौ, चीन चीन के मारें।।
तें जानत का हम हैं बड्डे, बम्म फेंक के मारें।
नन्नौ भूत बड़न डरवावै, भेज देय जम द्वारें।।
'दयाराम' भारत वीरन सें, दुश्मन सारे हारें।।

--

हम सब जानें मंशा तोरी, बाप की लेव बहोरी।
बम्म बनाव हमें का कन्नें, कछू हानि ना मोरी।।
भारत पै जो पांव धरै तौ, होजै मूड़ा फोरी।
'दयाराम' सांसऊ की हुइयै, इतै खून की होरी।।

रानी झाँसी

हम तौ अपनी झाँसी देंना, बाई साव का कैना।
गोरन खां देखें हम रन में, तुरत सजाई सेना।।
हो सवार घुरवा पै बमकी, लैकै तेगा पैना।
'दयाराम' ऐसी रन चंडी, जग में मिली हमें ना।।

कामना

बौ दिन भारत में कब आवै, सब कोउ सुखी दिखावै।
सतउ जात सब मिलकें रावें, कोउ ना दुखी सुनावै।।
सब कोउ बड़े सबई में दिल कौ, प्रेमई प्रेम दिखावै।
'दयाराम' भारत कौ टुकड़ा, कैसऊं ना हो पावै।।

अखंड भारत

कैसौ भारत में भओ भर्रो, ढुलमुल ढेंका ढर्रो।
कूर कुटिल कपटी कई करिया, कुकरम करवें कर्रो।।
होंन न देंय हिंद के टूंका, गुंडा करें खपर्रो।
'दयाराम' दुश्मन के लानें, शेरन से सब दर्रो।।

स्वतंत्रता सेनानी वीर

मोती, गांधी, लाल दिखाने, वे सुभाष सब जानें।
लाला भये लाजपत नेहरू, परमा नंद बखानें।।
राजगुरू सुकदेव भगतसिंह, मंगल पाण्डे स्यानें।
सावरकर से वीर सेंकरन, नी में चुन गये मानें।।
'दयाराम' लै लई आजादी, गोरा भगत दिखानें।।

झलकारी

छक्के छुड़ा दये नारी नें, कोरन झलकारी ने।
बनकें मरद जंग में आ गई, तेग करी न्यारी नें।।
धन्य धन्य बुन्देलखंड को, कओ दुनियां दारी नें।
'दयाराम' भाज़ी सौ काटो, ऊ झाँसी वारी नें।।

माटी

माटी हमें देश की प्यारी, ई पै सब बलहारी।
एइ माटी में खेले कूदे, जेई है बाप मतारी।।
अन्न, फूल, फल माटी देतई, है जगती सें न्यारी।
'दयाराम' एइ में जा मिलनें, चोखी मौर तुमारी।।

रा. एकता

कैसे जे हैं मूरख पाजी, बात विगारें साजी।
झंडा कौ अपमान करन की, आज्ञा दै दई नाजी।।
जो कोउ रहै हिन्द में जानों, होय हिंद पै राजी।
'दयाराम' भारत में रैकें, बुरओ विचारें पाजी।।

धोखा कारगिल

देखौ कुटलन की कुटलाई, अपनी घात लगाई।
कारगिलन पै कबजा कर लओ, रातई राते भाई।।
भारत वीर लाई सी भूंजी, लई निज भूमि छुड़ाई।
मौ पै राम बगल में छुरिया, पाक ने सदा चलाई।।
'दयाराम' दुनियां भर जानत, भारत की प्रभुताई।।

वीर

गूंजौ जय हिंद कौ नारौ है, जन जन खां प्यारौ है।
वीर सिंह सीमा पै लरकें, बैरिन संहारौ है।।
गदिया पै धर प्रान बड़े वे, बैरी ललकारो है।
करगिल छुड़ा लओ कर अपनों, रेद रेद मारो है।।
'दयाराम' बैरी खां तुमनें, पठअओ जमद्वारौ है।।

रा. एकता

हम तौ सब जन हिंदुस्तानी, रखें एकता शानी।
भाषा धरम अनेकन जातें, बनीं रयें का हानी।।
एक तिरंगा सबकौ प्यारौ, दई सबनें कुर्बानी।
'दयाराम' अपने भारत की, सपनन करें न हानी।।

दीपावली

सारे भारत के नर नारी, खुशी मनाई भारी।
जा दिवाई है भौतई साजी, लक्ष्मी पुजै हमारी।।
दिया जलांय फटाका घालें, फुलझड़ियां है भारी।
'दयाराम' भारत में रोजई, एसई होय दिवारी।।

झलकारी

जग में भई न ऐसी नारी, जैसी भई झलकारी।
मर्दानो धर भेष जंग में, मारे गोरा भारी।।
झांसी की रानी सी बनकें, घोड़ा पै असवारी।
'दयाराम' कयें तोय धन्य है, पूरन की घरवारी।।

--

सबनें सुनी हुयै झलकारी, रन में तेग संमारी।
रानी के बा प्रान बचावे, बन गई झांसी वारी।।
गोरा रानी जान उरज गये, भई बलदान न्यारी।
'दयाराम' रानी कड़ गई जब, गोरा लगे पिछारी।।

शक्ति

बनवै काम न सूदें सादें, नीचट तुमें बतादें।
सूदीं उंगरिन घी नई निकरत, ऊखां सबक सिकादें।।
का डर वीरन खां बैरी कौ, बंदरा सौ बमकादें।
'दयाराम' दुश्मन खां जिंदा, नी में पकर चुनादें।।

भुमानी से

पीलै अरि कौ खून भुमानी, काली बन रुद्रानी।
हड्डी मुरा चबाय मांस लै, मिटा दै नाव निशानी।।
लै लै पूत काल भैंरौ संग, खालै जाय ज्वानी।
'दयाराम' दुश्मन कौ लोहू, पीलै जैसें पानी।।

झलकारी

लरवे चली फौज गोरे सें, सजी समर घोरे सें।
मरदानी बन गई भुमानी, जंग जुरो जोरे सें।।
झलकारी बड़ कटक काटवै, किलक किलक घोरे से।
'दयाराम' कर तेगा तानें, कड़ी किले दोरे सें।।

कामना

होते बड़े जो हम छोरे सें, कस देते जोरे सें।
हाहा करा भगा देते सब, खुंदवाते घोरे सें।।
मार मार कारे कर देते, गोरन खां गोरे सें।
'दयाराम' हम कढ़न न देते, उनखां निज दोरे सें।।

प्रार्थना

मिटवै कब अज्ञान अंधेरा, चमकै भारत मेरा।
निरमल मन हो दिखै न रिसपित, राम राज सौ डेरा।।
सब में प्रेम कुटम सौ रावै, सबखां लडुवा पेरा।
'दयाराम' भारत में ऐसौ, हुइयै कबै सवेरा।।

पाक से

मानत ना मुल्ला कौ जौआ, बनी फिरत जौ हौआ।
तनकई दें आदेश फौज खां, चीथें गीदा कौआ।।
भारत मां पै आंख उठा रओ, ना हम गम्म खवौआ।
'दयाराम' कयें भारत माता, दै रई आज बुलौआ।।

राष्ट्र प्रेम

भारत माटी खां जो छूलै, उयै हूल दें हूलै।
किते लगत तैं पाक कुचाली, सबरी अजमा तू लै।।
आटा कैसौ नौंन मिला लें, कीके बल पै फूलै।
तैं औकात न छोड़त अपनी, कर दें नाश समूलै।।
'दयाराम' आतंकी सारे, कां फिर रये हैं भूले।।

आपसी लड़ाई

खेवै कौन हिंद की नैया, फंसी भंवर में भइया।
कौन चलाय राज की गाड़ी, कैसें ढड़कत पइया।।
कऊं की ईंट कऊं कौ रोरा, कैसें कटत समैया।
'दयाराम' इक चक हो गई तौ, मचजै हाहा दइया।।

पाक से

अब तें बारें कड़कें आ तौ, निज औकात बतातौ।
बिना कुटें तें मानें ना अब, हम जानत सब जातौ।।
तोरी पीठ सौरयानी है, धरी कुटैलू बा तौ।
आ जा अब मैदान जंग में, भौत बनत है सांतौ।।
'दयाराम' कयें दगा करें ना, कौल अब्बा कौ खा तौ।।

राम मंदिर

बाबर आओ हतो ई मुलकें, गओ अधरम पै तुलकें।
मस्जिद बनवा मंदिर टोरो, राम काड़ दये खुलकें।।
भई खुदाई निशानी मिल गई, तोऊ भइया पुलकें।
राम जनम भूमी है बेई, बिरथां कोउ कुलकें।।
मिलकें रऔ सार है जीमें, कात जीभ गई छुलकें।
'दयाराम' मस्जिद कौ मलवा, फिक गऔ सारौ ढुलकें।।

शत्रु से

जैसो करौ सजा सो पातो, हमें अगर मिल जातो।
का हम उयै छोड़ते जिंदा, बाप याद आ जातौ।।
मार मार कें छलनी करते, तड़प तड़प पर जातो।
पांव धरत भारत के ऊपर, धरकें तोप उड़ातो।।
दै चैलेन्ज सामने आजा, कितनों नानो कातो।
'दयाराम' देखत धां करते, सामे जो मिल जातौ।।

कामना

सुमरों तोय कालका माई, करदो तनक सहाई।
सबरो हिंद फलै उर फूलै, मिलकें रयें सब भाई।।
पूरौ देश एक कुल जैसौ, रहे प्रेम दरसाई।
सबके सुख दुख में सब आवें, प्रेम डोर बंद जाई।।
'दयाराम' आतंकी की मां, कवर देव खुदवाई।।

शत्रु

जैसें चीता हिरनन दावै, बाज चिरइयन खावै।
एसई हिंद वीर दुश्मन खां, पकर पछार लगावै।।
भारत भू पै पांव धरत ही, तोपन तुरत उड़ावै।
'दयाराम' दुश्मन दल दलकें, धुजा तिरंग चड़ावै।।

शत्रु

इनकी डाड़ धरी का लपकी, दिन में आ रई झपकी।
चीनी चुना देय हम चिटियन, दया करें ना अबकी।।
सबरी भूम छुड़ा लें अपनी, दावें जौन मुफत की।
'दयाराम' चीं ना कर पाये, कसर निकारें जबकी।।

सैनिक बंदना

बन्दों कोट कोट वीरन खां, देश हेत गये रन खां।
घर छोड़ौ घर वारे छोड़े, कब भगांय गोरन खां।।
जेलन गये शंक ना कीनी, गये फांसी फंदन खां।
एकई लगन एक प्रन पूरौ, करें स्वतंत्र वतन खां।।
'दयाराम' अब अपनों भारत, खवा न दो गीदन खां।।

कामना

सब में प्रेम विरोवर रावै, कबै दिना वौ आवै।
छोटौ बड़ौ ऊंच उर नीचौ, छुआ छूत भग जावै।।
भारत के हों भारत वासी, जग में एक कहावै।
कौनऊ धरम जात होय कौनऊ, कऊं कौ कोउ दिखावै।।
'दयाराम' सब भारत वासी, एकम एका रावै।।

एकता

चाये हो पंजाबी भाई, असमी उड़िया गाई।
गुजराती, मदरासी तमिली, बंगाली दरसाई।।
केरल वा कश्मीरी चाये, रहें विहारी भाई।
एम.पी. हो चाये हो यू.पी., सबई इंडियन गाई।।
'दयाराम' सब हिन्दुस्तानी, कहें देश के भाई।।

एकता

अपने देश हिंद के लाने, सब कुछ करकें जानें।
भेदभाव के नरवा पाटें, गंग एकता लानें।।
पावन दिल पावन हो करनी, पावन बचन वखानें।
प्रेम प्यार की धारा गंगा, एकम एक बहानें।।
'दयाराम' सबरे हिंदवासी, हिन्दुस्तान रखानें।।

आतंकियों से

छोड़ौ बंदूकें संगीने, मत बौराई कीनें।
का गोलन में तुमें मिलत है, मनुष जनम दओ कीनें।।
बिना कसूर करौ क्यों हिंसा, जा कईं बुरई सभी नें।
गोली तज बोली प्रिय बोलै, कै दई गुनी कवी नें।।
'दयाराम' सब कुटुम तुमारौ, कीखां लये संगीनें।।

वीर बंदना

करवें वीरन कौ हम बंदन, समजें माटी चंदन।
लयें बंदूक मेंड़ पै ठांड़े, गनें चलावें दन दन।।
घुसन न देत शत्रु सीमा में, गोली मारें ठन ठन।
जे दै देत मौत दुशमन खां, बड़े कुशल हैं हर फन।
'दयाराम' भारत के वीरन, करता रोजई बंदन।।

शत्रु

चीनी बड़त आउत तिल तिलकें, भगा पाव मुश्किलकें।
भारत भूमि दाव लई भारी, पाक चीन दोउ मिलकें।।
देव कलेवा करा कालकै, बेतौ भारी किलकें।
'दयाराम' कयें देश हेत रत, सबई देश के मिलकें।

राष्ट्र एकता

जो कोउ हिन्द देश में रावै, भारती सोउ कुआवै।
जी की हवा लेत उर पानी, अन्न जितै कौ खावै।।
जी की धूरन लोटो खेलो, सो तौ कियै न भावै।
अपने प्यारे हिंद देश पै, को ना प्रान गंमावै।।
हिंदू हो या जैन पारसी, इतै न भेद पुसावै।
'दयाराम' भारत वेदी पै, देश भक्त बल जावै।।

हिन्दू मु.

दिल से जो दोऊ जाते जुरजे, जाते सोउ निनुर जे।
का मंदिर का मसजिद कइये, दोऊ बने निठुर जे।।
सांसी बात पाक नई मानत, ईसें रये बिलुर जे।
हांत मिलावे सें का होनें, दिल सें जाते जुर जे।।
'दयाराम' जे दो भइया हैं, नाहक विरथां उरजे।।

शत्रु से

ईसें निपट लेव तौ साजौ, तनकऊ मानत ना जौ।
एक दिना तौ कभऊं निपटनें, जानो बोउ दिना जौ।।
काश्मीर कौ नाव भुला दौ, ऐसौ मारौ दांजौ।
पाकिस्तान मिटा दो सबरौ, ऊकौ टोरौ मांजौ।।
'दयाराम' सपने में भूलौ, बर्रा रओ है ताजौ।।

एकता

हिन्द के सब हैं हिन्दुस्तानी, एकई जात बखानी।
को हिन्दू को तुर्क पारसी, को ईसाई जानी।।
को बामन को बनियां जानें, एकई जात समानी।
देश हेत तौ सबरे सीजे, लिखी है अमर कहानी।।
'दयाराम' सांसउ दई सबनें, देश पै है कुर्बानी।।

जन्म भूमि वंदना सिं० वि०

बन्दों जनम भूमि निज प्यारी, प्यारी प्रान अधारी।
धारी देह जितै है हमनें, ऊपै सब बलहारी।।
हारी कभऊं न माने अरि सें, हनें पछार पछारी।
छारी उड़ा देंय बैरिन की, मारें चोट करारी।।
रारी 'दयाराम' सें की तौ, भेज देंय जम द्वारी।।

फसलें

पज रई जुनई इतै ज्यों चांदी, मक्का मौरें बांदी।
सोना सौ सोना जो दमकै, भये किसान है आदी।।
बीज खाद दें पानी देवें, लगा नहर में खांदी।
वर्षा करें दया कर मेघा, सूकत फसलें सादी।।
'दयाराम' कयें सबई अन्न हों, खुश हैं दादा दादी।।

अंग्रेजों के समय

जो हम ऊ बेरां कऊं होते, परे परे ना सोते।
कुटिल कसाई फिरंगी गोरन, मार हांत ना धोते।।
अन गिनते हम मुंड काटते, मुंड माल फिर पोते।
देते चड़ा कालका मइयै, इन बुकरन के कोते।।
'दयाराम' हम बम्म पटक कें, काल उनई के होते।।

- -

जब हम हते भौत गववारे, भग गये गोरा सारे।
होते बड़े अगर ऊ बेरां, देते लट्ठ करारे।।
काट काट कीमा कर देते, देते कुत्तन ख्वारे।
दुष्टन पै कुछ दया न करते, खोज मारते सारे।।
'दयाराम' रै जात सोच कें, हांत न पड़े हमारे।।

वीर माता

धन धन वीरन की मां वरनें, रोज आरती करनें।
जिननें लाल देश हित दै दये, वीर भाव दये हरनें।।
भये शहीद हिंद हित जो जो, उनके कुल सब तरनें।
साजौ भओ निछावर हो गये, आखिर इक दिन मरनें।।
जनम भूमि के हेत गये जो, स्वागत कीनों हरि नें।
'दयाराम' वे अमर हो गये, मरे न आंगे मरनें।।

वीर

जौ तन लगै देश के लानें, धन्य भाग हो जानें।
धन्य घन्य हो जै जा देइया, जग भर खां जस गानें।।
सबसें बड़ी देश की सेवा, जो भओ हुये रमाने।
भारत मां पै प्रान देत जो, ऊकी फिर का कानें।।
'दयाराम' जौ लौ जा धरती, वीर कथा सो रानें।।

गोरा

गोरा डर दिखाये फांसी के, फंदा बदमासी के।
फूटन देख राज हतया लओ, बेइमानी जा सीके।।
निरदोषन खां भौत दये दुख, बड़े कसइया हीके।
कुछ गद्दार देश के हो गये, वैरी हिंद वासी के।।
'दयाराम' झांसी हमाई उर, हम सब हैं झांसी के।।

शत्रु

सोचै शत्रु अरे का मन में, की की भरो भरन में।
आतंकी जितने पोंचावें, धरन सुवा दें छन में।।
ककरी खीरा सौ हम पौलें, हिंद शेर झट रन में।
'दयाराम' किलकै रन चंडी, सांग ठांस दें तन में।।

देश से

तुम तौ शांति शांति रये गाई, उयै क्रांति मन भाई।
हिंद वीर छोड़ौ घर की खां, सब दें धूर मिलाई।।
अपनों हतो सौ लै लैं अपनो, मिला लेव निज भाई।
भैंस के आगें मोदी विरथां, तुम रये बीन बजाई।।
'दयाराम' मन कौ कर डारौ, दै दो घुटी दवाई।।

कश्मीर

अपनों लैं कश्मीर छुड़ाई, अबै घरी ना आई।
जौ कश्मीर हिंद कौ पक्कौ, फिर फिर देंय सुनाई।।
ओई पार रइयै तैं सुनलै, माटी देंय मिलाई।
पीट सौंरया रइ है तोरी, ऐसौ देत दिखाई।।
'दयाराम' नें नौ मुट्ठी की, दै दई धूर तुमाई।।

रानी झाँसी

गोरा भौतई हते हरामी, फौज टिका दई सामी।
शेर सुवन खां बांद पीठ पै, मौ लगाम फिर थामी।।
दोउ करन में तेगा लैकें, काटो कटक कुगामी।
'दयाराम' झांसी की रानी, भई जगत में नामी।।

--

गोला गोरन पै जब मारो, माई गौड उच्चारो।
काली कूरन काट काट कें, कीमा सौ कड्डारौ।।
नानी याद करा दई उनखां, कौन बचावन वारौ।
'दयाराम' रानी झांसी नें, तन स्वदेश हित गारौ।।

-भारत की माटी-

हमनें दुनियां भर में छांटी, कितनी काटा फांटी।
ऐसी कितऊं दिखानी नैयां, शोभा हिंद छटा की।।
ठांड़े ज्वान देश रक्षा हित, हांत तुबकिया डाटी।
'दयाराम' प्रानन सें प्यारी, है भारत की माटी।।

मातृ भूमि

देवै अन्न और धन भारी, मातृ भूम जा प्यारी।
फल उर फूल देत अनगिनते, पजें दवाई भारी।।
रतन जवाहर हीरा मोती, सोनों चांदी न्यारी।
'दयाराम' भारत माता सम, को है ई संसारी।।

-भारत वीर-

हमनें बैरी लातन खूंदौ, दओ पसुरियन हूदौ।
मार मार डंडन सें संडन, कर दओ बिलकुल सूदौ।।
मिटजै मूढ़ मिनट में सांसउं, विरथां उचकौ कूदौ।
'दयाराम' हमनें रन खेतन, बैरी भालन गूदौ।।

--

जौ है कूर कुटिल खल कामी, कपट कुमारग गामी।
नाव पाक नापाक काम सब, झूंठी देत सलामी।।
गीदड़ की जब मौत आउत सो, दौड़ दौड़वै सामी।
आटा कैसौ नोंन मिलालें, दो सेना खां हामी।।
'दयाराम' सांसउ तें कुटवै, हुयै भौत बदनामी।।

पाक से

बातें छोड़ पाक सपनन की, कर लै खबर वतन की।
सबरौ देश मिलांय हिंद में, शान करें रन बन की।।
काश्मीर कौ नाव भूल जा, जा धरती पुरखन की।
आर पार की अबकी हुइयै, धां धां हो तोपन की।।
'दयाराम' पंखुरी ना पावै, प्यारे हिंद चमन की।।

दगाबाज

जानी हमनें तुमनें सबनें, कोउ मित्र ना अपने।
जिन सांपन खां दूद पियाओ, बंइ चाउत हैं डसने।।
बंगला देश नैपाल देख लो, कीनी मदद अपन नें।
चीन पाक तौ सब जानत है, चिंता नइयां सपनें।।
'दयाराम' न खुवाव गदन खां, हरे खेत जे अपने।।

भारत वीर

सेना भारत की मतवाली, जग में विदित निराली।
शेषनाग फन फूलत लरवें, सेना सजकें चाली।।
बन जावै शमशान वीर जे, जितै तोप दें घाली।
'दयाराम' दुश्मन की उड़ती, देख बदन की लाली।।

आजाद

तोरी हिम्मत शान निराली, धन्य शेर जंगाली।
भूंज भूंज गोरन को होरा, बने हिंद के माली।।
धन्य मात जगरानी देवी, माता भोली भाली।
'दयाराम' नओ भोर भओ, नई छाई पूर्व में लाली।।

मातृ भूमि

वारी हिंद भूमि मतवाली, सदा रयै हरयाली।
झरना झिरें मोर नित नाचें, कोहिल कूकै डाली।।
नभ में सारी जड़े सितारे, प्रकृति सजाये आली।
फूली फली पात पातन सें, शोभा सब रंग वाली।
'दयाराम' नित उषा विखेरत, पूरव सें नई लाली।।

पाक

चावै भूमि हिंद की लैना, तोरी दार गलैना।
जैसौ नाव बनो रौ ऊसई, अबई समज लै बेंना।।
काश्मीर में पीर ओलिया, मुल्लाएक दिखैना।
है आटा कौ नौन समज लै, नकशा पतौ परैना।।
'दयाराम' कयें मोरी तोरी, ऐसें कभऊं बनैना।।

धन्य

धन धन ईश्वर धन्य विधाता, धन्य पिता उर माता।
मातृ भूमि खां पैल धन्य है, जी की रज तन चाता।।
धन्य गुरु जो गैल बताई, धन्य ज्ञान के दाता।
'दयाराम' वौ वीर धन्य जो, रन में शीस चढ़ाता।।

रानी झाँसी

बाभा ओ झांसी की रानी, कर गई अमर कहानी।
बना गई तीरथ झांसी खां, तें घन सी घारानी।।
गोरन खां तें काल बन गई, तेग लई मरदानी।
ई स्वराज की पैली जोती, जरा भई अगवानी।।
को भओ और जगत में तो सौ, जो होय तोरी शानी।
'दयाराम' भारत में ऐसी, होती रयें भुमानी।।

--

रानी झांसी सबनें जानी, बनी वीर मरदानी।
दांत लगाम दावकें चंडी, जंग करें घमसानी।।
शत्रू कटक काट खूनन सें, बनकें आई भुमानी।
'दयाराम' खां रासौ गानें, जौ लौ है जिंदगानी।।

--

तनकई होन देय ना हांसी, देंना अपनी झांसी।
गोरन खां दों काड़ देश सें, लै लौं जान टका सी।।
रुंड मुंड कर खंड खंड मैं, हनूं फिरंगी सांसी।
'दयाराम' है तेग हमारी, शत्रु खून की प्यासी।।

- पाक से -

हिंद में तकौ पाक कौ झंडा, फैरा देवें गुंडा।
अबै देख लो हाल खलन के, देव सूंट कें डंडा।।
भारत के टुकड़ा करवावें, कर दो इन खां ठंडा।
'दयाराम' देव डाल जेल में, कै कड़वा दो कंडा।।

- रानी झाँसी -

जिस दम रुंड मुंड खां काटो, गोरा खा गये खाटौ।
चपल तुरंग लगाम दांत में, ऐंड़ लगा कें डाटो।।
तेगा दओ ठटाय भुमानी, शत्रु करेजो फाटो।
'दयाराम' लक्ष्मी बाई लख, भओ रन में सन्नाटो।।

शत्रु से

सांसउ पाक की खाक बना दें, अच्छौ सबक सिखाकें।
मार मार पाजी रन खेतन, सीमा पार भगा दें।।
काश्मीर की रट्ट लगायें, ईखां अबई भुला दें।
'दयाराम' भारत की धरती, एक आंगुर भी ना दें।।

मातृ भूमि

सबकौ पालन धरती करती, बोरा बंडा भरती।
देत रतन पन्ना उर हीरा, सोना खान निकरती।।
कंद मूल, फल, दवा रसन की, कितनी रास विखरती।
'दयाराम' सबकौ जीवन है, मातृ भूमि जेई धरती।।

शत्रु से

तोखां तोय बाप खां जानें, तैं ना मोखां जानें।
काश्मीर कौ कन नई पानें, बर्रातई तोय रानें।।
चंद खिलौना मौड़ा मागत, दओ कबै माता नें।
काश्मीर पै भारत हो जै, भारत कौ ही रानें।।
'दयाराम' तैं जोर लगा लै, जितनों तोय लगानें।।

वीर सैनिक

गोला गवा देत सीने की, रक्षा प्रन लीने की।
होरा सौ भूंजत बैरी खां, सजा देत कीने की।।
बंदरा सौ बमकावें बैरिन, ताकत पिरवीने की।
प्रान धरें गदिया पै बड़ रये, आदत खूं पीने की।।
'दयाराम' करें ज्वान न चिंता, मरने उर जीने की।।

रानी झाँसी

कर में तेग लई लाशानी, बनकें आई भुमानी।
पीवै खून लाल गोरन कौ, काट कंठ खिसयानी।।
छक्के छुड़ा दये रन खेतन, जेई झांसी की रानी।
'दयाराम' ऐसी मरदानी, ना कऊं और दिखानी।।

-पाक से-

कर दै जमीं हिंद की खाली, ओ नापाक कुचाली।
काश्मीर के पीर ओलिया, पल में कर दें खाली।।
एक मिनट खां नैयां सबरे, चड़ा देंय बल काली।
'दयाराम' दुश्मन खां हरदम, तानें धरें दुनाली।।

--

हिन्द में पैलऊ इयै मिलातो, पकर पछार लगातो।
बंगला देश बनाओ हिन्द नें, सेना वृथां पठातो।।
ज्वानन खां आडर दे देतो, एक घरी गम खातो।
अबै कछू ना बिगरो ज्वानो, रऔ तैयार जरा तौ।।
'दयाराम' हिंद के बेरिन खां, सांसौ सबक सिखातो।।

--

कैदो सेना सें अब टटकी, बात भौत है खटकी।
काश्मीर सब अपनों लै लो, बात न मानों कट की।।
हल्ला दै कें दवस बोल दो, बात न कुछ झंझट की।
काड़ौ काश्मीर कौ कांटौ, अकल लगा दो नट की।।
'दयाराम' कश्मीर समस्या, कै दो कबसें अटकी।।

बंदना

बन्दों गुरू ज्ञान के दाता, पद रज शीस चड़ाता।
फिर बन्दों जीवनजो दीनों, नर तन रचो विधाता।।
शारद माई सुमरनी करकें, बन्दों पित उर माता।
पालन करो जनम दओ जिनरनें, कौन उरिन हो पाता।।
'दयाराम' सब देव अशीषें, चरनन शीष नबाता।।

विनय खण्ड-

वंदना शारदा जी की कृपा

शारद आज दया करना है, अजब रंग भरना है।
करों कृपा नीरस हिरदे सें रस झरना झरना है।।
कारे और अशुभ बरनन को गौर तुमें करना है।
'दयाराम' के छंद बंध की, भूल तुमें हरना है।।

--

भैया चरन तोय नित परसें, करो आरती करसें।
सुर विंजन सब तुमई काड़ियो, दास हिये के घर सें।
कविता तोय भरोसें करता, जंग जीतनें अर से।।
'दयाराम' दो ज्ञान गठरिया, शारद अपने वर सें।।

--

सरसुत चरन कमल में वंदन, बार-बार अभिनन्दन।
ध्यान करत आ जइयो मइया, बना दियो शुभ छंदन।।
बरन वरन खां सुबरन करियो, फूल चढ़ाऊँ चंदन।
'दयाराम' खों बांदे रइयो, अपनौ रक्षा बंधन।।

--

माता सज लो हंस सवारी, शारद बीना वारी।
धूप कपूर चड़ाऊँ प्रेम सें, चरनन में चित धारी।।
अरपन करों फूल की माला, जैं हो विद्यावारी।
नौ रस धार बहै अन होनी, छाया रहै तुमारी।।
अशुभ और शुभ जानत नैयां, तोव भ्ररोसो भारी।
कविता सबई समारें रइयो, बिनती जेइ हमारी।।
'दयाराम' वर दो वरदानी, सदा करों रखवारी।

--

माता सदा दायनी रइयो, अपनों जान रखइयो।
मैं मति मंद मूढ़ अज्ञानी, हांत पकर लिख वइयो।।
कर-कर कंज शीस पै रावै, अक्षर अशुभ बचइयो।
'दयाराम' चरनन कौ चेरौ, जब सुमरौं आ जइयो।।

--

पैलां सरसुत चरन पखारौं, अत आनंद उर धारौं।
चिन्नामित लौं फूल चड़ाकें, गागा राग उचारौं ।।
आरत करौं दोउ कर जोरें, शीस चरन में डारौं।
'दयाराम' दोइ बेरां पूजूं, आरति रोज उतारौं।।

मैया ही अंदयाव मिटादो, ज्ञान की जोत जला दो।
अपनो जान अजान अनारी, चेरौ गुनी बना दो।।
हिरदौ-कमल आसनी तोरी, सबद सुगँध बरसादो।।
'दयाराम' के मन मंदिर में, नये-नये भाव जगा दो।

सरसुत माई दयाल दिखानी, वर दो माँ वरदानी।
तुमरी कृपा कोर भई जीपै, बन गओ पंडित ज्ञानी।।
चरनन डरो तुमारौ चेरौ, हेरौ माँ ब्रह्मानी।
'दयाराम' एकई वर चानें, कछू होय ना हानी।।

दोरें सेवक खड़ो तुमाओ, हेरौ दया दिखाऔ।
निजकर कंज शीस पै फेरौ, मति खाँ बिमल बनाऔ।।
लिखा-लिखा अक्षर अम्बे तुम, हिये कमल बस जाऔ।
कविता ज्ञान अगम का जानों, जैसौ चाय लिखाऔ।
मैं रओं मगन भगति तोरी में, दया दया पै लाऔ।
'दयाराम' हे मात शारदे, रस बरसा बरसाओ।।

तोरे दरसन खाँ आये हैं, मन में हरषायें हैं।
जानत कछू भगति ना पूजा, चित्त चाव चाये हैं।
करियो मात दास पैदाया, औगुन सब छाये हैं।
'दयाराम' अपनी अम्बे खां, फूल-फूल लाये हैं।

--

करती भक्तन की रखवाली, माता वीना वाली।
सेत कमल पै आप विराजी, तुमरी कला निराली।।
सेत बसन पुस्तक कर राजै, बाहन हंसा वाली।
डारौ आन जीभ पै डेरा, होय न हीनी पाली।।
'दयाराम' की बिनती मैया, कभऊं जाय ना खाली

हिरदै वे नौ रस भर दइयो, छंदन में लिखबइयो।
कंठै बैठ-मधुर कविताई, माँ तुमई सुनइयो।।
मैं मति मंद छंद का जानों, रसता तुमई बतइयो।
'दयाराम' पै सदा दायिनी, मात शारदा रइयो।।

अपनौं छौरा जान अजानों, करियो क्षमा उरानों।
अंचरा तरें राखियो निस दिन, बालक खुश मातानों।।
ओली में खेलै गबवारौ, कर कमलन सिर तानों।
मैं जड़ अधम भूल करतईरओं, देव ज्ञान कौ बानों।।
'दयाराम' ना मात दुकावै, लरकै धरो खजानों

मैया तोखां पैल मनानें, चरनन शीष झुकानें।
दिइयो सदा सहारों मैया, कला तोई को जानें।।
सब रस भरी कड़ै कविताई, इतनी कृपा चानें।
मैं मूरख जानत कुछ नैयां, तोव सहारौ रानें।।
'दयाराम' जागत सोउत में, गीत तुमारेई गानैं।

-सिं० बि०-

सुमरौं हंस वाहिनी आजा सुबरन बरन बना जा।
ना जा आकें हे ब्रह्मानी, अमृत रस बर सा जा।।
साजा सुर बीना कौं बाकौ, सभा में आन बजाजा।
जा-जा जितै होय तोय जानें, बंदन करतन आजा।।
आजा 'दयाराम' से रंकैं, तेई बनावे राजा।।

सबकोउ आदशक्ति को ध्याता, गीत ओईके गाता।
ब्रह्मा, विष्णु महेश मनावें, आरति जगत सजाता।।
तेतिस कोट देवता पूजें, तुम ही जग विख्याता।
'दयाराम' पै सदा दायिनी, रतीं शरदा माता।।

मैया दाया सदा दिखाओ समय परे आ जाओ।
पूजा रचा कछू ना जानों, कोरौ नीर चड़ाओ।
जोरों हांत शीष पद-कमलन, तोखाँ सदा झुकाओ।
'दयाराम' सेबक पै हेरों, फूल-फूल कैं लियाओ।।

जो कोउ शरन तुमारी आतो, मों मांगों वर पातौ।
सुबरन बना देंय कवियन खाँ, उनको हिय हुलसातौ।।
विधि के भवन छोड़ कें आतीं, जो कउं दास ध्यातौ।
'दयाराम' जो भूलैं मग तौ, आकें तुरत बतातौ।।

कर दो बीना बजा तमासे, सुर झंकारौ साँसे।
बरन बरन खां सुबरन करकें रस के भरौ घड़ा से।।
राखें रऔ गोद में मैया, बड़ों को नहीं माँ से।
'दयाराम' तोरें दरसन खाँ, जे दोउ नैन प्यासे।।

जै-जै हंस वाहिनी माई, सदा करें रखवाई।
कंठै बैठ मधुर बुलबइयो, सुनें सबई हरषाई।।
कर में कलम ग्वा के मोखां, छंद दियो लिखवाई।
बना बना रसखान राग सब, दिइयो अशुभ बचाई।
तोय चरन की धूरा सिर पै, चड़ा रओ हरषाई।
'दयाराम' तोरे गुन शारद, कौन विशारद गाई।।

सूमरत शारद गई हरषाई, जन की करी सहाई।
गूंगन खां बाचाल बना दये, दैरये ग्रंथ गवाई।।
है विधना की लाड़ लड़ैती, हौ दयाल तुम माई।
'दयराम' दुख दारिददर दये, दया दृष्टि दरसाई।।

मैया चानें तोय सहारे, रइये हांत पसारे।
भूलें जितै बतइये रस्ता, करिये कष्ट निवारे।।
बसिये सदा जीभ मोरी पै, बानी रस उच्चारे।
'दयाराम' है चरन शरन में, हेरौ डरो द्वारे।।

तै है माता मैं हों छौना, कर बरनन खां सोना।
कर कमलन की छाया करिये, रोंव कछू ना रोंना।।
जान अजान छमा कर दिइये, अपनों जान खिलौना।
मैं बोउ लिखौं लिखावै जो मां, रैन दिना विसरौना।।
पूजा कछु करत ना तोरी, भगत बड़ौं में हौना।
'दयाराम' तोरी किरपा बिन, कौनउ काज सदौना।।

मैया कर दो छंद रसीला, राग बनें चटकीला।
चेरी की मत फेरी तुमनें, कैकई बचन हठीला।।
राम पठै दये वन जनहित में, रावन अति गर्वीला।
'दयाराम' को जान पाव है, मात तुमारी लीला।।'

मैया ऐसो सुर झंकारौ, मोहें त्रिभुवन सारौ।
ऐसे छंद लिखादो आकें, जग में हो उजियारौ।।
बरसै नो रस धार शारदे, ज्ञान बुद्धि में डारौ।
'दयाराम' का कन्नें हमखां, हुइयै नाव तुमारौ।।

माता अपने हांत समारौ, मोय भरोसौ भारौ।
मैं तौ डरो तुमारे दोरें, टरों न कैसउं टारौ।।
लतरोंदा रओ बनों तुमारौ, चरन घूर सिरधारौ।
'दयाराम' कुछ चानें नईयां, रऔ मां हांत पसारौ।।

बारी हंस सवारी बारी, तोरी कला न्यारी।
होंनें हतो राज रघुवर कौ, भई वन की तैयारी।।
तोरी कला सबई जग जानत, तौव भरोसौ भारी।
'दयाराम' एकई वर चानें, दास न खावै हारी।।

तौरे पती चार मुख वारे, ब्रह्मा अमर प्यारे।
पूत पांच मुख के जग जाहिर, गरैं नाग है कारे।
नाती छै मुख के बरने हैं, कार्तिकेय जू न्यारे।।
'दयाराम' हे मात शारदे!, सादौ काज हमारे।।

-सिंह० वि०-

वारी ब्रह्मानी मतवारी, न्यारी कला तुमारी।
मारी मति कैकयी की तुमनें, करो लोक हित भारी।।
भारी भीर लगै द्वारे पै, भक्तन जस उच्चारी।
उच्चारी जस 'दयाराम' नें जै-जै ब्रह्म कुमारी।।

मैया दैदै ज्ञान लहर को, मधुर बना दे सुरको।
बरन-बरन में इमरत भर दै, मोहै सब जग भर को।।
कविता करत भरोसें तोरे, लिखिये मां अक्षर को।
'दयाराम' पै रयै छांयरौ, मैया तोरे कर कौ।।

जै-जै ब्रह्मानी सुखदायी, बीना देव बजाई।
राग सुनत सब मोहित होवें, आनंद दो बरसाई।।
नौ रसधार बहा दो माता, लिखा लिखा कविताई।
'दयाराम' पै छाया करियो, सदा शारदा माई।।

कर सें कर में कलम गुआतीं, हांत पकर लिखवातीं।
माता तुमई निरस हिरदे सें, रस की धार बुआतीं।।
रातीं सदा दायनें मोरें, जान अजान रखातीं।
भाव और रस अलंकार सें , सबरे छंद सजातीं।।
अंब विलम्ब तनक ना करतीं, दौरी-दौरीं आतीं।
लड़खड़ात उर गिरत जितै मां, छौरै तुमई उठातीं।।
सुनकें सुजन सपरवें रस में कविता झड़ी लगाती।
'दयाराम' मोरी कविता तौ, मइया, तुमईं बनातीं।।

ऐसौ बीना अजब बजा दे, तीनऊँ लोक नचा दे।
रंकै करें राव महारानी, राजन हाट बिकादें।।
गूंगन खां बाचाल बना कें, चारउ वेद पढ़ा दैं।
'दयाराम' जो चांय शारदा वैसी उमै बना दें।।

शारद अब तौ करौ सहाई, कंठ बिराजौ आई।
लोक हेत के कारन तुमने, हरि दये विपिन पठाई।।
बदलौ बुद्धि खलन की मैया देवैं धन लौटाई।
दिन उर रात नींद ना आवै, का है कृपा तुमाई।।
कै घर रूप महा काली कौ, काटौ कुटिल कसाई।
'दयाराम' तुम सब कर सकती, तुम हौ सदासहाई।।

भैया सज लो हंस सवारी, शारद बीना वारी।
तोरे चरन सदा से पूजौं, मैं हौं अधम अनारी।।
अरपन करौ फूल के फूला जै हो विद्यावारी।
नौ रस धार बहे अलवेली, छाया रहै तुमारी।।
अशुभ और शुभ कछु ना जानों तोव भरोसो भारी।
अक्षर सदा समारें रइयौ, विनती जेइ हमारी।।
'बुन्देली' भाषा नित वड़वै फूलैं फलै अंगारी।
'दयाराम' दैदो बर मैया, हरी भरी रयै क्यारी।।

शारद तोई दया जो हो जै, दया कौ नाव चलो जै।
मैं मत मूढ़ महा जड़ मैया, ज्ञान बीज जो बोजै।।
और कछू ना चानें माता, नित नव छंद रचो जै।
'दयाराम' जौ बर दै-दै तौ कछू न बेजां होजै।।

मैया मोय कंठ में आना, मीठौ राग बनाना।
अपनों जान अंजान भली सी दया खूब बरसाना।।
मैं नादान जानतीं तैं सब, बालक जान रखाना।
सदा सहाई होती मां तुम, शुभ अक्षर लिखवाना।।
'दयाराम' तुमरी किरपा बिन, कौनऊँ राग जमा ना।।

मैया अपने हांत समारौ, नैया कोउ सहारौ।
कैसें लगत किनारें नैंया कोउ न खेवन हारौ।।
अब लौ पूरव पाप कटेना, दुःख दारिद दर डारौ।
तारौ चाय कभउं ना तारौ, कैदो 'दया हमारौ।।

--

ईश्वर जब जैसी औराई, करनी भई हमाई।
बिन मरजी पत्ता ना हिलवे दै रये ग्रंथ गवाई।।
का कसूर फिर जन मानस कौ, हमें कहौ समझाई।
'दयाराम' तुम सब करवा रये, जै-जै होय तुमाई।।

--

सरसुत अपना जान समारौ, कंठै डेरा डारौ।
हृदय कमल पै बैठी रओ माँ, ज्ञान जोत विस्तारौ।।
तोरौ मोय भरोसौ कोरौ, थोरों ज्ञान हमारौ।
साजौ बुरऔ कुटिल मूरख मैं जैसौ आंव तुमारौ।।
'दयाराम' खां अभय दान दै, छंद रसीले ढारौ।

बीना जब शारद का बाजा, मोही सकल समाजा।
पशु पंछी सुर नर मुनि मोहे, कड़ै मधुर सुर ताजा।।
देतीं बल बुद्धि विद्या शारद, चरन पूज लैं जा जा।
उनसें सब लै-लै जो चानें, उनकी ओली आ जा।।
'दयाराम' उनकी कृपा सें, रंक बनत हैं राजा।।

- मन सें -

मन तें सबरी छोड़ गरूरी जा-जा शरन जरूरी।
उनसें जो मांगे सो मिल जै, खावें हलुआ पूरी।।
लै-लै सम्पत-ज्ञान-गठरिया, मिल जै बिना मजूरी।।
'दयाराम' अपने दासन की, शारद करतीं पूरी।।

जो कोउ शरन तुमारी आवै, अपनी विनय सुनावै।
आरत करै मोद में आकें, धूप कपूर चड़ावै।।
करुन पुकार करै जो दिल सें, मांगे सो मिल जावै।
बरन बरन खां सुबरन कर दै, सुन्दर छंद लिखावै।।
'दयाराम' खां शारद माता, रसता सदा बतावै।।

सुमरत आंय दौर कें पल में, ब्रह्मा छोड़ महल में।
का वीदी है कौन भगत पै, राखें माता कल में।।
दुःख दालुद्दर रोकें भगते, बड़ी कला है बल में।
हंसा हांकत आय बेग सें, वीना दबा बगल में।।
'दयाराम' शारद खुश होवें, तनक फूल-फल-जल में।।

मैया तोखां जग जानें है, जानें उर मानें है।
सबरे देव पूजवें तोये, तोई कृपा चानें है।।
सुर नर मुनी ध्यावैं निस दिन, और ध्याउत रानें है।
'दयाराम' खां शरन राखियो चरन धूर चानें है।।

शारद बीना बजा भुमानी, सुर झंकारो रानी।
मोरे ई नीरस हिरदे में, रस भर दो वरदानी।।
सुनतन सबद जीव सब मोहें, बनै मोहनी बानी।
'दयाराम' तोरी लीला माँ, को कवि कहौ बखानी।।

छाया करियो मां वरदानी, खुशी रयें सब प्रानी।
कवियन खां बल बुद्धि देव तुम, हेरौ सेवक जानी।।
कवि दरवार पूजवै पैलां, ज्ञान रतन की खानी।
'दयाराम' पुरखन नें पूजो, जै शारद महारानी।।

ईश्वर

नैंना उनसें लेव लगाकें, अपनों शीस झुकाकें।
उन चरनन की करौ बंदगी, कन-कन रओ जो छाकें।।
रीझौ जाय अपुन ओई पै, तन-मन-धन सें आकें।
'दयाराम' शरनागत हो लो, दें सब काम बनाकें।।

शरनागत

अब तौ करों कृपा की कोरें, तुम सें परों निहोरें।
हा-हा करों पांव पर-पर कें, डरो तुमारे दोरें।।
मारों चाय पालियो स्वामी, तुमई एक हौ मोरें।
'दयाराम' नई चरन छोड़नें, हेर लियो मोइ ओरें।।

शारदा

शारद मोरी ओर निहारौ, सेबक आंव तुमारौ।
बीना मधुर बजाव भली सी, हांतन देव सहारौ।।
मैं मति मंद छंद का जानों, ज्ञान किरन उजियारौ।।
'दयाराम' कयें जग मंगल खां, छंद बना निस्तारौ।।

जब तुम मोसें छंद लिखातीं, सोउतन सोउ जगातीं।
लिख लै लिख लै उठा कलम तैं, प्रेम प्यार सें कातीं।।
ही में बैठी बन्न-बन्न की, भाव तुमई हुमसातीं।
मो में कछू ज्ञान है नैयां, अलंकार रस लातीं।।
कविता रस सपरे सब श्रोता, एंसी झड़ी लगातीं।
'दयाराम' की कलम बैठ कें, रस की धार बहातीं।।

मन से-

जौ मन बुरये गुनन वारौ है, भारी हत्यारौ है।
मानत नहीं कुगैलन चलवौ, कुटत रात सारौ है।।
सींक न लगत उतई फिर जावै, कैउबैर मारो है।
देब सुदार माई शारद तुम, तोरौ गववारौ है।।
'दयाराम' बिन कृपा तुमारी, भैंस अक्षर कारौ है।

-शारदा जी से-

सुमरौं माई शारदै तड़के, विनय करूं बड़ बड़कें।
मैया तुम सबकी रखवारी, हांत पकर लो कड़कें।
तुमरी कृपा करत कविताई, मैं सुनांव पड़ पड़कें।
'दयाराम' ने तोई दया सें चौकड़िया दई गड़कें।।

मैया प्या ज्ञान की औंटी, कैउ बेर की घोंटी।
विनती करौं चरन शिर धर कें, करौ नांय खां टोंटी।।
ज्ञान किरन हिरदे में भरदो, अंध कोंप लो खोंटी।
'दयाराम' कर कंज धरौ शिर मोई अकल है मोटी।।

करतीं रंकै राजा छिन में, ऐसी कला अपुन में।
मति कौमूढ़-गूढ़ ज्ञानी होय, आंगे खड़ो कविन में।।
जीपै दया करें मां शारद, बनै विशारद बन में।
मैं तौ सदा ध्याव मां तोखां, देखौ डरो शरन में।।
'दयाराम' तुम कला दिखाती, कवि के वरन-वरन में।।

-भक्ति-

शारद काज सारदे मोरे, विनय करूं कर जोरे।
कवि जन पैल मनायें तोयें, लिखवा कागद कोरे।।
सवरी गैल बतातीं तुमही, आंय द्वारें तोरे।
'दयाराम' कयें को कवि बरने, शारद मां जस तोरे।।

प्रथमें करौं शारदा बंदन, बना चित्त कौ चंदन।
दूजें गनपत स्वामी सुमरों, प्रथम पूज शिवनंदन।।
सदासहाय शारदे करतीं, बल बुद्धि दें आनंदन।
'दयाराम' है करिया लोहा, बनन चाउत है कंचन।।

गनेश-

पैलां गुरु गनपत खां गानें, चरनन शीस नवानें।
आरत करों मोद में आकें, मोदक पैल खिलानें।।
शारद छंद समारें रइयो, धूप कपूर चढ़ानें।
'दयाराम' के काज शारदे, श्री शारदे ध्यानें।।

बन्दों विघन विनाशक बांके, गजमुख सुत गिरजा के।
आरत करों चरन शिर नाऊँ, कर जोरू चितलाकें।।
धूप कपूर चड़ावों तोये, शिव सुत पैल मनाकें।
'दयाराम' की लाज गजानन, लिइयो आन बचाकें।।

फुटकर चौकड़ियां--

- बोली -

बोली बोल लेब हँस स्योने, संग कछू ना जानें।
बोली से गिरें हार में, बोल सें कड़े कृपानें।।
बोलई सें सिंहासन मिलवें, बोली सें ठुकरानें।
'दयाराम' मुसकाकें बोलौ, जोउ जगत में रानें।।

-होनी -

डेरा जितै गिरें होनी के, ताश नास हों तीके।
होनी जाय लंक मड़रानी, रावन मिटे कभी के।।
पांडव हरीचंद खाँ देखो, का भये हाल हरी के।।
'दयाराम' हौनी अनहौनी, संग ने देत किसी के।।

-सासरौ -

गोरी आज चलीं है सासुरे, छोड़ छाड़ सब नखरे।
जानें परो जबर जस्ती सें, ऐसी दाबी नस रे।।
दिल की लगीं बुजीना अब लौ, रते दिना दो दस रें।
'दयाराम' रानें मायके में, जौलौ कर लो जस रे।।

नेंकें रैलो ईससरारी, इतै न चलै तुमारी।
सास ननद, देवरन सें, बोलों मीठे बोल प्यारी।।
आड़, अदब, मरजाद, करौ सब जो जैसे परवारी।।
'दयाराम' जब जैव मायकें हुये बड़ाई तुमारी।।

फुटकर---

-मसालौ-

जीना होत मसालौ भारी, बौऊ रात सुखारी।
बातन में भर देव मसालौ, होवै कदर तुमारी।।
डारौ खूब मसालौ भरकें, ठीक बनें तरकारी।
'दयाराम' लयें रऔ, मसालौ, मारौ चोट करारी।।

-साँसी कैबौ-

जीको कै दो सांसी-सांसी, फिरै फसावै फांसी।
साँसो बात करेजें सालै, झूंठी देय न खांसी।।
सांसी बात जहर सी होवै, झूंठी होत सुधा सी।
'दयाराम' सांसी कै दई तौ, तुरत हिया में आंसी।।

-भौंरा-

भौंरा किते जात भन्नाकें, सन्न सन्न सन्नाकें।
उतै करील केतकी फूली, फैलां दई जताकें।।
धीरज धरौ दूसरां फूलें, कमल कली मुसकाकें।
'दयाराम' मन कौ रस पिइयों, तब तुम अगा डगा कें।।

-बेटी-

जिदना बिटिया भई पराई, भारी खुशी मनाई।
कर दये पीरे हांत सुताके, प्यारे बाप मताई।।
दोऊ कुलन की शान लाड़ली, हर दम होत सहाई।
कर तन विदा माई बाबुल की, नेह नदी बड़ आई।
'दयाराम' घर सूनों कर गई, रोंय बेंन उर भाई।।

अपनी पर घर बेटी जानें, पर घर की घर आनें।
लुवावौ और पठैवो जौ तौ, लगो अई आओ जमानें।।
विदा करत छाती सो फटवै, विदा ल्याउत हरषानें।
'दयाराम' दुनियां में किस्सा, कैवे खाँ रै जानें।।

जाओ सुता आज घर अपने, हमें दिखइयो सपनें।
विलख विलख समजावें बाबुल, मइया लगी किलपनें।।
आनंद करौ बनी रऔ रानी, अंखियां लगी बरसनें।
'दयाराम' नित रओ शान सें अपने घर सो अपने।।

बिटियां की के पेट समानीं जे तौ आंय बिरानी।
जे तौ आई अमानत होकें, पालीं पोषी स्यानी।।
रंदे भात पर घर के ईधन, बिटियां सबई बखानी।
'दयाराम' चिन्नामित लैकें, खुशी होंय दोउ प्रानी।।

बिटिया दोउ कुलन की शानी, कन्या कात भुमानी।
घरनी बनत दूसरे कुल की, सब गुन की है खानी।।
वंश बेल बाढ़त बिटिया सें, चलवै नाव निशानी।
घरभर की सब नाक समारत, सेवा करत दिखानी।।
'दयाराम' ममता की मूरत, नारी नर की शानी।।

- गुलाब -

गमलन खुदई गुलाब लगाये, पानी खाद मिलाये।
रखवारी दिन रैन करी फिर, लपटन सें बरकायें।।
हो गये बड़े फूल खिल आये, भारी सुक्ख मनाये।
लैन गये फूला जब खुश हो, काँटे खूब चुभाये।।
'दयाराम' खुद करकें देखो नेकी के फल पाये।।

-पानी-

जीकौ उत्तर जात है पानी, बनवै बुरी कहानी।
दो कौंड़ी की इज्जत रयै ना, सब ठुकरांय ज्ञानी।।
कूकर और सूअर से जीवन, भओ शरम शरमानी।
पानी बिना जगत सब सूनों, रयै ना नाम निशानी।।
'दयाराम' पानी राखें रऔ, बनी रयै सब शानी।।

-अनुभव-

ऐंगर कीकें बैठन जावें, की खां दोस बनावें।
जां देखौ तां कांटे फैले, कौन गली हो जावें।।
दूरई सें बरकौ कांटन सें, जे उड़कें आ जावैं।
दारू तास जुआ ना जानों, हींग से तोउ बसावें।।
'दयाराम' उन कैसे कैसें, कभउं न हम बन पावें।

-यारी-

यारी कबै किये सुख दयें हैं, जग में जो जो भये हैं।
यारी यार लोय से फूला, जीनें इनें चबयें हें।।
टूटे दांत वतीसउ गिन गिन, खून पसेसन बये हैं।
'दयाराम' यारी है नागिन, कैउ यार डस लये हैं।

-नैना-

नैना आंदन फांदन कड़कें, गये छैलन से लड़कें।
मीठी मार करें जें सालै, गये प्रेम रंग चड़कें।।
लरतन तौ लर जांय सहज में मुश्किल पर विछुड़कें।
'दयाराम' नैंना भये पंछी, जांय लड़न उड़-उड़ कें।।

- पाक से -

हिंद में पाक पताका तानें, इनखां फांसी चानें।
गोली दाग देव ऐसिन पै, जन्नत करौ रवानें।।
लिपड़ सिपड़ करते का होनें, इनखां धरौ ठिकानें।
'दयाराम' कर जांच देश सें, इनखां मार भगानें।।

-प्रेम-

होते हम जो हार तुमारे, लगते गरैं प्यारे।
कै हो जाते काजर कारौ, नैंनन जाते सारे।।
कै होते चंदन उर रोरी, लगते हांत तुमारे।
'दयाराम' सेबक लौ भये ना, ठांड़े रते द्वारे।।

-भक्ति-

अब जो मानुस हमें बनइयो, अपनों सखा बनइयो
जो पशुरचौ स्वयं करुना कर वंसीबजा चरइयो।।
पंछी रचौ आप दोरे हो, माखन रोटी खइयो।।
'दयाराम' पै दीनदयाला, दया करत नित रइयो।।

-भाई-

ना कोउ भइया भइया उर जौ, उरजे होव तौ सुरजौ।
सपनें बंधु विरोध करौ ना, गुनों प्रेम कौ गुर जौ।।
कितनंउ हान होय गम खालो, लाद न लै सुर पुर जौ।
'दयाराम' लो मना भाई खां, तौ कऔ तुम का घुर जौ।।

-घूंस-

फिर रई घूंस मौत सैलानी, सब कऊँ है मनमानी।
लेत देत दस्तूर बताकें, नैंग बनो लाशानी।।
ऐसौ राज भऔना अब लौ, दुखी दीन जिंदगानी।
'दयाराम' जा रिस पित रंडी, कितै न किये दिखानी।।

- ईश महिमा -

माया सब ईश्वर की बगरी, जानत है सब नगरी।
कोउ की नाव पार कोउ की, डूबी भई डगमग री।।
को जानत का उनखां कन्ने,,उनके न्यारे ढ़ंग री।
'दयाराम' बिल्ली के बच्चा, बचा पका दई गगरी।।

डाकू-

डांकू भौत दये हैं मरवा, पुलिस सें लरवा लरवा।
लूट लेत ते घर में घुसकें, मार-काट उर डरवा।।
गड़ौ पड़ौ धन अपने सामें, लैं खुदवा कें धरवा।
'दयाराम' वे दुष्ट बसत्ते, जां चम्बल के नरवा।।

बंदी-

धरती दई एक सी करवा, बंदियां डरवा -डरवा।
अधिक अन्न सो पजन लगो है, लै गये बोरा भरवा।।
सरकारी चल गये ट्रैक्टर, बखर दये हैं धरवा।
'दयाराम' बंदा बनवा दये, छैंकीं नदियां नरवा।।

भौंरा-

भंवरा अपुन स्वारथी भये हैं कलियन के रस लये हैं।
फिरकें खबर लई ना जिननें, छाती लगा, झुलये हैं।।
रस पी भये मस्त मस्ती में, बिना मोह तज गये हैं।
'दयाराम' वे फूल धन्य जो, रस दै मुरझा गये हैं।।

-कली-

बारी कली भली दीवानी, तोरी अमर कहानी।
केवला सें कारे हैं भौंरा, हिये नहीं सकुचारी।।
छाती लगा झुलादये झूला, रंग रस दयो लाशानी।
'दयाराम' जा नेह नतैती, ना कंऊ और दिखानी।।

-नशा-

का है लाभ नशा में भइया, चिलमन के चटकइया।
भांग अफीम, चरस उर गांजौ, दारू के पिववैया।।
छोड़ौ नशा नशा जौ नातर, मिटजै बनी मड़इया।
'दयाराम' ना अपने हांतन, पटकौ पांव कुलइया।।

-बीड़ी-

बीड़ी कैउ रोग की जर है, जीखां लेत पकर है।
खांसी उठत बिड़ी सें पीरौ, तन भओ निरस नकर है।।
लीवर गुर्दा दोउ बिगरवैं रात न कछू कसर है।
'दयाराम' बीड़ी बदमासन, सांसऊ असल जहर है।।

-करजा-

भइया करौ काय खां करजा, बिन आमद उर दरजा।
उतनेइ पांव पसारौ जितनी, खोर होय लभदरजा।।
सादा चलौ खरच डाटें रऔ, ईमें कछू न हरजा।
'दयाराम' देखा देखी में सबई बिगर गई परजा।।

-फैशन-

देखै जे फैशन बौरानी, कई न कोउ की मानी।
पींठ डरी उगराई सबरी, तनी कसें दिखलानी।।
बांय कंदन सै नैचें नइयां, उल्टौ पल्लू ठानी।
ओंठ रकतयाने दोउ इनके, का कयें जिनें पुसानी।।
'दयाराम' कयें बन्न-बन्न की, फेंशन सड़क दिखानी।।

-फैशन-

गर्दन है टिटार सी लामी, झिकत आ रहीं सामी।
गोड़न में चिपको पाजामा, ज्यों गिटार हो नामी।।
कोऊ पेंट शर्ट हैं पैरें, चप्पल ऊँची थामी।
दुश्मन भओ दुपट्टा इनकौ, आ रइ मनो सुनामी।।
'दयाराम' काका कयें फैशन, बनी मौत पैगामी।।

--

बेबी कट वे वार रखायें, पेंन्ट-शर्ट गस आयें।
जैसई भइया, वैसई बिन्नू, धोकों कई खा जायें।।
रूप रंग, सब लगत एक सौ, झिकत चले दोउ जायें।
'दयाराम' पछुआ बयार में , उड़ रये बिना उड़ायें ।।

-हिन्दी-

निस दिन हिन्दी तोय मनाऊँ, तेरे गीत नित गाऊँ।
है प्रिय हिये निवासिन हिन्दी, बिन्दी नहीं भुलाऊँ।।
गूंजै आज भारती जग में, तोरी अलख जगाऊँ।
'दयाराम' तन, मन, धन सें नित, हिन्दी तोय मनाऊँ।।

-अरूवा-

अरूवा बागन बागन सो रये, कोहल खां दुःख हो रये।
अबै बसंत आव है नइयां, इनके साके हो रये।।
कौआ सोनें चौचें मड़ायें, दूदधीव मों धौ रये।
'दयाराम' जे अजब जमानें, हंसा ककरन ढो रये।।

-वारामासी-

चैतै पर रये धाम चरेरे, वैशाखै ना हेरे।
जेठ तपे असड़ा सावन जल, भादौं नीर घनेरे।।
क्वांर और कार्तिक अगहन सें, बात पूस लौ हेरें।
भाव मिलें ना फागुन आ गये, 'दया' अजब रंग तेरे।।

-अटका-

नाती होत पिता सें प्यारे, गुनौ गुनत गुनवारे।
नारी भई मात सें पैदा, कुल चोखें हैं सारे।।
पिता भये सेबक सें जानों, कैदो अर्थ लगारे।।
'दयाराम' माफी दै हमखाँ, अटका दो सुरजारे।।

-तोता-

तोता धीरज काय न धरवैं, टांय-टांय क्यों करवैं।
जे फल पके अबे हैं नइयां, वृथां उड़ानें भरवैं।।
रोंठा लगे काय उड़-उड़कें हरियल रोज कतरवैं।
'दयाराम' फल पके मिलें जब, किरपा ईसुर करवै।।

-सत्य-

पैलां खेले ते आंगन में, फिर खेले आगन में।
रात हते जा तन में नैकें, लखे सोइ जातन में।।
लाज लगत कातन देखौ, रहो तत्त का तन में।
'दयाराम' बा तन में रये ना, अब का है बातन में।।

-प्रश्न-

को है जियत सांस बिन प्रानी, पियत न मों सैं पानी।
मों उर पांव कछू हैं नैयां, हांत आंख ना मानी।।
काया सुन्दर ऊ जीऊ की, जियत रात लाशानी।
'दयाराम' बौ को तन धारी, गाकें कहौ ज्ञानी।।

-गैया-

बिपता गऊ माता पै आई, करै न कोउ सुनाई।
हिन्दू मैया कात गऊ सें, सेवा मनैं न भाई।।
देते बेंच, कसइयन गैयां, लादें वेशरमाई।
ईकौ दूद होत इमरत सौ, वैद्यक देत गवाई।।
'दयाराम' कोउ फ्री लेत ना, कलजुग कला दिखाई।।

--

गइया हिन्दुन की है माता, जी खाँ वेद बताता।
दूद खात सब हैं गइया कौ, अमृत सौ बन जाता।।
गौ वंध बंद अबै लौ भओ ना, राज नीति से नाता।
'दयाराम' कानून बनै जब गौधन बचै बिधाता।।

-परिवार कल्याण-

घर मैं नहीं नाज खावे खां, टिके पूत जावें खां।
किदुअर भरी समाय न घर में, ठौर नहीं रावे खां।।
कपड़ा लत्ता पुजै पांय ना, बीमारी आवे खां।
'दयाराम' रओ नेम-नियम सें, सबरे सुख चावे खां।।

-बगला-

बगला मोती कभंऊँ चुनें हैं, अब लौ कोउ सुने हैं।
गदा धरें हातिन के होदा, गज ना कभउ बने हैं।।
हत सारन में गदा बंधे कब, जे कोरे सपने हैं।
राज मुकट रंकन के सिर पै, कैदो कबै तने है।।
'दयाराम' नीचन से बड्डे, काज न कभऊँ बने हैं।।

-समय-

सब दिन-रात सदा ना नौंने, कभऊँ परत है रोनें।
सोने की लंका भई चौपट, बन गये राम सलौनें।।
देखौ भाग सुदामा कैसें, हरी कृपा कब होनें।
'दयाराम' सब दिना काटियत बुरये होंय चाय नौनें।।

-रामकृपा-

जैसें राम रखें सो रानें, ओइ में खुशी मनानें।
हान-लाभ नौंनों अनहोंनों, बेई राम जी जानें।।
कभऊँ परें मखमल के गद्दन, कभऊँ टाट है चानें।
छानें कभऊँ रोज रसगुल्ला, भाजी कभी बनानें।।
'दयाराम' सब उनकी कृपा, हां में हां है कानें।।

-रामकृपा-

जीके राम होत रखवारे, को का करत बिगारे।
ध्रुब पैलाद विभीषन पंडा जिनपै करी दया रे।।
तीन लोक चौदा भुवनन में, वे सब काज समारे।
'दयाराम' उनखां ना भूलें, वे सब काज समारे।।

-आदत-

जीके जौन करम गुन आयें, छूटत नहीं छुड़ायें।
गुरबीला फूलन सें उड़कें, गोबर में रम जायें।।
भई ना करई निबौरी मीठी, घी शक्कर संग खायें।
'दयाराम' जो जनम जात गुन, वे ना जात दिखायें।।

-एकता-

जुग सें चलौ जमानें भइया, नातर मिटै मड़ैया।
फूटन सें लंका चौपट भई, हो गई हा-हा दइया।।
पंडा और कौरवा देखौ, भारत हो गओ भइया।
फूटी गोट जौन जुग में सें, फूटी तुरत खपैया।।
'दयाराम' एका में सब सुख, कै गये कथा कथैया।।

-बाल विवाह-

करनें बचपन में नईं शादी, हो जावै वरवादी।
पांछें कई अंदर होंय फिर, खूब मिलें परसादी।।
बालापन में व्याव रचा कें, पाप गठरिया बांदी।
'दयाराम' स्याने में करियो, शादी उर आजादी।।

-साईस-विज्ञान-

छोड़ौ छैल पुराने पांसे देखौ नये तमासे।
ज्ञान और विज्ञान फैल रओ, झूंठे हो रये सांसे।।
कांसे कितै मान्स जौ जा रओ, दये चंदा खां झांसे।
'दयाराम' ईसुर सौ बन रओ, मामूली बंदा से।।

-छुआ-छूत-

सूदे सांसें जे हैं जानों, सासी सांसी मानों।
मेंनत करें झूठ न बोलें, लें न मुफ्त को दानों।।
कभऊँ कुगैल चलें ना सपनें, चरित साफ पैचानों।
गंदे रात नहीं जे कबहूं, सज्जन सुधी बखानों।
'दयाराम' जे हैं अछूत क्यों, ईको कर दो छानो।।

- **कर्म** -

ज्ञानी करम जात खां मानें, मनुष विरोवर जानें।
सबमें ईश्वर अंश रमो हैं, सबमें तत्त समानें।।
मनुष-मनुष में भेद करें जो, उनें अकल कछु चानें।
'दयाराम' करमन से ऊँचे, करम सें नीच बखानें।।

--

इन्नें कभऊँ सताये नैयां, काऊ खों मन मइयाँ ।
ना कऊँ पांव कुगैल धरे हैं, ना सरकाई किवैयां।।
पाप करम कीने ना इननें, ना मारी हैं गइयां।।
'दयाराम' का छोल बतादो, इनकें चड़ी कदैयां।।

--

जो कोउ करम जात पैंचानें, गीता ज्ञानी मानें ।
पांच तत्त सें सब हैं पैदा, सब रंग एक बखानें।।
मनुष-मनुष में भेद डारबौ, सब स्वारथ के लानें।
'दयाराम' पंडित है बिरलौ, जे बातें पैचानें।।

--

माथें लम्मौ तिलक लगायें, बगला वेष बनायें।
पोथी दाबें ढोंग करत हैं, धोती हैं छुटकायें।।
खा-खा मांस मसीले हो गये, सब औगुन अपनायें।
'दयाराम' कइइक हैं ऐसे, औरे नीच बनायें।।

-पश्चिमी हवा-

पच्छिम सें पछुवा जब चाली, बैर करेजें साली।
पीरे पात परे उर गिर गये, देखत रै गओ माली।।
बड़ी तेज बेरिन जा पछुवा, बड़ी निठुर दिलवाली।
'दयाराम' जा पछुवा हर रई, पूरब की सब लाली।।

-मानव तन-

मानुष तन मिल पाय मसाकें, वेद शाल सब भांकें।
सतसंगत, उपकार करौ सब, ईनर तन खां पाकें।।
राम रहीम बंदगी कर-कर, चलियत शीस नवाकें।
'दयाराम' कुछ नाव कमालो, संसारी में आकें।।

--

जौ तन बिरथां ना खो देना, जस तुम कुछ कर लेना।
गांव समाज देश पै लगवै, तौ तुम हंस दे देना।।
एसौ मौका मिलें भाग सें, इयै चुका ना देना।
'दयाराम' निज हिंद देश के, सजग संतरी रैना।।

-दारू-

कइ इक हो गये लूले कानें, पी-पी नहीं अगानें।
टूटे हांत पांव सिर फूटौ, नाक कटी ना मानें।।
कइ एकन की कुली उतर गई, टिरकत जात ठिकानें।
'दयाराम' जो दारू खोरा, आखिर तक ना मानें।।

--

दारू सब अपराध करावे, पियै जियै मन भावै।
गारी गुल्ला डंडा चक्कू, गोली लौ चल जावै।।
ठेला और मुटरिया लारी, फट फटिया लर जावै।
'दयाराम' जा नारी नर खां, निश्चर तुरत बनावैं।

-दारू-

दारू बिना पियें जे रैना, जा आदत विसरैना।
बाप और लरकन की कसमें, खालें और रूकैना।
सामी गंगा रोज पैरवैं, इनपै फरक परैना।
'दयाराम' दारू खोरन की, फोटू लौ देखैंना।।

--

दारू पीकें कार चलावें, ठेला जीप भगावें।
फटफटिया तौ किते लगत है, लारी पै जम जावें।।
आमें-सामें टक्कर देकें, कई मारें मर जावें।
'दयाराम' पीवे वारन सें, बेई राम बरकावें।।

--

मटका भटियन चढ़े हैं बांकें, चाव देख लो जाके।
मउआ सरा उतर रओ ठर्रा, बोतल लेव भराके।।
झूमत आव बात मन मन की, कैलो खूब जमाके।
बसे पड़कुला कई इक जांगन, होरये नये-नये साके।।
'दयाराम' 'बेचैन' भये सो, गये पास ठेका के।।

-कवि स्व.श्री वंशीधर रतमेले के प्रति-

देखों वंशीधर रतमेले, मधूपुरी रत में ले।
काव्य कुंज में करें किलोले, कंचन कीरत मेंले।।
तनकउ रत मैंले हैं नइयां, रत पतियन रतमेले।
'दयाराम' रत में ले ले रस, रतमले रत मेले।।

-सूदौपन पति से-

निठुअंई सूदे बन ना रइयो, कंत अंत जब जइयो।
अपनों-अपनों जीखां मानों, सपनों जान भुलइयो।।
कोउ-काउ कौ सांसउं नैयां, बात विसर ना जइयो।
'दयाराम' भोरे बन सैंयां, धोकों ना खा जइयो।।

-आतंक वाद-

कैसौ आतंक फिरत मचायें, रोज नांय उर मांयें।
शरम न खात कुकर्मी कुड़िया, गोला बम्म चलायें।।
निरदोषन खां भूंजत पापी, काश्मीर खां चायें।
'दयाराम' सबरे जुर मिल लो, फिर जे का भग पायें।।

-बोर्डिग-

अपने लै लै आये कटोरा, सब बोर्डिंग के छौरा।
फट्टी बिछा बैठ गये संगे, परसैं पंडा घोरा।।
चिपर-चिपर खा रये प्रेम सें, रोटी सांझ सवेरा।
'दयाराम' खा पीके सबरे, सो गये ओढ़ पिछौरा।।

प्रेमश्रृंगार

-प्रेम-

हमखाँ और कछू ना चानें, बात तनक है कानें।
नजरन सों ओलट ना हुइयो, देखत मन हरषाने।।
एकई बेर हेरियो हमपै, एइ में हम सुख मानें।
हमखाँ रोज दरस दें जइयो, नैंन दोउ ललचानें।।
'दयाराम' तुमरे दरसन, मैं सुक्ख सरग कौ मानें।।

-हेरन-

तोरी नजर करेजौ फारै, अरिया कैसी ढारै।
सूदी जाय ठटी हिरदे में, बाहर प्रान निकारै।।
पंछी-प्रान करे हैं घायल, तनक न दया विचारै।
'दयाराम' ना चितव दयाकर, विरथा जी खां जारै।।

-नेत्र-

तोरे नैन देख ललचानें, दोउ नैना ना मानें।
इकटक रै गये नैंन चितै कें, खंजन कितै बिलानें।।
हो गये नैंन चत्योर हमारे, भौंरन की का कानें।
'दयाराम' जे नैंना तोरे, भये औरन के लानें।।

-प्रेमिका कथन-

छैला कबतक के तरसैहो, अपनों कबै बनैहो।
का वरषा जब खेती सूके, फिर पांछूं पछतैहौ।।
खिली कलिन रस लैन न आये, का पाछूं मड़रैहौ।
'दयाराम' वैंयन के झूलन, कै दो कवैं झुलैंहौ।।

--

तुमखां देंय जुबनवां प्यारे, तुम मन बसे हमारे।
तुमखां गाल तुमई खां चूमा, तुमें रंग रस सारे।।
जौ तन आय तुमारी बगिया, तुम पै तन मनवारे।
'दयाराम' खुलकें जस कर लो, हम तौ भयें तुमारे।।

कृष्ण भक्ति रस

-फाग-

मोहन भर पिचकारी मारी, दई बगल ब्रजनारी।
छतियन छुअत गई बाला की, चोली भींजीं सारी।।
चिपक गई चोली रंग रसकें, कसकें फिर भरमारी।
'दयाराम' पाछें सें मोहन, गाल गुलाल बिड़ारी।।

-गुदनारी-

मो संग आये घरै गिरधारी, बन करकें गुदनारी।
मैं बौरी पैंचान न पाई, हँस-हँस बांय उगारी।।
तोता लिखे चिरैयां लिख गये, गोद गये फुलवारी।
'दयाराम' छर छंदी छलिया, कला करत नित न्यारी।।

-फाग-

खेलें गिरधारी संग होरी, संग राधका गोरी।
सारी हरी रंगी कैउ रंग में, बेंदा भाल लगोरी।।
सुबरन बरन बनों राधा कौ, स्याम संग रंग होरी।
'दयाराम' राधा मन मोहन, इंद्र धनुष सी जोरी।।

-मनहारी-

दै रये ब्रज गलियन में टेरें, लौट लौट कें हेरें।
जौन घरै मन–भावन बैठी, उतईं टेर रये गैरें।।
बूंदा लेव छला उर छापें, लै लो छांट नबेरें।
'दयाराम' मनहारी मोहन मिल जाते मन फेरें।।

--

सुन–सुन आईं स्याम की टेरन, आईं पैरवे ऐरन।
मिसिया कैउ मांग रईं हँस–हँस, कैऊ लगीं नवेरन।।
कोउ–कोउ आई देखवे सुनवें, कोउ हँसन उर हेरन।
'दयाराम' मन हारी मोहन हँस बें बंक तरेरन।।

-ग्वालिन-

ग्वालिन काय अकेली डगरी, बड़े गुनन की अगरी।
गो रस दओन भरें मटकिया, सब ग्वालों से झगरी।
ठुमका चाल भौत से नखरे, धरत मटक कें पगरी।
'दयाराम' जो देव न गोरस, ग्वाल फोर दें गगरी।।

-बिना मात्रा की सिं.वि.अधर -

दध सर धरधर चलत डगर डर, अधर धरत डग डर डर।
डर डर चलत लखत हरकत सच, लचक चलत जस कर कर।
कर कर हनत नजर सर धरधर, करत नकल रस झरझर।
झरझर झरत अधर रस अस हर, चड़त लखत हर तरतर।।

--

मन में मन मोहन जू बस गये, दिल दामोदर धस गये।
नैनन नंदलाल नटखटिया, कान कनैया कस गये।।
गरे गसे गिरधर गोपाला, गोविंद गालन गस गये।
ओठन ओम नाक पै नटवर, वंशी वारे बस गये।।
'दयाराम' के रोम रोम में , राधावर जू रच गये।।

-ऊधौ-गोपी संवाद (भ्रमर गीत)-

बौ तौ है घट-घट को वासी, खोजौ बात जरा सी।
धरौ ध्यान माया तज ग्वालिन, मिल जावै सुख रासी।।
मन इक करौ मिलै तन अंदर, जुगत बतावें सांसी।
'दयाराम' अब उनखां भूलौ, भजौ ब्रह्म अविनाशी ।।

-गोपी कथन-

तुम हौ काय स्याम के संगी, स्याम रंग के रंगी।
अपुन बनें हौ हार गरे के, बात कात बे ढंगी।।
दोउ जनन कौ एक रूप रंग, दोउ की चाल पतंगी।
'दयाराम' हम एक न मानें, हम रंगी के संगी।।

--

काये राख लगायें तन पै, अपने भले बदन पै।
काये सांस चड़ायें छोड़ें का कसूर केसन पै।।
काये ध्यान धरें निरगुन कौ, काय न तपें किशन पै।
'दयाराम' का लाभ बतादो, है तुमाये बचनन पै।।

--

अपनों निरगुन खुदई समारौ, निरगुन स्याम हमारौ।
मन की मौज हमारी ऊधौ, का नुकसान तुमारौ।।
कारौ भंवर पियो रस मन कौ, लौट न फिर पगधारौ।
'दयाराम' निरगुन उर सरगुन, बोउ है कृष्ण हमारौ।।

--

ऊधौ का है तुमरौ हरजा, जोरत फिर रये उरजा।
निरगुन गांठ कठिन है भारी, कोउ न पावै सुरजा।।
हम माधौ के माधौ हमरे, उनके पुरजा-पुरजा।
'दयाराम' बिरथां में लै रये, बृज बालन से खुरजा।।

--

काये जटा जूट हम बांधें, काय लगांय समाधें।
एसी कौन अटक गई ऊधौ, झोली टांगें कांधें।।
राख लगांय उठायें मौ खां, काय सांस हम साधें।
'दयाराम' के रसिया मोहन, बेई हरें व्याधै।।

--

ऊधौ सूदौ ज्ञान हमारौ, बिरथां पड़ौ पठारौ ।
ऊपै रंग चड़े ना कौनऊं, जीपै रंग है कारौ।।
एकउ नहीं समज में आवै, जो तुम ज्ञान पसारौ।
'दयाराम' मोहन के हम है, मोहन आय हमारौ।।

--

ऊघौ ठेका लये निरगुन कौ, नाव लेत ना उनकौ।
मोर मुकट वंशी वनमाला, पीताम्वर तन जिनकौ।।
देखत सुरनर मुनि सब मोहें, कृष्ण नाव है तिनकौ।
'दयाराम' जब जब हम जनमें, जौ तन रयै मोहन कौ।।

-ऊधौ-कथन-

निरगुन है रस भरी खजौनों, अपनो भीतर छानों ।
एई में वौ सब आनंद मिलनें, जीखां जग बौरानों।।
घर बैठे एइ तन के भीतर, यार बसो दीवानों।
'दयाराम' ऊधौ समजा रये, बालन नहीं पुसानों।।

-गोपी-

जो तुम हौ निरगुन के ध्यानी, काय मित्रता ठानी।
निरगुन की खुद पकरें राते, अपनी लेंन पुरानी।।
अपुन बनें हौ हार गरे के, हमें न बात पुसानी।
'दयाराम' ऐसी हुश्यारी, ना कऊं और दिखानी।।

--

हम तौ भये स्याम के लानें, जनम जनम लौ रानें।
कां कौ निरगुनमसकें फिर रये, एकउ नहीं पुसानें।।
दाख छुआरे छोड़ कोउये, करई निबौरी खानें।
'दयाराम' कये मन अपने की, मानत रये उर मानें।।

--

ऊधौ निरगुन निरस दिखानों, मन ना ई में मानों।
बातई सें सब समज लियत है, हंडी शीत ठटानों।।
मोहन हमें मधुर मिसरी सौ, सा परतीत दिखानों।
'दयाराम' ना कऔ निरगुन तुम, ऊधौ सांसी मानों।।

-ऊधौ-

धर लो ध्यान मूंद कै नैना, त्रिकुटी में चित देना।
दोऊ मोंय जितै मिलती हैं, सब आनँन्द उत है ना।।
तकतक टोंन नाक की देखौ, जोग क्रिया कर लेना।
'दयाराम' वौ आनंद मिलवै, जो कछु कात बनेंना।।

--

ऊको तन नैयां जग जानों, मानों चाय न मानों।
नाक, कान, नैना मुख वैयां, सब जग बीच समानों।।
जैसे खूशबू बसत फूल में, ऐसई रमों स्यानों।
ध्यान धरौ तौ मिलै अमित सुख, जीकौ नहीं ठिकानों।।
'दयाराम' बिरथां पगलानी, लो आनंद मनमानों।।

-गोपी-

जीकें नाक कान नानैना हांत पांव मुख हैना।
ऊकी बात कात हों ऊधौ, देखें कितऊँ दिखैना।।
रास रचाय नचै जो छम-छम, बौ हमखां बिसरैना।
'दयाराम' बेचैन ओई खां नजर सैं जौन टरैना।।

--

ऊधौ एकई जतन बतादो, स्याम सें हमें मिला दो।
तुम तौ उनके परम मित्र हो, जैसें मिलें सला दो।।
और कछू ना कहौ हमन सैं, निज दिल हमें दिला दो।
'दयाराम' रस कृष्ण मिलन कौ, लयें हौ हमें पिलादो।।

-ऊधौ-

माला पठई भजन करवे खां, निराकार जपवें खां।
जा भभूत दई तन पै लेपौ, चंदन सब तजवे खां।।
पाती दई बांच लो खुद तुम, कैरये समजावे खां।
राग छोड़ बैराग्य धार लो, भरम जार कटवे खां।।
'दयाराम' जा कई स्याम जी, भव सागर तरवे खां।।

-गोपी-

काये सठकावें हम माला, मित्र हैं जब नंदलाला।
चंदन लेप चड़ओ जिन अंगन, का भभूत मृगछाला।।
पाती साती करै काम कां, तुमई बांच लो लाला।
कैसेंउ कृष्ण छोड़नें नैयां, हो चाय देश निकाला।
'दयाराम' तुम बिरथां भूले, मानें ना बृजवाला।।

--

हम खुद मथुरा नगरी जावें, इतै न जो वे आवें।
तुमनें कई द्वारका भग गये, फिरकें वे तौ आवें।।
कै गये ते दस रोज में आवें, हमसें झूंठ न कावें।
हम खुद चले द्वारका जावें, लिवा उनें फिर लावें।
'दयाराम' ऊधौ हम उनके, जनम -जनम लौ रावें।।

-ऊधौ-

जीखां बिरजी तुम बृजवाला वौ है तन में आला।
जो आनंद स्याम दरसन में, मिलै बोउ सो हाला।।
बोई मजा ध्यान में आवै, कुआ पठई नंदलाला।
'दयाराम' अब वे नईं आ रये, वृथां होव बेहाला।।

-गोपी-

तुमरौ झूंठो है सब कैबो, सींके धौको देवौ।
निरगुन मोर पंख नई बांदत, का जानें दध खैवौ।।
पीताम्बर पैरत ओड़तका, सुनो न रास रचैवौ।
का वंशी बजाउत वौ निरगुन, सीको गाय चरैबो।।
'दयाराम' ऐसौ निरगुन तौ, मानें तुमरौ कैवौ।

-ऊधौ-

निरगुन रस कौ भरौ खजानों, मानों चाय न मानों।
मोहन सें दस गुनौ रसीलो, तुम का करकें जानों।।
एइ में बौ आनंद मिलत है, जीखां जग बौरानों।
जोगी जपी तपी सुर मुनि सब जपत रैन दिन जानौं।।
'दयाराम' ऊधौ कौ, निरगुन, बालन नहीं पुसानों।

-गोपी-

ऊधौ जो तुम खेले होते, संग हमारे कोते ।
तौ निरगुन मनि सगुन डोर में, सट्ट सट्ट ना पोते।।
कै ऊधौ जी जो तुम तन कई, सरस हिये के होते ।
'दयाराम' तौ सांसउ उनखां, रोज मूड़ धर रोते।।

-अधर गोपियों की दशा-

कोउ-कोउ सोसउं राख लगायें, ऊधौ के सिक लायें।
धूनी लगा तारियां दै रईं, जटा जूट छिटकायें।।
रसिया की आशा सें सखियां, जोगन सकल दिखायें।
ऊधर अनोखे छंद 'दयाहरि' जोग-जोग सें चायें।।

--

ऊधौ ना हम एक मनौआ, सांसी सबई कबौआ।
अपुन बने हौ हार गरे के, हमें बता रये हौआ।।
अपुन स्याम के संगै खेंले, डंडा मार सलौआ।
'दयाराम' क्यों हमें सिका रये, देखौ आंख मिचौआ।।

-ऊधौ-

जो तुम हौ मोहन की दासी, उनकी मानों सांसी।
उन्नें कई ध्यान धर ध्याओ, छूट जाय चौरासी।।
नैना मूंद ध्यान त्रिकुटी दै, सादौसांस जरासी।
'दयाराम' खां हांसी आवें, जल में मीन प्यासी।।

-गोपी-

देखौ ऊधौ जी आये हैं, नंद घरै छाये हैं।
पतौ परो चित चोर स्याम नें, उनखा पोंचायें हैं।।
एक हांत में माला पकरें चिठिया चिपकायें हैं।
'दयाराम' जोगिन बनवावे वे भभूत लियाये हैं।

--

आली जियरा घबरायें हैं, कोउ न सम जायें हैं।
हैं बेचैन रैन दिन जिनखां, वे मथुरा छाये हैं।।
देखौ आज सखा मोहन के, नंद घरै आये हैं।
'दयाराम' सब देखन दौरीं कछू खबर लाये हैं।।

--

आली कृष्ण सखा आयें हैं, गोपिन समजाये हैं।
मूंदो नैन भभूत लगा तन, निरगुन गुन गाये हैं।।
चित्त चोर निज चित में कै रये, सांसें सदवाये हैं।
'दयाराम' ऊधौ जी आली, माला सोउ लाये हैं।।

--

ऊधौ ज्ञान हमारौ सूदौ, काय खां आंखें मूंदौ।
निरगुन धार अगम जा कइये, ई में अपुनाई कूंदौ।।
वंशीधर सें अलग न हुइयें, चायें लातन खूंदौ।
'दयाराम' माधौ सें कइयो, बिरथां कागद गूंदौ।।

--

ऊधौ सुन लौ सांसी सांसी, हमरी बात टका सी।
निरगुन कौ हमखां का करनें, हम सब कृष्ण उपासी।।
जनन जनम लौ हम तौ हुइयें, उन चरनन की दासी।
'दयाराम' दरसन दें ना दें, हम उनकी विश्वासी।।

--

हमखां और काम ना दूजा, मन हो गओ खरबूजा।
सब बदली सो हमई बदल गये, बात भई चालू जा।।
हम उनके बे हमरे ऊधौ, कृष्ण कथा दारू जा।
'दयाराम' जागत सोउत में, करत उनई की पूजा।।

--

वे तौ भये कुबजा के वश में, हुशयारी नस-नस में।
कै गये सौ सौ बेर आंय हम, सुनौ दिना दो दस में।।
तोरी सों मोरी सों खा गये, सामी गंगा कसमें।
ब्रज 'बेचैन' भओ मछरी सौ, पठा रये अब भसमें।।
'दयाराम' मोहन विषघोरो, प्रेम प्रीति के रस में।।

--

निरगुन निरगुन कहौ पुकारी, कौन पिता मातारी।
कैसौ रूप कहौ है ऊको, सबई कहौ विस्तारी।।
पीताम्वर पैरत कै नैयां, सुन लो बात हमारी।
'दयाराम' बेई स्याम हमारे, हम उनपै मन हारी।।

--

वंशी वंशीधर की बाजी, सब सुनवे खां भाजी।
भईं बेचैन तान सुन ग्वालिन, सब कम गई नाराजी।।
कान की झुमकी नाक पैर लई, नथुनी कान पै साजी।
जल्दी भगी महावर माथें, लगा खुशी भई ताजी।।
'दयाराम' कयें बंशीकौसुर सुर, सुध बुध खो गओ हांजी।।

--

मुरली शब्द सुनत बौरानी, गोपीं भगत दिखानी।
बेलन लयें हांत में कोऊ, कोऊ झाडू लयें स्यानी।।
दूध प्याउत लयें छोरा कोउ, जा रई कई न मानी।
जो जैसी थीं ऊसई भागी, लोक लॉज को जानी।।
'दयाराम' पूरब पुन्नन बिन, को पावै सुख शानी।।

कृष्ण विरह

-गोपियों की दशा-

निस दिन मन मोहन खां ढूकें, स्याम सोस में सूकें।
स्याम विना गज गामिन भामिन, उड़न लगीं अब फूकें।।
कइइक आंय बांय बर्राकें, लिपड़ जांय ई ऊकें।
'दयाराम' मति भूली कई की, सोंचें कछू - कछू कें।।

--

निसदिन मन मोहन खां ढूंकें, स्याम सोस में सूकें।
स्याम बिना सिर से लटवेंनी, नागिन सी अब चूकें।।
कइइक डरीं तमारे खा-खा, कइ इक दैं रईं कूकें।
-दयाराम' तन शिथिल डरो है, मन मन-मोहन जूकें।।

--

छोड़ों गैंयन चारौ चरबो, कृष्ण विरहभओ मरवौ।
बछुवा बछियां दूद पियत ना, नैनन असुवा ढरवौ।
जमना नीर करत ना ऐरौ, बंद भओ है बहवौं।
कोहल सुआ भयानक बोलत, भूली बाल सपरवौ।
'दयाराम' रस पियत न भौरे, तजो उड़ानें भरवौ।

-सिं० वि०-

ऐसी बिरह वेदना डारी होश में रई ना नारी।
नारी पकरें वैद्य डटो है,ना कौनउं बीमारी।।
मारी मती गई गोपी की, जोग रोग भओ भारी।
भारी ठट्‌ट देखवे लगरओ, 'दया' न स्याम विचारी।।

--

कइइक टुकुर मुकर तौ हेरें, ऊतर देंय न टेरें।
मौ सें कछू कर्ती हैं नइयां, भई चत्योर सबेरे।।
सुनतीं कछू कैऊ हैं, नईयां, विरह विथां रई पेरें।
घर भर घबरा गओ गोपी लख, पर गई कौनऊं फेरें।।
'दयाराम' बेचैन ग्वालिन, बिरह बान दओ गैरें।।

--

सुनतन खबर तमारे आये, स्याम न दरश दिखाये।
फिर-फिर उठत गिरत हैं फिर-फिर, विरह पछार लगायें।
साजौ रतो प्रीत ना करते, प्रीत करें पछतायें।
'दयाराम' चित लै गये पैलां, करिये कौन उपाये।।

-गोपी-

तुम हौ काय स्याम के मेरी, बात भौत है गैरी।
हमसें कात उनें सब भूलौ, देखो हाल नये री।।
जा दुफेंट ना हमें पुसानी, निरगुन रते गहेंरी।
'दयाराम' खुद जांय न ससरे, औरै पाँचा रयेरी।।

-ज्ञान-

गोपी आतम रूप बिचारी, भई ब्रज की सब नारी।
राधा शक्ति ब्रह्म योगेश्वर, ग्रन्थन बीच उचारी।।
राधा बिना ब्रह्म है आधा, भजौ दोइ दै तारी।
'दयाराम' इनकी लीला सब, नेति नेति है प्यारी।।

-वर्तमान-

अब दईकृष्ण इतै है नैयां, दूध देंय कम गईया।
चरवे बची चरौखर नैयां, बेंचन लगे बजरियां।।
लेत न कोउ फ्री में अब तौ, कैसे भये गुसैंयां।
गौ माता की सुनत कोउ ना, देत कसैयनें खैयां।।
'दयाराम' कैसों भओ भारत, कात बनत कुछ नैयां।।

-हास्य-

अब तुम स्याम इतै ना आना, परै डालडा खाना।
छेड़ों कौनऊं गोपी जो तौ, सौ नम्बर पैचाना।।
चरवे जगा बचीं कां देखौ, चाहौ अगर चराना।
वंशी पीतम्बर सब छुड़ जै, भूलौं रास रचाना।।
'दयाराम' हैं कंस हजारन, करैं करम मन माना।।

फुटकर चौकड़ियां

-स्त्री-

तिरिया मिलत भाग से प्यारे, जो कोउ आव लिखारे ।
कोउयै मिलत सती पत विरता, सबरे काज सुधारे ।।
कोउयै मिलत दुष्ट उर कुलटा, विभचारिन दिलफारे ।
'दयाराम' तिरिया सुखदुख की, संगिन लेव निभारे ।।

-भाग्य-

बिगरे करम कौन जुग मैयां, ई जुग में सुख नैयां ।
भोगी भौत भुगतना जीमें, हो गाये कैथा वैयां ।।
का ना बनी बिगर गई हम पै, डेरे भये गुसैयां ।
'दयाराम' कयें समय परे पै, कोउ काउकौ नैयां ।।

-न्यारे होना-

हो गये अड़ी अड़ी, घर सारे, भइया भये न्यारे ।
सावन मास बांद के राखी, डांड़े पौर दुआरे ।।
हींसा बाट करो है जुरमिल, सबने बैठ विचारे ।
'दयाराम' न्यारे भयें दिल के टूंका भये हजारे ।।

-धोखे बाज-

झूंठा बेइमान उर ठगिया, सांतर पक्के रंगिया ।
दो नम्बर कौ काम करें नित, बन रये हैं बैरगिया ।।
कूर कुटिल कपटी कुविचारी, जानो पक्के करिया ।
'दयाराम' कल में पाखंडी, करम करत सब घटिया ।।

- दगा बाज -

अब ना रओ विश्वास जमाने, दगाबाज उब राने ।
दो पइसा पै झूंठी बोलत, देखे भौत दिखाने ।।
काटे काटे कौल क्रियां कर, बदलत झेल न स्याने ।
सामी गंगा पैर शनीचर, झूंठा नहीं अगाने ।
'दयाराम' विश्वास रोम कौ, अब ना रओ जमाने ।।

-स्वार्थ-

हमने सब दुनियां मजयाई, मिलो मित्र ना भाई ।
दै विश्वास घोर विष देवें, सामी छुरी चलाई ।।
स्वारथ के सब मीत मिले हैं, सांसी सबै सुनाई ।
'दयाराम' ना कोउ काउकौ, जपौ राम रघुराई ।।

--

अब तौ धरम करम रओ नइयां, बिगरे लोग लुगइयां ।
सात भांवर को छोड़ चली गई, प्रेमी छोड़ो नइयां ।।
तीन तीन गववारे छोड़े, भग गईं खोल किबइयां ।
बेन भनेजन कोउ न चीने, कम ना बिगरे सैयां ।।
'दयाराम' खुद आंखन देखौ, है हिसाब कुछ नइयां ।।

-चरित्र-

भारी -पशू आज उबराने, भये राक्षस जाने ।
कन्यन संग विभचारन कर रये, काटत कैउ सुनाने ।।
हत्या लूट हरामन कौ भर, पेपर रोज पड़ाने ।
'दयाराम' गुण्डा उबराने, इनखां गोली चाने ।।

-बेटी-

बिटिया लरका से कम नैयां, काय खां रो रये सैंया ।
आफत विपत द्वारे ठांड़ी, जानत को है नइयां ।
भेद न कुछ बिटिया लरका में, लिखो है वेदन मैयां
'दयाराम' सब इने पड़ाओ, चेतौ अबई गमइयां ।।

-नेकी का फल-

नेकी जीके संगै कीनी, वदी वायनें लीनी ।
अपने हांतन हमने अपने, पांव कुलैया दीनी ।।
को ऐसान तुमारौ मानत, सख्त दुश्मनी कीनी ।
'दयाराम' का कयें कोउ सें, करम लिखी सो लीनी ।।

-आदमी-

मानुष खुद नेचे खां गिररओ, मरवे खां लौ फिर रओ ।
खुदई रमा कें जात ब्याड़ै, खुदई कुआं में गिर रऔ।।
जो देखौ सोई ई ऊखां, तुरप लगावें फिर रओ ।
औरन खां गड्डा खोदै फिर, खुदई कुआं में गिर रओ।।
'दयाराम' सोउ सबई ओर सें, मान्स दुखन सें घिर रओ।।

--

गुटका और तमाखू चर रओ, गाल भुसा सौ भर रओ।
गुर्दा फैल भये कै लीवर, सो खटिया पैधर रओ।।
चावें चिपक गई सो देखौ, अपरेशन खां फिर रओ।
मानत नहीं करेंजै अपने जहर ठूंस के भर रओ।।
'दयाराम' जौ मान्स आज सो, बिना मौत कौ मर रओ।।

--

सिगरेट पियै जियै मन भावै, जहर करेजें जावै।
उम्मर इक सिगरिट से नर की, सात मिनट कम जावै।
घुवां पिये से घुनत फेफड़ा, केंसर भये घबरावै।
मद्दी नजर बिगरवै लीवर, गुरदा सो नश जावै।
'दयाराम' जो अमल करत सो, हियो कमल मुरझावै।।

--

खा रये कैउ भांग के गोला, बोल रये बम भोला।
चिलम चड़ा रये गांजौ धरकें, बिगरत तन अनमोला।।
सादू संतन की कानै, सदा मस्त रये चोला।
नशा गिरस्तीदार करै जो, रस में विष सो घोला
'दयाराम' जो समरों ना तौ जल्दी सजत खटोला।।

-बाबा साहब अम्बेडकर-

बाबा भीमराव भये बांके, दओ विधान बनाके।
भारत रत्न गुनन के आगर, गये जग नाव कमाके।।
पड़े विधान देश देशन के, अच्छे नियम है टांके।
संविधान गुलदस्ता रचदओ, समता पै रये छाके।।
'दयाराम' दलितन के ईसुर भीमराव भये आके।।

--

बीतीं सुनों हजारन बरसें, पड़वे खां जे तरसें।
पानी पियत तला नदियन के, हांत कुंअन ना परसें।।
पशुअन सें भी बुरई जिंदगी, जी लई कौनउं करसें।
छूआछूत उर ऊंच नीच की, हरी बेल भई जर सें।।
'दयाराम' कयें इनें उठाओ, बाबा साहब कर सें।।

--

विध नें एकई रूप बनाओ, पांच तत्त तन पाओ।
करम ऊँच उर नीचों करवें, वेद पुरानन गाओ।।
सबमें एक अलख की जोती, मूरख समझ न पाओ।
सब जग एकई कुटुम मान्स कौ, दिल सें दिलै मिलाओ।
'दयाराम' कयें जई सें बाबा, बुद्ध धरम अपनाओ।।

--

जब-जब दीन दलित दुख पावें, मन की ना कै पावें।
अत्याचार अधर्मराज हो, तब हरि शक्ति पठावें।।
दीनन के दुःख दूर करें वे, सज्जन सदा रखावें।
खल दल दलन हरन दुःख जन के, जनम लेंय प्रभुआवें।
'दयाराम' बाबा उर गांधी, एसई हमें दिखावें।।

-जनम जात गुन-

जीकें जौन करम गुन आयें, छूटत नहीं छुड़ायें।
गुरवीला फूलन खां तजकें, गोबर में रम जायें।।
भई ना करई निबौरी मीठी, घी-शक्कर संग खायें।
'दयाराम' जो जनम जात गुन, वे ना जात दिखायें।।

-मच्छर खटमल (अन्योक्ति)-

बगदर खटमल खून पियत हैं, होकें लाल जियत हैं।
दया न करत दुष्ट दीनन पै, इनकी खोट नियत हैं।।
मस्त रात इत उत घूमत रयें, बड़िडन नहीं छियत हैं।
'दयाराम' लोहू के पीतन, तनक न जे लजियत हैं।।

-राखी-

भइयन लगा लगा कें चंदन, रोरी तिलक अनंदन।
देयं नारियल ख्वांय मिठाई, बैंन बिना छल छंदन।।
भइया खबर लियो सुख दुःख में, सदा काटियो फंदन।
'दयाराम' वीरन खां बांदें, बैंना रक्षा बंधन।।

-डांकू-

डांकू होत भौत हत्यारे, दुष्ट राक्षस सारे।
जां तां सुनापरत इनके अत, बैंकन डांके डारे।।
कई एकन खां मार देयं जे, धन लै जांय करारे।
कुत्तन की मौतें जे मरतई, किलपत लरका वारे।।
'दयाराम' इनके सब देखें, होत इतईं निनवारे।

-स्यावरी के खरारेश्वर-

दरसन करौ खरारेसुर के, दुश्मन दालुद्दुर के।
लाल लगोटा वारें संगै, पाप देखतन मुरके।।
श्री विस्नू शिव शंकर प्यारे, उतईं भजौ ढुर-ढुर के।
'दयाराम' नदियां के तीरें, देव बसें सुरपुर के।।

-छंद बंध टोरने का विरोध-

टोरे छंद बंध अड़-अड़ कें, आंगे खां गये बड़के।
पिंगल टांग दओ घोरा पै, बीना लओ पकड़के।।
कंसुरतार सबई कडड्डारे, दै झंकार अकड़ के।
रबड़ कैंचुआ छंद पसारे, लिख डारे बड़-चड़ के।।
'दयाराम' शारद तोय छौरा, कई इक गये बिगड़के।।

-कलजुग-

कलजुग पाप पताका तानी, फैरा रओ गुमानी।
लैंके दैवौ सीके नइयां, झूठी कावें वानी।।
अधरम और कुमारग भावै, लाभ तकें ना हानी।
'दयाराम' चाये जां देखौ, पाप बेल हरयानी।।

-फूटन-

भइया कौ भइया है बैरी, पाप खाई भई गैरी।
भइया कौ हींसा हड़पे में, लाज तनक ना हैरी।
कइइक भइयै मार देत हैं, पाप पताका फैरी।।
'दयाराम' भइया भइया खां, मिलत लगत ना देरी।।

-देश हेत प्रार्थना-

हमखां जो पंछी तन देना, अर्ज हरी सुन लेना।
सीमा पै कौ बाज बनइयो, फोरें अरि के नैंना।।
मनुष बनाव कमांडर होवें, दुश्मन एक बचैना।
'दयाराम' कयें और देश में, चइये जनम हमें ना।।

-आत्मा-

बिछरन पति सें मोय कसक गई, माया फसी ठसक गई।
बिरह आग में जब सें जर रई, ऐसी मैं बेवस भई।।
ढूड़त उनें उमर भर निकरी, बिकल और तसनस भई।
'दयाराम' आखिर की बेरां, उनके चरन परस गई।।

देवी देव वंदना-

-कुलदेवी-

बैंठीं बीच विपिन में मैया, कुल की जेई रखैया।
मगरवाव, कचनेव-कगर के, ऐंगर मंदिर मैया।।
बंगरा ब्लाक मऊ तैसीली, मैया खेती नैया।
बिकट वेश वरदानी माता, तुम हौ लाज बचैया।
राजै तन सिंदूर मात के, गावें भजन गवैया।।
'दयाराम' जग के पापन खां, तुम हौ कठिन कुलैया।।

-वंदना दुर्गा की-

मोरी लाज भुमानी रखियो, दया दया पै करियो।
चरनन डरो तुमारौ चेरौ, हेरौ, हांत पकरियो।
भूल-चूककी मांफी दै दै, दुःख दालुदर दरियो।।
'दयाराम' पै देवी दुर्गा, सदा दायिनी रइयो।।

--

काली काट कंठ बैरी कौ, कर जम की देरी कौ।
काड़ करेजौ करौ कलेवा, अर्ज सुनो मेरी को।।
खप्पर भरौ शत्रु के खूनन, करौ नहीं देरी को।
'दयाराम' काली कंकाली, लखें कला तेरी को।।

-शिव स्तुति-

शिव जी जन के कष्ट निवारे शंभु नदिया वारे।
काहै कठिन तुमाये लानें, गरे नाग हैं कारे।।
तुम हौ काल काल के स्वामी, सब देवन सें न्यारे।
मंशा पूरन करौ दया की, जै-जै डमरू वारे।।

--

अपने शंकर जी दुःख टारे, जस उनके उच्चारे।
बिच्छू नाग ततैंयन वारे, मुंड माल गल डारें।।
अंग भभूत खाल करया में शेहर की शिवधारें।
'दयाराम' अपने शिव जी पै, तन-मन-धन सब बारें।

- शिव बरात -

आई बरात हिमांचल द्वारें, भूत प्रीत किलकारें।
बड़्डे पेट सींग इक नेंना, कोउबिन पेटन वारे।।
गोड़े तीन मूड़ मटका सो, केवला काजर सारें।
केश बड़े झकड़न से शीसें, कोउ बिन गोड़न वारे।।
'दयाराम' शिव दूला बन गये, भंगिया देत बहारें।।

-भक्ति-

मैंमा वेद शास्त्र सब भाखी, संत ज्ञानी साखी।
जीपै ढुरै ईश औतारी, ऊकी पत है राखी।।
अपने जन के कारन आकें, बेर मिठाई चाखी।
'दयाराम' तुम दीनबन्धु हों, सदा भगत की राखी।।

-गनेश वंदना-

बंदौ गौरी नंद निराले, नाशत विघन कसाले।
दुश्मन भेज देत जे जमपुर, शूल हूल उर माले।।
प्रथम पूज शंकर सुत सुमरों, मूसा बाहन वाले।
'दयाराम' पै दया करै नित, लम्बोदर मत वाले।।

--

दिइयो ज्ञान ज्ञान के दाता, दास शीस धर ध्याता।
धरन न दियो कुगैलन पै पग, जेई वर नाथ मंगाता।।
निरमल तन-मन बुद्धि राखियो, सदा सुजश मैं गाता।
'दयाराम' पै छाया करियो, शंकर सुवन विधाता।।

--

प्रथम सुमरों गौरी नंदन श्री गनेश सुख कंदन।
सबरे काज आन कै सादौ, करों सदा पद वंदन।।
करियो सफल साल ना सालै, रऔ करें आनंदन।
'दयाराम' लड्डुवा लयें ठाड़ों, तिलक लगाकें चंदन।।

-कुल देवी-

मइया सदा सहारौ देना, रैन दिना ना चैना।
शरण जैत माता की आवैं, कमी काउ की रैना।।
धन संतान सबई सुख देतीं, लक्ष्मी कभउं भगैना।
'दयाराम' माता की किरपा, कछु भंडार कमैना।।

प्रेम श्रृंगार--

-प्रेम-

हमखां और कछू ना चानें, बात तनक है कानें।
नजरन सों ओलट ना हुइयो, देखत मन हरषानें।।
एकई बेर हेरियो हम पै, एइ में हम सुख मानें।
हमखां रोज दरस दै जइयो, नैंन दोइ ललचानें।।
'दयाराम' तुमरे दरसन मैं, सुक्ख सरग कौ मानें।।

-हेरन-

तोरी नजर करेजौ फारै, अरिया कैसी ढारै।
सूदी जाय ठटी हिरदे में, बाहर प्रान निकारै।।
पंछी-प्रान करे हैं घायल, तनक न दया विचारै।
'दयाराम' ना चितव दयाकर, विरथां जी खां जारै।।

-अरौ-

जो कोउ जबरई लरन विचारें, कां लौ धीरज धारें।
कालौं देत कनाये इनखां, रोजई अरे निकारें।।
गारी देत रोज अनगिनती, समझत मन तरवारें।
निज घर छोड़ पराये घर में, परवस डेरा डारें।।
'दयाराम' ऐसे लोगन सैं, पन मंसुर लौ हारें।।

- जीवन दर्शन -

जीवन रांट घरी कौ फेरा, चक्कर चलै घनेरा।
लख चौरासी भरमत फिररओ, जौ प्रानी तन तेरा।।
जोत में जोत मिलै का करवै, काल चक्र दै फेरा।
'दयाराम' को जानें कां कां, भये जन्म कई बेरा।।

-प्रेमिका का कथन-

छैला कब तक के तर सैहों, अपनों कबैं बनैहों।
का वरषा जब खेती सूकै, फिर पांछू पछतैहों।
खिली कलिन रस लैन न आये, का पांछू मड़रैहों।।
:'दयाराम' बैंयन के झूलन, कै दो कबैं झुलैंहों।।

--

तुमखां देयं जुबनवां प्यारे, तुम मन बसे हमारे।
तुमखां गाल तुमईं खां चूमा, तुमें रंग रस सारे।।
जौ तन आय तुमारी बगिया, तुम पै तन मनवारे।
'दयाराम' खुलकें जस कर लो, हम तौ भये तुमारे।।

दवा दारू

-सिर दर्द-

सिर कौ दरद कठिन हो भइया, दमकत रात खपैया।
ऊँचे कोद हेरना पावें, मचती हा–हा दइया।।
पल भर चैन परत है नईयां, मीड़त रात मिड़ैया।
ग्यारा कारन मूड़ दर्द के परखत हैं परखैया।।
'दयाराम' का करत राम जौ, तलफत प्रान चिरैया।।

-त्रिकुट-

कारी मिर्च सौंट लै आओ, पीपर संग तुलाओ।
लेव बिरोबर तुला–तुला कें, फिर बारीक पिसाओ।।
दोउ बेरां मैंपर संग चाटौ, आधाना भर खाओ।
तन कौ जौ तिरदोष नशावै, नहीं बुड़ापौ आओ।।
'दयाराम' जो खाय हमेशा, उमर हजारी पाओ।।

-पानी निन्नै पीना-

निन्नै पानी नित पी लेना, कब्ज नाश कर देना।
नेत्र जोत साजी रयै ईसें, फुर्ती तनक कमैना।।
ब्रह्मचारी रयै नेम नियम सें, रोग पास फटकैना।
'दयाराम' मुस्काते रओ नित, चित्त ईश में देना।।

-आंखों की रक्षा-

जांदा धुवां देत दुख आंखन, अंसुवा बयै सब रातन।
धूप होत आंखन दुखदायी, मानों सांसी बातन।।
धूरा आंखन जान न पावै, कैदई कातन कातन।
'दयाराम' नैनन की रक्षा, करवै अपने हांतन।।

-गम-

जो कोउ कम खावै गम खावै, सदा सुखी सोउ रावै।
हाकिम और हकीम न चानें, नीती जेई बतावै।।
सादा खाय पैरवै सादा, भाजीं दार मंगावै।
चना फुलैय नियम से खाकें, कसरत करतई जावै।
'दयाराम' रये नैम नियम सें, सोई स्वस्थ दिखावै।।

-त्रिफला-

त्रिफुला के गुन सवै सुनावें, जैसे ग्रंथ बतावें।
हर्र बहेरा औंरा कूटौ, गऊ के घीव भुंजावै।।
पीस-पास दूनी लै निसरी, ईमें सुजन मिलावें।
दो-दो तोला शाम सबेरे, नेम नियम सें खावै।
'दयाराम' बलवान बनै बौ, सबरे रोग नशावै।।

-बिच्छू-

बिछुवा डसै चिया चिपकालो, कट कर खून निकालो।
दम रोपौ छाती कर कर्री, नौन घोर दृग डालो।।
जर पत्ता अज्जा झारे के, पीसौ और चड़ालो।
'दयाराम' नौसादर चूना, मिला मिला सुंगवालो।।

राम रसायन--

-लंका में हनुमान-

जोधा भगा दये हैं डरवा, लौटे फदियत करवा।
भारी उचम मचांय बाग में, देखे जोधा लरवा।।
शंक न खात खात फल साजे, टोरे कइक बिरवा।
'दयाराम' लंकेश सुनौ बौ, भौत कठिन बानरवा।।

-त्रिजटा-

त्रिजटा भक्ति राम की करती, रावन कौ मन भरती।
प्रेम करत सीता सें दिल सें, बातन सै दुख हरती।।
त्रास न देय सिया खां कबहूं, रक्षा हरदम करती।
'दयाराम' हरिभगत करैजो, कृपा हरी की ढरती।।

--

जौ तुम राम कुदाईं ढुर जौ, मिट जै दालुद्दर जौ।
सबसें भइया दद्दा कइये, तुम ना तनकऊ घुर जौ।।
मीठे बोल सबई से कानें, है वश करन हुनर जौ।
'दयाराम' वे किरपा करदें, जग सें तुरत निनुरजौ।।

कृष्ण रस

-दूध दही बेचना-

बृज कौ दूद दही ब्रज रावै, बृजवासी ही खावै।
बृज कौ मठा कंस कौ चेरौ, एक बूंद ना पावै।।
बृज के लोग होंय तगड़े सब, ग्वालिन बेंच न पावै।
'दयाराम' कयै स्याम ऐंड़सें, झगड़ा रोज मचावै।।

--

बेंचो बृज में माखन प्यारी, दूद दई नित भारी।।
पइसा धेला कम में बैंचो, जाव न मथुरा प्यारी।।
उतै जैव तौ रार बड़ै नित, ग्वाल रिसाने भारी।
'दयाराम' का कंस करै जब, संग में श्याम बिहारी।।

राष्ट्रीय

-शहीद नमन-

सबके भगतसिंह हैं जानें, राज गुरु दीवानें।
विसमिल राम प्रसाद बांकुरे, असफाक उल्ला स्यानें।।
हँस-हँस इन्क्लाव कै-कै कें, फांसी चड़े दिखानें।
'दयाराम' आजाद चले गये, आजादी के लानें।।

-राष्ट्रीय-

बदरा संकट के मड़रानें, उमड़ घुमड़ घारानें।
भारत अगर बचानें सबखां, एक होव सब स्यानें।।
मुठी भरे आतंक मचायें, जे कब के गर्रानें।
'दयाराम' कितने मर मिट गये, आजादी के लानें।।

-शत्रु-

तैं बौ काश्मीर ना पावै, चांये जो हो जावै।
आतंकी गिन-गिन के मरजें, तैं काये बर्रावै।।
हिंद वीर जग जाहर-नाहर, इनै डाट को पावै।
'दयाराम' भारत माता पै, सपनें आंच न आवै।।

-देशप्रेम-

अपनों झंडा है फाराने, दओ गांधी बाबा नें।
होन न देंय हिंद के टुकड़ा, जौलौ जौ तन रानें।।
सातउ जात हिंद के लानें, एक रये उर रानें।
'दयाराम' बलिदान भये कई, एइ दिना के लानें।।

-काश्मीर-

खाली काश्मीर करवानें, हिंद में सबई मिलानें।
बापौती बा आय हिंद की, जुद्ध हुये धमसानें।।
आटे कैसौ नौन मिला लें, हिंद शेर भुकयानें।
रोज-रोज कौ टंटौ टोरें, धुजा तिरंगा तानें।।
'दयाराम' कयें जाने तोखां, उर तोय अब्बै जानें।।

-कामना-

ऐसौ कबै बनै जो भारत, कोउ रहै ना आरत।
सबई धरम मैं होय प्रेम नव, मधुर बोल उच्चारत।।
सब रयें एक देश के लानें, फिर का कोउ उखारत।
'दयाराम' कयें जग सें आगें, रयें हमारौ भारत।।

-चुनौती-

कर दें मुंड अलग हम धर सैं, धार दार खंजर सें।
आर-पार कर दें सीना के, खोज मिटा दें जर सें।।
का जानत तें दब्बू-चप्पू, हो हुश्यार खबर सें।
'दयाराम' कयें बचै न कैसंउ, विदगओ शेर बबर सें।।

फुटकर--

-उत्पीड़न-

जां तां निरधन वै बरजोरी, कऊं भौत कऊं थोरी।
भ्रष्टाचारी आंगें बड़ रये, सूदौ जाल फसोरी।।
चलत दबंगई दिल्ली तक लौ, कछू न जाय कहोरी।
'दयाराम' ऐसे सुराज पै, कबै परै जा होरी।।

-कपूत-

मानत नहीं कोउ की थोरी, सदा करत बरजोरी।
बाप मताई समजा हारे, फिरवे गलियन खोरी।।
पूत कपूत भये हज्जारन, गाने चरित्र धरोरी।
'दयाराम' ऐसे लरकन पै, कबै परत है होरी।।

-गरमी-

जा रित गरमी है आई, संगै तपन लियाई।
झारें कड़े भभूका छूटै, अगन रई बरसाई।।
तला पुखइयंन के दिल दरके, नदियां सूकीं खाई।
'दयाराम' जा गरमी बैरिन, रई बेचैन बनाई।।

-मजबूरी-

पैलां सुनों परीक्षा आई, फिर कांपी जंचवाई।
नेवते करे परी ती सारंग, दौरे इत उत आई।।
टरकत रई गोष्ठी ईसें, सब जानत है भाई।
'दयाराम' कयें कवी गोष्ठी, एइ सें ना हो पाई।।

-देश हेतु विनय-

सुन लो कलकत्ता की माईं, काटौ कुटिल कसाई।
आतंकी बाहर वा घर के, पापन पांव बड़ाई।।
कर लो आन कलेवा काली, किलक किलक लोखाई।
'दयाराम' मां उनें मुरालो, जो हिंद को दुखदाई।।

-भाई भाई-

भइया आपस में झगरंना, मानों सांसी कैंना।
एकई प्रान उदर सें आये, सदा प्रेम सें रैना।।
आंख उठाये एक पै कोऊ, तौ दूजौ गम खैना।
'दयाराम' का कारन जादां, भइंयन आज बनैना।।

-फूटन-

सुन-सुन नारी के वे बैंना, फूटन काय परैना।
पथरा पै गड्ढ़ा पर जातई, रस्सी रोज चलैना।।
विष बगरांय नार कई घर में, वचन मधुर निकरैंना।
करें दरार दिलन भैंयन के, कसर एक फिर रैना।।
'दयाराम' भइया सोउ बिगरे, भये चार जब नैंना।।

-मौनियां नाच-

खेलें डड़न खुशी है भारी, ग्वाल बने दै तारी।
टोली बना डड़ालै हांतन, अंखियां कर कजरारी।।
पटियां पार पैर लये झेला, मौन साद लई प्यारी।
बारा गांव लये मजया कें, नाचें गावें भारी।।
'दयाराम' जा लोक रीत अब, बिला रई है सारी।।

-जुआ-

जौ तौ जुआ मिटावन वारौ, कोउ ताश ना डारौ।
धरम राज दई हरा द्रोपती, राज पाट गओ सारौ।।
रई कौरा की भूंक न कउयै, देखौ सुनों विचारौ।
किटी फलाश मांगपत्ती में, बोट न विरथां डारौ।।
'दयाराम' मौका दिवाई कौ, जुआ चलन खां बारौ।।

-नारी पति से-

कैरई पति है इक नारी, बालम सुनों हमारी।
पक्कौ घर बनवा लो अब तुम, मुड़िया होय अंगारी।।
बैठक एक चाइये पैलां, भारी रिश्ते दारी।
डरवा लियो लैंटर साजौ, मोय खुशी हो मारी।।
'दयाराम' आगे इक चइये, साजी सी तिदवारी।।

-नारी महत्व-

नारी निंदा ना मन भावै, नार महान कहावै।
नर नारी से जनम लेत है, कौन महत्त मिटावै।।
राधा सीता नाव पैल है, शक्ति रूप जस गावै।
'दयाराम' नारी वारे सें पाले पुत्र खिलावै।

--

नारी जब फटकार लगावै, तुलसी नाव कमावै।
रामचरित उर ग्रंथ अनेकन, ज्ञान भगति रस पावै।।
नारी के उपदेश दये सें, जीवन सुखी दिखावै।
नारी, शिवा भगतसिंह, राना, उर आजाद बनावै।।
नारी कौ अपमान भये सें भारत लौ हो जावै।
'दयाराम' नारी ही नर खां, सदा अंगारी लावै।।

-बेटी-

बिटियन खां जांदा पढ़वावै, साजे गुन सिखलावै।
आगे बड़े बनें सावित्री, दुनियां बा भा कावै।।
होवैं चतुर मधुर नित बोलें, दोऊ ओर सुख छावै।
जीवन भर मर्यादा पालें, कोउ न कुछ कै पावै।।
'दयाराम' लड़का लड़की में मूरख भेद बनावै।।

-कलम-

तैं है धन्य कलम सुखकारी, शारद सुता न्यारी।
लिखती भाग सवई के आकें, विध खां भौत प्यारी।।
तोरौ लिखौ सबई कोउ वांचत, ब्रह्मा, विष्णु, पुरारी।
'दयाराम' कोउ बांच पाउत ना, करम की भाषा सारी।।

फुटकर--

-छुआछूत-

जौ लौ छुआछूत जा रानें, तौ लौ काम नशानें।
हिन्दुन में एका नई होनें, आपस लरतई रानें।।
छुआछूत कौ भूत भगावे, ज्ञान भभूती चानें।
'दयाराम' कयें सबल हिंद हो, सबखां गले लगानें।।

-दिवंगत कवि चौरसिया-

परिषद् छोड़ गये चौरसिया, हते भौत रंग रसिया।
चौकड़ियां उर कवित गड़त्ते, एक एक सें बड़िया।।
करी समस्या पूरी कइइक, गांव कोटरा बसिया।
'दयाराम' दिन दूनी फूलै, जा प्रीतम की बगिया।।

-अंगूठी-

मुंदरी तें बड़ भागिन भारी, उंगरी चड़ी हमारी।
आंखन सामें रात रात दिन, देखत दिल खुश भारी।।
शोभा करत हांत की बसकें, तें पटरानी प्यारी।
'दयाराम' सोउत में चिपकी, छाती सें मतवारी।।

-जन्मभूमि-

गांवों छोड़ कितउं ना जइये, जनम भूप पै रइये।
सबसें भइया, दद्दा, कैकें, आदर सबखां दइये।।
प्रेम भाव कौ चालौ चलके, नित नव प्रेम बड़इये।
'दयाराम' जो सुक्ख गांव में, बौ सुख कितऊं न पइये।।

-गांव की नारी'

अपने राई भरे खां टांगें निगरई आंगे-आंगें।
रोटी पानी डबला संगै, छौरा जो कंऊं मांगें।।
डीलन में दओ बिछा बिछौना, कोउ कोउझूलन टांगें।
'दयाराम' काटें घामन में, दिन बूडे जब भागें।।

- गांव की नारी -

मुर्गा बांग दई जब प्यारी, उठैं गांव की नारी।
घर आंगन सब झारें फूकें, द्वार उरेंनें डारी।।
सपर खोर सैयां के लानें, करी कलेवा त्यारी।
ढ़ोर बछेउअन सानी पानी, दौनी करें न्यारी।।
'दयाराम' कां इनखां फुरसत, तकौ गांव की नारी।।

-मेर-

कोउ सें मेर कभउं ना करवैं, सोस समज पग धरवै।
मेर करे पै हान लाभ कौ, गुंताड़ौ ना करवै।।
प्रीत करै लुटिया डोरी सी, पिछल पांव ना धरवै।
'दयाराम' कयें मेर दूद में कपट खटाई न परवै।।

-

जीके मों में हांत दयें रओ, बोउ मेरी मानें रऔ।
ऐंचौ हांत तुर्त वौ काटत, जा सांसी जानें रऔ।।
गों के मीत सबई दुनियां में, चेतौ मन ठानें रऔ।
'दयाराम' स्वारथ बिन मेरी, होत न मन मानें रऔ।।

-

ई जुग ऐसे मेरी कावें, पइसा खांय उड़ावें।
जौ लौ हांत बनत रये तौलौ, पैरे पैरे रावें।।
घिस-घिस गड़ा परत पथरा में, बऊ बिटियन पुटयावें।
'दयाराम' कलजुग के प्रेमी, कुंआ पटक भग जावें।।

-बेईमान-

ईखां ऊखां ढका लगायें, झटका दै लै आयें।
लैकें देत काउ कौ नइयां, मांगौ तौ दर्रायें।।
सूदे सादे फंसा जार में, अपने काम बनायें।
'दयाराम' दो की दस पोवें, नेता जेई कहायें।।

--

लेतन साजौ लगतई भारी, खुशी होत नर नारी।
देती दार फटत हैं, छाती, खौरे बोलें भारी।।
भूल जात बा बेरा दुख की, ऐसी दुनियां दारी।
'दयाराम' कयें बेईमानन की, बस्ती बसत न न्यारी।।

-पुत्र-

बे हैं भागवान पित माता, सुत जिनके सुखदाता।
मात पिता की आज्ञा मानें, राखै खुशी विधाता।।
बूड़िन की नित सेवा करवें, जनम सफल हो जाता।
'दयाराम' देखौ बूड़िन खां बिरलौ ही नर चाता।।

-माता पिता की सेवा-

अपने मात पिता है देवा, करै उनई की सेवा।
चारउ धाम सबई तीरथ जेई, जेई हैं जीवन देवा।।
पाछें खाय पैल इनखां देय, बारौ मास कलेवा।
जा तौ बात तत्त की कइये, सेवा देवै मेवा।।
मात पिता खुश तौ ईश्वर खुश, सरमन कांवर लेवा।
'दयाराम' पाखंडी पाछें, बने फिरत पन देवा।।

-भक्ति-

उनकी पांव पनइयां होते, ईनर तन की कोते।
चरन कमल की सेवा करकें उनके ऐंगर सोते।।
उनकी चरन धूर में रच रच, पूरौ जीवन खोते।
'दयाराम' राधे चरनन की, बे मैरइयां होते।।

-वृक्षों का महत्व-

बिरछा जे है जितै रखा लो, नहीं कुलइया घालो।
जे विरछा जीवन के दाता, इनखां देखौ भालो।।
बरसै नीर हवा रयै ताजी, दया दिलन में पालौ।
'दयाराम' जा जांगा मिलवै, बिरछा उतै लगालो।।

-पइसा/चरित्र-

जग में पइसा सब कुछ नैयां, पइसा है परछैयां ।
आज करोड़न हांत पास में, कल कऔ कोंड़ी नैयां।।
लक्षो फुआ नाभईं काउ कीं, जे हैं चंचल गुइयां।
चरित ऊजरौ चइयै सबकौ, पइसा फिरत पछइयां।।
'दयाराम' कयें चरित अमर है, देखौ खोल किबैयां।।

-झूंठा-

झूंठा कामचोर उबरानें, माल मुफ्त कौ छानें।
धोको दैवौ ठगवौ सीके, नित्य मुफत कौ खानें।।
नेंचै गिरत जात वौ नित, प्रत, पाप पताका तानें।
'दयाराम' इनकी लाशन पै, गीध काग मड़रानें।।

-वचन-

कै कें बात बदल जो जावै, मान कभी ना पावै।
सौ-सौ बेरा सोचें समजें, पाछें जीभ चलावै।।
प्रान जांय पै बचन न जावै, ऐसा चलन बनावै।
'दयाराम' कयें एक बाप कौ, एक बात पै रावै।।

-पानी-

पानी सदा बनावै शानी, पानी है जिंदगानी।
पानी उतरौ सबनें थूंकौ, रन बन भई जिंदगानी।।
पानी बिना कछू नई होवै, पशू जिंदगी जानी।
'दयाराम' पानी राखें रऔ, रैजै कथा कहानी।।

-चमचा गिरी व चोरी-

चमचा गिरी चमकवै भारी, सबरे हार निहारी।
साहित्य में सोऊ घुस आई, आदर पा रये भारी।।
कऊं की ईंट कऊं कौ रोरा, पोथी सो रच डारी।
नम्बर दो की होय आरती, सांसे फांके पारी।।
'दयाराम' चोरन की चाँदी, हमनें कटत निहारी।।

-दारू-

जौ लौ दम में दम रानें है, दारू नित पानें है।
जौ है रतन पियो दमभरकें, परमानंद आने हैं।।
फुर्ती रयै फिकर न सालै, आनंद बरसानें हैं।
'दयाराम' दारू की बोतल, सदा संग रानें हैं।

-बालापन-

सबसें साजौ है बालापन, खेलें दिन उर रातन।
परमहंस की गती जेई है, झूंठ न जानों कातन।।
हान लाभ उर पाप पुन्य कौ, सोस न बारौ मासन।
सब कोउ चाय खिलाय प्रेम सें, जा रये हांतन-हांतन।।
'दयाराम' धन सनक सनंदन, सदा रखें बालापन।।

-बुढ़ापौ-

सबसें दुखदायी बिरधापन, सबै लगत है आंसन।
बिना बुलायें चलों आउत जौ, टोरन लागत दांतन।।
केश होत कारे सें गोरे, नजला हो गओ आंखन।
सूकी खाल नवी करमाई, रूप रंग गओ बातन।।
'दयाराम' कयें जीकी जैसी, रेख लिखी विध हांतन।।

-अनाज-

जुनरी कुदवा दोउ बिलानें, ई बुन्देलखंड स्याने।
उखरी सुखरी बनें कितऊं ना, मूसर की खां चाने।।
कठिया चांद ईद के हो गये, बाहर सें मंगवानें।
मटर, मसूर, पिसी उर राई, उरदा फसल पजानें।।
'दयाराम' धनियां अब धनियां, नीदें कितै बतानें।।

-शीत बीमारी-

भारी शीत पित्त उबरानों, फिर फिर होत दिखानों।
लाखन लगे रुपइया ईमें, जर सें नहीं नशानों।।
सालन लौ हम भोगत रये हैं, जंग शीत सें ठानों।
'दयाराम' की दवा जीतवै, मात दायनी जानों।।

-जवानी-

ज्वानी में गर्राट दिखानों, मानों चाय न मानों।
आंखें चार भईं जी बेरां, वाप मताई भुलानों।।
सीनातान गरूरी भर गई, मद में नित इठलानों।
लओ रस रंग संग तिरिया कौ, विषय भोग में सानों।
'दयाराम' जब घलो दिरोंदा, आ गओ होश ठिकानों।।

-अनुभव-

की खां अपनों समजें भाई, सब दुनियां मजयाई।
स्वारथ के सब मीत दिखानें, मों पै धरें मिठाई।।
स्वारथ सटो दिखावें ना फिर, गौं की करें मिताई।
'दयाराम' घर सें बाहर लौ, एकई नीत दिखाई।।

-लक्ष्मी-

कइ इक मिट गये बने बनाये, जो हमखां पछयाये।
सबरे करम करा दये हमने, सेरन खून बुबाये।।
पति खां छोड़ हमें जो चावै, उनके ठिये मिटाये।
'दयाराम' कोउ की बांदी ना, लक्ष्मी सबक सिकाये।।

-फोन-

खबरें कन जावें कऔ की की, आवें नित जी जी की।
बुला ल्याव उर बात करा दो, खबरें घरी-घरी की।।
को कन जात समासईं रातें, बिन्नू भइया जी की।।
'दयाराम' दम करें नाक में, खबरें ऊ की ई की।।

-तबियत-

गरमी बड़ी जिया घबराओ, उल्टी खां मन चाओ।
बूड़ा आव पसीनन सन गये, वारे कड़न न पाओ।।
हम सोसी जा परें हवा में, बीच तमारौ आओ।
पंद्रा बीस मास्टर जुट गये पानी मंगा डराओ।।
'दयाराम' कुछ मिनट बाद में हमें होश हो आओ।।

-साहस-

जग में का विपता सें डरनें, का रुआंयदौ परनें।
हंस-हंस दिना काटनें जौ लौं, जियन जोरिया बरनें।।
सुख दुख में है रनें एक सौ, समर समर पग धरनें।
'दयाराम' ऊ जगत पती खां, पल भर नहीं बिसरनें।।

-परिचय-

हमरे पितु श्री राम सहायें, कवी प्रवीन कहायें।
जां वे जाांय फड़न खां जीतें, कोस सैकरन जायें।।
बब्बा हीरालाल कवी के, गुन कां लौ हम गायें।
पर बब्बा खुमान जी कइये, जे सोउ छंद बनायें।।
'दयाराम' पंडन से भइया पांच जनें हम आयें।।

-

जानों जिला हमारौ झांसी, जांके हम हैं वासी।
थानों तो तहसील मऊ है, बात कात सब सांसी।।
गांव स्यावरी भौतई साजौ, नदी लखेरी, खासी।
'दयाराम' की जनम भूम जा सुखी रखैं कैलासी।।

-स्वभाव-

बैरी हम झूंठा मानी के, सेबक हैं ज्ञानी के।
चोर उचक्का आंय न ऐंगर, दुश्मन अभिमानी के।।
प्रेमिन के हम हार गरे के, दास बनें बानी के।
'दयाराम' छरछंद न जानत, मान पान शानी के।।

-कलजुग-

अपनी पाप पताका तानें, छोटे बड़े दिखानें।
पाप करम रई कड़र्त जिंदगी, भई ऊसीं संतानें।।
चोरी, लूट, दगा, छल करके, जोरे भौत खजानें।
'दयाराम' रन बन के हो गये, देखे भौत जमानें।।

-अधर्मी-

कल में पापी पजे उचक्का, सुनतन छूटै छक्का।
सब मर्याद मिटा दई इन्नें, बाप होय चाय कक्का।।
चोरी उर विभचारिन करवें, देखें तक्का झक्का।
'दयाराम' कयें रऔ समरकें, पाप जमानों पक्का।।

-बैलगाड़ी-

बैलागाड़ी तकौ न्यारी, लगत सबई सें प्यारी।
दो बैठौ चाय चार बैठ लो, डटो अंगाई पछारी।।
सीट रिजर्व चाय जब ठाड़ी, पौचा देय सवारी।
'दयाराम' कयें है किसान खां, जा प्रानन सें प्यारी।।

--

दौ हैं पइया एक जुंवाई, दो दये धुरा लगाई।
मांजें सींक अंगाईं ढोकर, दो पटली लगवाईं।।
लग्गी खुटला सैलें भौंरा, धुरें चकीलें चाई।
पांछें लगो लिड़ैया देखो, नदन नदौ हरषाई।।
'दयाराम' लो जोत लगाकें, बदियां दो-दो आई।।

-बुन्देली परिषद्-

परिषद् बुन्देली बन गई है, हरां-हरां चल रई है।
बुन्देली की सेवा कर रई, कविता दै नई-नई है।।
आंगें बड़े बड़ाने ई खां, जा मन ठान लई है।
'दयाराम' जा बड़े काय ना, सब दुनियां बड़ रई है।।

-नौजवानों से-

डटकें करों मैन्त ना झीको, करो सहारौ की कौ।
जौ संसार मैन्त कौ कइयै, बन जै स्वर्ग जमीं कौ।।
सब फल पाय मैन्ती मानुष, जीतै अड़ी पड़ी कौ।
करम बिना फल कितऊं मिलैना, जोउ सार जगती कौ।।
'दयाराम' मेंनत सें डरबौ, हम ना सपनन सीको।।

-बेशरम-

जो कोउ बेशरमाई लादें, उयैन कोऊ बांदें।
करम करत खोटे दिन रातन, छोड़ सबई मरजादें।।
माल मुफत कौ लीलत रोजई पाप पुटरिया बांदें।
'दयाराम' का जानें ऐसे, धरम करम के स्वादें।।

-अधर्मी-

अपने धरम करम ना चीनें, इनें बना दओ कीनें।
बात–बात पै झूंठी बोलत, सामी गंगा पीनें।।
ई ऊखां झांसौ दै दैकें, जमा हजारन कीनें।
'दयाराम' पापी पाखंडी, जे जनमें मति हीनें।।

--

दिन कें लूट लैंय जां चायें, भर दुपरै जम जायें।
बऊ बिटिया ना गिनें काउ की, चायें जां घुस जायें।।
निरधन की तौ मौत चाय जां, सुक में रहन न पायें।
'दयाराम' इक दिन जे गुंडा, औंदे डरे दिखायें।।

-बटिया खेती-

खेती बटिया की ना करना, आदौ माल निकरना।
ओइ में सोउ जे हौत लगादें, सोउ तेइंया परना।।
कोउ–कोउ तौ चौथइया दै रये, मैनत परै न करना।
खेती है अपने हांतन की, एकउ रात कसरना।।
'दयाराम' आंखन सें काजर, छीन लैत हैं डरना।।

-रवी फसल-

आ गओ चैत परी भरवाई, मसरी लई उखराई।
गबवा लये चना उर राई, अरसी सोउ कराई।।
पिसिया, कठिया रार खूब भई, खरयानन में आई।
'दयाराम' बंडा बोरन भर, रये किसान हरषाई।।

-पावर लूम-

चल गये पावर लूम निराले, देखौ मीलन वाले।
केसौ बुनत जात है कपड़ा, खटपट करकें चाले।।
टेरीकौट, टूस्ट, पालिस्टर, लाल, हरीरे, काले।
'दयाराम' ऐंगर रानीपुर कपड़ा बुनत निराले।।

-बेइमान-

भारी बेइमानी बदमासी, रोम-रोम में गांसी।
बात-बात में झूंठी बोलत, कैदें बात टका सी।।
दै विश्वास घोर विष देवें, कपट जार में फांसी।
'दयाराम' झूंठा भये भारी, मत इनकी है नासी।।

-पापी-

क्वांरिन के कई गरभ गिरावें, धन गरीब कौ खावें।
झूंटी गबा देंय ना हिचकें, गंगा लौ पी जावें।।
बिटियां बेंन भनेज न चीनें, पर नारी पुटयावें।
'दयाराम' नर अधम सैकरन, कांलौ तुमें गिनावें।।

-नीति-

जग में सदा मान सें रइयें, गरव न कितऊं दिखइये।
हरदम शीस नवा कें चलिये, भइया, दद्दा कइये।।
दो कै लेय कोउ गम खाकें, बदलौ कभऊं न लइये।
'दयाराम' जैसे खां तैसो, कभी न बदलौ दइये।।

-नियम-

अपने नियम धरम सें रइये, गम खइये कम खइये।
आवर जावर छोइ छाड़ सब सादा भोजन लइये।।
सबरे काम समय पै करवै, भुका भुकें उठ जइये।
'दयाराम' गुस्सा सब छोड़ै, चित्त शांति पै दइयै।।

-दलित-

अब सब मिलकें विगुल बजाओ, उठौ अंगारी आओ।
पढ़ौ लिखौ लरकन पढ़ाव सब, शिक्षा-दीप जलाओ।।
छुआछूत जो तुमसें मानें, मानन दो गम खाओ।
मनुष समान रचे विधनानें, मन की शक्ति बढ़ाओ।।
'दयाराम' मानुष तन पाकें, जो चाहौ बन जाओ।

-धरम-

सबमें मानव धरम निरालौ, संतन नें कथ डालौ।
उचित करम है धरम जान लो, अनुचित पाप विचारौ।।
दया करौ सबरे जीवन पै, सोचौ कछू विचारौ।
जौ विवेक विज्ञान जमानों, आडंम्बर खां मारौ।।
'दयाराम' पढ़ लिख जाओ सब, तम अज्ञान निकारौ।।

-संतोष-

जैसो होय अपुन ना खइये, पर पै ना ललचइये।
हंसी खुशी संतोषी रयै नित, मन खां बांदे रइये।।
जा दुनियां है अजब बजरिया, जिंस जरूरी लइये।
'दयाराम' कयें धन पराये पै, नियत न कभी डुलइये।।

- बेटा बेटी समान -

लरका हो या बिटिया कावै, भेद न कोउ बतावै।
बिटिया होय रंज ना करवै, उतनेई खुशी मनावै।।
जां लरका कामें ना आवै, बिटिया डटी दिखावै।
एक समान दोउ आंखन सौ, बेटी बेटा चावै।
'दयाराम' जौ नओ जमानों, कथना सांसी गावै।।

- सज्जनता -

मानुस बनें सुमन सौ मन सें, खुशबू कढ़ै बदन सें।
देखत लगै सबई खां प्यारौ, माली रखैं जतन सें।।
आखिर तक खुशबू दै फूला, पूंछ लेव जन-जन सें।
'दयाराम' कयें नाव अमर हो, जग में शुभ काजन सें।।

-दलित-

अब सब मिलकें विगुल बजाओ, उठौ अंगारी आओ।
पढ़ौ लिखौ लरकन पढ़ाव सब, शिक्षा-दीप जलाओ।।
छुआछूत जो तुमसें मानें, मानन दो गम खाओ।
मनुष समान रचे विधनानें, मन की शक्ति बढ़ाओ।।
'दयाराम' मानुष तन पाकें, जो चाहौ बन जाओ।

-धरम-

सबमें मानव धरम निरालौ, संतन नें कथ डालौ।
उचित करम है धरम जान लो, अनुचित पाप विचारौ।।
दया करौ सबरे जीवन पै, सोचौ कछू विचारौ।
जौ विवेक विज्ञान जमानों, आडंम्बर खां मारौ।।
'दयाराम' पढ़ लिख जाओ सब, तम अज्ञान निकारौ।।

-संतोष-

जैसो होय अपुन ना खइये, पर पै ना ललचइये।
हंसी खुशी संतोषी रयै नित, मन खां बांदे रइये।।
जा दुनियां है अजब बजरिया, जिंस जरूरी लइये।
'दयाराम' कयें धन पराये पै, नियत न कभी डुलइये।।

- बेटा बेटी समान -

लरका हो या बिटिया कावे, भेद न कोउ बतावे।
बिटिया होय रंज ना करवै, उतनेई खुशी मनावे।।
जां लरका कामें ना आवे, बिटिया डटी दिखावे।
एक समान दोउ आंखन सौ, बेटी बेटा चावे।
'दयाराम' जौ नओ जमानों, कथना सांसी गावै।।

- सज्जनता -

मानुस बनें सुमन सौ मन सें, खुशबू कढ़ै बदन सें।
देखत लगै सबई खां प्यारौ, माली रखैं जतन सें।।
आखिर तक खुशबू दै फूला, पूंछ लेव जन-जन सें।
'दयाराम' कयें नाव अमर हो, जग में शुभ काजन सें।।

-भक्ति : दुरगा -

दुरगा दया मूर्ति मन बस गई, भगतन पै मां हँस गई ।
फूल चढ़ा जल ढ़ारो जीनें, ऊपै दया बरस गई ।।
तो सौ को दयालु देवन में, सुमरो मां परबस गई ।
'दयाराम' मैया नें काढ़ी, भगत नाव जब फस गई ।।

-ग्राम देवी स्याड़ -

सेवक स्याड़ चरन में रावै, निस दिन मात ध्यावै ।
अठवाई उर पान बताशा, दैकें होम लगावै ।।
को जाने मां तोरी पूजा, दया दयाल दिखावै ।
'दयाराम' आ जातीं मैया, जब जब दास बुलावै ।।

दुर्गा जी के नौ रूप

- शैल पुत्री -

पैलां बन्दौ शैल सुता को, बैल वाहनी मां को ।
एक हांत तिरशूल विराजे, दूजै सरसिज बांकौ ।।
इनें महेश मनायें पूजें, जो पति है दुरगा कौ ।
'दयाराम' दुख दरती मां सब, प्रकृति रूप है जाकौ ।।

- ब्रह्मचारनी -

माला और कमंडल धारी, तपी शंभु की प्यारी ।
ब्रह्मचारनी नाव दूसरौ, तुम दुरगा मतवारी ।।
रक्षा करें प्रान की देवी, कला तुमारी न्यारी ।
'दयाराम' पै दाया करियो, तुमईं मोई रखवारी ।

- चंद्रघंटिका -

सुमरों चंद्र घंटिका मैया, जनकी लाज बचैया ।।
सिंह सवार कनक छवि धारौ, दशभुज दनुज दलैया ।
लयें अनेकन शस्त्र भुमानी, दुख हरती है मइया ।।
'दयाराम' है डरो शरन में, पार लगइयो नइया ।

- कूष्माझडा -

जा-जय कुष्माण्डा वरदानी, शिव दूती महारानी ।
सिंह सवार शीतला माता, अभय करें कल्यानी ।।
अष्ट भुजा सब रक्षा करतीं, सृष्टि रचें जगजानी ।
'दयाराम' दुख दरें दयालू, कला कोउ ना जानी ।।

- स्कंदमाता -

देती बांझन खां संतानें, स्कंद माता जानें।
आद शक्ति जे चतुर्भुजी मां, सिंह सवारी चानें।।
कर कंजन में कमल विराजै, मां की ममता मानें।
'दयाराम' चरनन में लोटो निसदिन तुमें रखानें ।।

- कात्यानिनी -

माता कात्यायिनी रानी, मन की गत सब जानी ।
इंद्रजीत दै बना मनुष खां, कला कोउ ना जानी ।।
सिंह सवार भरै भंडारन, पुजवैं सदा भुमानी ।
'दयाराम' पै दया करौ मां, जै हो मां कल्यानी ।।

- कालरात्री -

जय जय काल रात्री माता, तुम खां जगत ध्याता ।
काली रूप तीन है नैनां, खास अगन बरसाता ।।
गल मुण्डमाल वास मरघट में, बाहन गधा सुहाता ।
तुमनें रक्तबीज माड़ारे, भक्तन की हौ त्राता ।
'दयाराम' पै करियो किरपा, गीत तुमारे गाता ।।

- गौरी -

शिव की कठिन तपस्या करकें, गौरी भई औतरकें।
मन वांछित फल दैती मैया, चंडी बनी समर कें।।
शंभु निशुंभ हने बन काली, रूप अनेकन धरकें।
'दयाराम' पै छाया करियो, मां दुरगा निज करकें।।

- सिद्धिरात्री -

देवी जी सबरे सुख देतीं, कमला सन सुख सेतीं ।
आठ सिद्धि नौं निधी देय मां, जन संकट हर लेतीं ।।
शंकर जी लौ जिनें मनावें, चतुर्भुजी गुन नेतीं ।
'दयाराम' मां सिद्धि दात्री, चक्र कमल कर लेतीं ।।

-गनेश-

बन्दों-मूसक वाहन वाले, गौरी कुंवर निराले ।
एक दंत गजवदन विनायक, मोदक प्रिय मतवाले ।।
प्रथम पूज्य शंकर सुत सुमरों, देवा भोले भाले ।
'दयाराम' के रइयो गनपत, तुमई सदा रखवाले ।।

- -

दिइयो ज्ञान ज्ञान के दाता, तुम बल बुद्धि विधाता ।
धरन न दियो कुगैलन पै पग, तुमरवां पैल मनाता ।
निरमल तन, मन, बुद्धि राखियो, जश तोरे नित गाता ।
दयाराम पै दया करत हैं, श्री गनेश सुख दाता ।।

-ईसुरी-

सुनवे वे फागें सब तरसें, अजब रंग रस बरसें ।
बोल सुनत उन चौकड़ियन के, कड़ै नार नर घर सें।।
बौ रस कितउं और है नइयां, देखौ स्वयं नजर सें ।
'दयाराम' ईसुर की फागें, सुन पथरा लौ हरसें।

-देश प्रेम-

चीनी चिटियन खां चुनवादें, चनन सौ हम भुंजवा दें।
बंदरन सौ बमका वौडर पै, ककरी सौ कटवा दें।
आंख उठाइ हिंद में जानों, कवरें सोउ खुदवा दें।
धोकें में रइयै ना अबकी, भटा सौ हम भुंजवा दें।
'दयाराम' तोपें धां धांकर, छिड़ी छिड़ी उड़वा दें।

- देश प्रेम -

अबकीं जो भारत सें उरजै, तौ सूदौ जमपुर जै ।
चीनी होय होय या पाकी, चाय घांई वौ चुरजै ।।
अबकी गम्म एकना हुइयै, उरजी गांठ निनुर जै ।
'दयाराम' कयें अबकी वेरां, ओरन कैसौ घुरजै ।।

-गुटखा-

पाउच फार बाओ मों डारौ, मजा लओ फिर सारौ ।
यार दोस संगै है तौ फिर, दूजौ और निकारौ ।।
खुद विष खाओ दोस्त खां दै दओ, चाबें चिपकी यारौ ।
मों नई खुलत सिकुर गई नस नस, घबराओ घर वारौ।।
'दयाराम' ऑपरेशन हो रये, सोचो और विचारो ।।

-दयादीप-

दिल में दिया दया कौ बारौ, भीतर हो उजियारो ।
ममता की बाती बनाव फिर, तेल दया कौ डारौ ।।
प्रेम प्यार कौ दियट बना लो, ज्ञान सलाई उजारौ ।
सुख कौ फिर उजियाब फैलावे, जां लौ नैन निहारो ।।
'दयाराम' जौ दीपक भव के, फंदा काटन हारों ।

-सत्य-

जग पें कला सत्य की छाई, सत्य की है प्रभुताई ।
जोउ सत्य तौ ईश्वर कइये, वेद रये चिल्लाई ।।
सदा सत्य की विजय होत है, मान मिलै अधिकाई ।
सत्य अमर ऊपर है सबसें, कौन कवी कयै गाई ।।
'दयाराम' जो सत्य न छोड़ै, जग में होय बड़ाई ।

-भाग्यवान माता-पिता-

ये हैं भाग्गी बाप मताई, पुत्र करें सेव काई ।
आदर देय खबर सैं राखें, देय कलेवा व्याई ।।
खाना पीना देंय टेम सें, करवें सदा सफाई ।
आज्ञा जिनकी पालन हो रई, कीरत बड़ै अंगाई ।।
'दयाराम' जो आव लिखाके, उयै मिलै सुख भाई ।

-जलविहार (मऊरानीपुर)-

मेला जलविहार कौ कस कें, आन देख लो हंस कै।
झूलौ आन हिंडोरा चाहो, बैठ पलकियन गस कें।।
जो जी चायें सोउ खरीदौ, भरी भीर में धंस कैं ।
'दयाराम' खुश हो जौ खालो, रसगुल्लन के रस कैं ।।

-गारी-

गारी विष कौ बीज विचारी, देय कभंऊ ना गारी ।
गारी देत रार बड़ जावै, गोली चलें अंगारी ।।
गारी सें भारत हो जावै, सिजवा देवै गारी ।
'दयाराम' कयें मुख से कबहूं नहीं निकारै गारी ।।

-बोली-

कोऊ बच जावै गोली से, बचै नहीं बोली सें ।
बोली सें भारत हो गओ तो, बन गये हरि बोली सें।।
बोली सें सब मीत बनत है, तेग कड़त बोली सें ।
'दयाराम' सिंहासन मिलवै, रन बन हो बोली सें।।

- -

मैमां बुन्देली की गावैं, घर घट अलख जगावै ।
बुन्देली परिषद चलवा रये, कविगन सदा बुलावैं।।
कविता सुनें सबै सुनवावें, बना समस्या ल्यावैं।
हम पुजाइ है बुन्देली के, निसदिन इयें मनावें।।
'दयाराम' जा बुंदी बुन्देली, रस में पागत रावैं।

-राजनीति-

ना रई राजनीत अब दल की, हो गई है दल दल की।
ढड़क जांय कओ कौनउं दल में, खबर नईं है कल की।।
रिस पित चलै लुटै जेई जनता, भरें तिजोड़ी छल की ।
मद में मस्त भूल गओ सब कुछ, हो गई कमी अकल की।।
'दयाराम' अब राजनीत सब, नेता कर रये हलकी ।

-जमानों-

अब जे कैसे आये जमानें, अब लौ नईं सुनानें।
तन तन सी बातन पै सीजत, चक्कू कट्टा तानें।।
धरती आके कछू न देखों, हो गये झट्ट रवानें।
'दयाराम' गुंडा उबरानें, लग रये रोज ठिकानें।।

- गुंडा -

मुंडा गांवन गांवन दरसें, खुली छूट है घर सें।
कट्टा लयें लूट लें दिन कें, लूटे बैंक हुनर से ।।
कोउ काउ की कातई नैयां, मिटा दये कैउ जर सें।
'दयाराम' देहात छोड़ कैउ, कर रये प्रेम शहर सें।।

-राम भरोसा-

जीने जीवन दओ उदर सें, चरन उनई के परसें।
रूठी रयै दुनियां का कन्ने, राम न रूठै नर सें।।
परवत पै हरयात रात वौ, राम भरोसौ करकैं।
'दयाराम' रऔ लगन लगायें, अपने उन गिरधर सें।।

-सत्यता-

सब कोउ कै रओ मेरा मेरा, सांसउ ना कुछ तेरा ।
कोउके संग न जानें धेला, धरो रनें सब डेरा ।।
सब स्वारथ के नाते रिश्ते, लरका नार बगैरा ।
'दयाराम' कोउ रोक न पावे, हो जावे की बेरा ।।

-वचन-

कैं के ना बदले जा बानी, कै बदला कयें प्रानी ।
थूंक लैय फिर चाट लेत कई, का भई ई में शानी ।।
सोस समज के वचन निकारै, लाभ होय चाय हानी ।
'दयाराम' तन पाकें मानुष, ना सीके बेइमानी ।।

-होनी-

होनी जितै डारवै डेरा, होवै हा हा चेरा।
राज तिलक हरि के होने ते, बटते लड़वा पेरा।।
बन बैरागी राम गये बन, होनी ने मुख फेरा।
'दयाराम' कड़ गये महलन सें, होन न दओ सबेरा।।

-छोटौ परवार-

बेरा अब नइयां बातन की, खबर करौ जा तन की।
हो ना पाय तीसरौ दो सें, फिकर मिटै रासन की।।
सीमित सब परवार बनो रयै, बने रऔ ना सनकी।
'दयाराम' जो सुख चानें तौ, बात न मानों मन की ।।

-लापरवाही-

अपनी चीज न कोउ रखावै, चौरै गाईं सुनावैं।
अपनों खेत रखाव न जोतौ, उजर तनक में जावै।।
लापरवाई करी जीनें सो, मूंड़ खुजाउत रावै।
'दयाराम' सुख चानें जोतौ, सावधान नित रावै।।

-माता-पिता-

सेवा करवै मात-पिता की, सफल जिंदगी ताकी।
पनपेश्वर की भक्ति जेइ है, जा धन दौलत बाकी।।
भागवान सुत सेवा करवें, बेल हरीरी बाकी।
मातपिता खां दुःख दये सें, मिलवै जौन गदाकी ।।
'दयाराम' पद पूजौ इनके, दया रहे पितु मां की ।

-फाग गाना-

फागें गांय बजा कें ताली, रंग अनेकन बाली।
चेला बड़ गुर्राय शेर से, फड़ करवा दें खाली।।
देवें जोड़ जोड़ के तुरतई, सदा जीतवें पाली।
'दयाराम' फड़ जमा सामने, हरें शत्रु की लाली।।

-बेटी-बेटा-

कांसें लरका बिटिया आये, विध नें दोउ बनायें।
मात पिता की दोउ आत्मा, पुत्री पुत्र कहाये।।
बिटिया कम नैयां लरका सें, वेद पुरानन गाये।
पुत्री जेई बनत है माता, को फिर जगत चलाये।।
'दयाराम' बिपता में बेटी, सामें खड़ी दिखाये।

-बुन्देली-

जो कोउ रस बुन्देली जानें, पीवै मन कौ छानें।
माँ में घुरत मधुर निसरी सी, गुलगुच सीं गुरयानें।।
ऐसौ अजब स्वाद है ईकौ, जनम न कैउ अगानें।
'दयाराम' हर कड़ी दशहरी, खानें, और खबानें।।

- साईकिल -

पैडल दबो पांव सें बाड़ी, सर-सर बड़ी अगाड़ी।
दोइ अंगरा की जगां चाबनें, भगवें खों है चांड़ी।।
ओंगन दयें रओ चलवै सो, हरई ढ़ड़कवै गाड़ी।
विरख लगाव हरा के देखों, हो जाती सों ठांड़ी।।
'दयाराम' सुख दैन साईकिल, दो पांवन की गाड़ी।।

-बुन्देली की मिठाई -

देखौ जा मिठाई बुन्देली, दस रस भरी अकेली।
चौकड़ियां पेड़ा अनहोनें, कैवत गुर की ढेरी।।
अटका कलाकंद के खालो, उपमा बरफी झेली।
किसा बतउअल बनी रस भरी, मजा देत है ठेली।।
लोकगीत रसगुल्ला नोनें, दूरई सें दै पेली।
'दयाराम' बिलबाईं जलेबी, बारी बुन्दी बुन्देली।।

- राष्ट्रीय -

कारे लरवे आ गयो दोरे, करै जुलम ना थोरे।
नन्नो भूत बड़न डरवावै, हमें समज ना भोरे।।
पल में पाक मिटा दै पूरौ, बीर हमारे थोरे।
'दयाराम' हम तोय देख लें, देखौं अब्बै तोरे।।

- श्रृंगार -

जौ तन नार-बाग बिधि जोरे, फल उर फूल न थोरे।
लगे अनार नारियल दो-दो, तोता जी ललचो रे।।
फूले हैं कचनार संग में, गाल गुलाबी गोरे।
भूले भंवर चिपक कै रैंगये, बदन कंज पै तोरे।।
'दयाराम' फल ना बागन में, जो फल तन में कोरे।।

- ईश महिमा -

जीपै ढुरत दयालू भोरें, कहा बिगारे को रे।
पल में रंकें राव बना दें, पल में धरन खचोरे।।
परवत राई बना दें पल में, राई करें गिरको रे।
'दयाराम' को समज पाव है, अजब चरित हैं तोरे।।

- परशुराम -

सुनकें रोस बड़ो अति मोरे, धनुष कोउ नें टोरे।
भओ घोर टंकोर शब्द कौ, शेष पताल कपोरे।।
पल में तास नाश कर डारों, जान न साधू कोरे।
'दयाराम' मुनि कहें जनक सें, भीर जा कैसी दोरै।।

- छेड़खानी -

जां तां मचीं छेड़खानी है, कैसी नादानी है।
घर में घुसत हराम करत खल, मत तौ बौरानी है।।
बिद गये उम्मर गई जेल में, मईं दाना पानी है।
कर हराम हत्या सोउ करते, कैसी शैतानी है।
'दयाराम' जब घले बेंत तब, याद आय नानी है।।

- परिवार की गाड़ी-

पैलां करी काय ना ठाँड़ी, शौंक तुमें जब बाड़ी ।
हांकत गये वजन धर-धर कें, अपनी अपनी झाड़ी ।।
अब नई खिंचत वजन भओ जादां, हो गई मती उभांड़ी।
'दयाराम' धर रई इक जांगा, जा घर की है गाड़ी ।।

- गम्म -

कोऊ गारी दै सुन लेना, लौट कछू ना कैना ।
एक कान सें सुनों दूसरे, कान सें उड़वा देना।।
दुख ना करै ज्ञान हिय राखौ, तौ कुछ फरक परैना।
बदलौ गारी कौ गारी सें, भूल कभी ना देना।।
'दयाराम' जो मजा गम्म में, वौ कऊँ और मिलैना।।

- कर्म -

तैं तौ अपनौ कर्म करैं जा, सूदी गैल धरें जा।
करतव है दुनियां सें ऊँचो, करम डोर पकरें जा।।
हो जै नाव जगत में जाहर, कर्मन घड़ा भरें जा।
करतव ही पूजा है सबरी, दिल सें रोज करैं जा।।
'दयाराम' करतब सें डर ना, भव सें सोउ तरें जा।।

- संविधान -

साजी बातें दुनियां भर की, बाबा साव नजर की।
कई देशन सें लै अच्छाई, संविधान अंदर की ।।
रच दओ बड़ौं विधान देश कौ, बातें कछू लचर की।
गुलदस्ता बेजोड़ बना दओ, दै रये दाद हुनर की।।
'दयाराम' तुम देव दूत बन, आये हिन्द डगर की।।

- बोली -

सबसें बोलें मीठे बैंना, जैसें कोहल मैना।
ईमें हरज कछू है नइयां, धेला टका लगैना।।
बोलीं सें बश में सब होजें, ऐंगर संग तजैना।
पशु पंठी लौ रयें पछयानें, बोल बोल रस देना।।
'दयाराम' बोली कौ इमरत, नित बरसाते रैना।।

- करनी -

ऊँची करनी सदा है करनें, सदा पाप सें डरनें।
बामन शूद्र करम सें बनतें, गीता ग्रंथन बरनें।।
रावन बनकें सपने में ना, नार पराई हरनें।
नीचे करमन होत राक्षस, जिनसें हर दम डरनें।।
'दयाराम' साजीं करनी कर, सबकें मन खां हरनें।।

- फैशन -

जांदा चमक दमक जे करतीं, धरतीं पांव न धरतीं।
जांदां से जादां तन काड़ें, ढांकें तौ का मरतीं।।
लज्जा कौ गानों है फैंको, चुम्बक बनीं निकरतीं।
जो देखै सो खिंचत जात है, चाल अनौखी ढरतीं।।
'दयाराम' जे शम्मा होतीं, परवानन न संहरतीं।।

- प्रेम -

तारीं एक हांत नई बजतीं, दोउ की चोट खटकती।
गुर ढीलौं कुछ बनियां ढीलौ, जानन लगती बसती।।
नैंनाबिना लगै नईं मानत, आवन लगत जब मस्ती।
समरत नहीं समरांय जवानी, जोड़ी बनकें भगती ।।
'दयाराम' सावित्री किस्सा, इनें तनक ना जचती।।

- जुगाड़ी -

उठतन जे जुगाड़ की सोचें, की खां चीथें लौचें।
किते फसै मुर्गा कोउ सूदौ, लैय लांच उर घौंचें।।
कीखां दै धोका उर झटका, कीकें ऐंगर पौंचे।
लगा जुगाड़ दलाली करवें, माल मुफत कौ दौंचें।।
'दयाराम' जेबड़े जुगाड़ी, खून पियत ज्यों गोंचें।।

- नारी मान -

नारी को आदर सब देना, मन विचार गुन लेना।
नारी चिनगारी ज्वाला है, परजै लेना दैना।।
नारी रनचंडी बन जातीं, कोऊ कितउँ बचैना।
नारी सें भारत हो जावै, तोऊ सींक लगैना।।
'दयाराम' नारी आदर बिन, घर तौ स्वर्ग बनैना।।

- समाज -

बदले कलजुग के नर नारी, नारी प्यारी भारी।
माता उर वैनन खां दैं रये, उल्टी सूदीं गारी।।
मानेजन खां को है पूंछत, सारी खां लैं सारी।
सारौ है इमरत कौ प्यालौ, फिकर करें रयें भारी।।
बाप मताई दुक्ख में रैरये, भई ससरार प्यारी।
'दयाराम' जादां समाज में, ऐसी दशा निहारी।।

- शिक्षा -

शिक्षा कुची है सब तारन की, ई जग सें तारन की।
शिक्षा जान खान सब सुख की, काल है दुःख दारन की।।
शिक्षा की जोती जां फैली, सुधरी हज्जारन की ।
'दयाराम' शिक्षा बिन नर पशु, उमर बनी भारन की।।

- माफिया -

बजरी मुरमा भर-भर बेचें, लगे टैक्टर खैचें।
कैऊ सुदामा-कृष्ण बन गये, डरे हते जो नैचें।।
जी की लठिया भैंस ओइ की, फंसा देत जे पैचें।
बांद कमीशन लूटत रावें, खालदीन की खैंचें।।
'दयाराम' गंगा जू बैरईं, ऊपर सें नित नैचें।।

- चरित्र -

मैनत कोउ करन नईं चारओ, माल मुफत कौ भारओ।
जितै-जियै जितनों मिल जावै, फ्री कौ सोउ उड़ा रओ।।
सूदिन सादिन खां दै चकमा, अपनौ जाल बिछा रओ।
'दयाराम' जैसों जो कर रओ, वैसौ फल बौ पा रओ।।

- वृक्ष -

ना कोउ काटौ कौनउ पेड़ौ, सूदौ हो चाय टेड़ौ।
अपनी माता के जे उन्ना, अपनई काय उधेड़ौ।।
नंगी धरती करौ कोउ ना, हेरत हौ क्यों केंड़ौ।
'दयाराम' सब गड़वड़ हो रओ, रखा लो ईसैं पेड़ौ।।

-

पेड़े जैहैं जिते रखा लौ, नहीं कुलैया घालौ ।
बरसैं नीर हवा रयै ताजी, दया दिलन में पालौ।।
बिरछा हें जीवन के दाता, इनखां देखौ भालौ ।
'दयाराम' जां जांगा मिलवै, बिरछा उतै लगालौ।।

-चेतावनी-

सोचौ का तुम संगैं लैजौ, जैसई आय चले जौ।
भलौ करौ तौ भलौ कहें सब, बुरये करौ भूले जौ।।
अमर इतैना कोउयें रानें, जो तुम भलौ करें जौ ।
'दयाराम' रयै कथा कहानी, जानें कब पकरे जौ।।

- नीच संग-

खल सें कोऊ मेर करौ ना, बिन नुकसान बचौना ।
गदा न छोड़े धूर लौटवे, भ्रष्टा सुअर तजो ना।।
बिच्छू तजै न डंक मारवौ, बंदरा शांत परो ना।
गुरबीला गोबर खां तज कें, फूलन कभऊ रमोनो।।
'दयाराम' कयें संग नीच कौ, सपनें कोउ करौ ना।।

-कपटी मित्र-

जो कोउ कपट मित्र सें करवै, घोर नरक में परवै।
कपट खटाइ मित्र दिल फारे, दूर-दूर दिल करवै।।
कपटई सें कैउ प्रान चले गये, कपट जहर सें मरवै।
कपटी सें दूरई रयै साजौ, दुःख दूरई सें डरवै।
'दयाराम' कपटी नर से तौ, काम न एकउ सरवै।।

- कपूत -

पानी जियत-जियत ना देवें, लुंजियां-पुंजिया लेवें।
दै दै घूंसा लात तमाचा, तन सब नगया लेवें।।
पानी रोटी देंय न नैंकें, गारी भारी देवें।
मरगये बनवावें रसगुल्ला, माल पुअन सुख सेवें।।
'दयाराम' तब क़री न सेवा , अब का जस जे लेवें।

- नोट बंदी-

सब कोउ कै रओ मोदी-मोदी, बड़न-बड़न की धोदी।
अरबन-खरबन कागद कर दये, कौन धरी जा शोदी।।
किते धरे का करें हेर रये, काले धन की कोदी।
कैसें करें सफेद रूपैया, भई नगड़िया ओंदी ।।
'दयाराम' कयें लछो फुआ ने, तजी तिजौड़ी हौदी।।

-

डारो बिन हतयारन डांकौ, काम करौ जौ बांकौ।
धरो धराव कड़ा लओ सबरौ, निकर आओ कां कां कौ।।
सबई देश के हेत हो रओ, खिंचौ समाज सना कौ।
करत विरोध विरोधी डटकें, नाव लेत पिरजा कौ।।
'दयाराम' कालौ धन काड़ौ, कछू भओ है साकौ।।

- राजा -

कै रओ को कै मिट गये राजा, बेइ सजे सब साजा।
मंत्री बने चुनाव जीत कें, डंका उनकौ बाजा।।
पांछू के दौरे हो घुस गये, रुतवा चल रओ ताजा।
भवका बोउ बेइ है इज्जत, जानत सबई समाजा।।
'दयाराम' राजा थे पैलां, अब हो गये महाराजा।।

-ओरे, किसान-

कऊं-कऊं परे गजब के ओरे, घरन के खपरा फोरे।
जांगन तांगन चौपट कर गये, भये किसान हैं कोरे।।
पैलां से उरजे ना सुरजे, मरे पै मर्दन जोरे ।
'दयाराम' है धन्य किसानै, बज्जुर के दिल तोरे।।

- समय -

सब दिन रात सदा ना नौनें, कभउं परत है रोनें।
पंडन, हरीचंद खां देखौ, राज पाट सब खोनें।।
को जानें कीछिन में कैसी, हरी कृपा का होनें।
'दयाराम' सब दिना काड़ने नौनें, और अरौनें।।

- परकीया -

छैला अंदियारौहो गये हैं, बचन नार नें कये हैं।
दूरन देश तुमारौ गांवौ, रुकौ रैन सरतये हैं।।
पति गये दूर सास ना मोरी, सब दिल खोल बतये हैं।
पूड़ी साग बना दौ पल में, पलका दुगई बिछये हैं।।
'दयाराम' कयें बदमासन नें, भरमा बिलमा लये हैं।।

- समय वर्तमान -

दिन में बैंकन लूट रये हैं, जे गुंडा बड़ रये हैं।
छीनत मंगल सूत चैन खां, कार बिठा उड़ गये हैं।।
गैंग रेप के केस सैकरन, रोजई अब बड़ रये हैं।
परसी टाठी खा ना पावें, फिलमें अजब बनये हैं।।
'दयाराम' कयें मनुष आज कैई, निश्चर से हो गये हैं।।

- बाबा -

को है सही भगत को जानें, पाखंडी को मानें।
सब पैरें साधुन के कपड़ा, सादू वेष दिखानें।।
रंगो लिड़ैया कड़त बाद में, पोल खुलत सब जानें।
राम रहीम गये जेलन में, आशाराम ठिकानें।।
'दयाराम' कामिन जग जीतै, बिरले कोउ वच पानें।।

- पानी -

आसों वर्षा भई है नईंयां, सब कोउ कैयां बैयां।
दिन में बदरई कऊं-कऊं देखें, रातें दिखै तरैयां।।
पानी बिना जिन्दगी बिरथां, कछू होत फिर नैयां।
कैउ गांवन सें जनता भग गई, खोजें नदी तलैयां।।
'दयाराम' जग पाप बड़ों सो, मेघा आउत नैयां।।

- पलायन -

जा रये दिल्ली बांद पुटैयां, संग लुवांय दुलैयां।
पैरें सूट कसें हैं मुंडा, दिखती नहीं चुटैयां।।
फटफटिया है घर की मारूति, कमी एक है नैयां।
'दयाराम' लाखन पै, कोड़ी फेंकत आज गमैयां।।

- दारू -

कर दओ मस्त एक प्याला नें, लांगा की हाला नें।
पी गई लाखन खां जा दारू, प्याई मधुशाला नें।।
जौ लौ दम में दम है पीनें, दम सें कई लाला नें।
'दयाराम' साकी सें कै रये, इक बोतल बा लानें।।

- भौजाई -

भारी बिलख रई भौजाई, न्योतों रई पठाई ।
भोजन हुयें लला के महलन, कइयो जा शिरनाई।।
फटै न धरन गाज ना गिरवै, विधना नें का चाई।
'दयाराम' पति व्रता खां प्रीतम, ऐसें रये अजमाई।।

- हरदौल -

हमखां ना रोकौ भौजाई, आंसू वृथा बहाई।
लोक और पर लोक सुदरजै, चलवै कथा अंगाई।।
शंकर पियो जहर कौ प्यालौ, सबनें खुशी मनाई।
'दयाराम' जग किस्सा चलवैं, सदा हमाई-तुमाई।।

- नेतागिरी -

धंदौ नेतन कौ सुखदायी, लक्ष्मी रये पछयायी।
पैदल चलत हतै जो पैलां, रहे गगन मड़राई।।
झांसें दै-दै वोट लेत हैं, दिल्ली दौरें जाई।
बंगला बने चकाचक हो गये, मलक रये पद पाई।।
'दयाराम' जौ लौ पद रानें, दम सें करें कमाई।।

- सभ्यता -

सबसें बोलै मीठी बानी, जौलौ रये जिंदगानी।
डंडे घेरे करै न कोउ के, ना सयै ऐंचातानी।।
भइया-दद्दा कइये सबसें, ई में का है हानी।
'दयाराम' सब करें बड़ाई, जिदना होय रबानी।।

- बड़ों की आज्ञा -

हमनें, तुमनें सबनें जानी, कै गये वेद ज्ञानी ।
मात, पिता, गुरू की आज्ञा में, सदा भलाई दिखानी।।
मीन मेख ना करें खुशी रयै, बनी रये सब शानी।
'दयाराम' रन बन कौ बौ भओ, आज्ञा जो ना मानी।।

- माता-पिता -

को है मात पिता सें बड़कें, कै दो पोथी पड़कें।
पैलां पुजे गनेश जगत में, सब देवा गये हड़कें।।
सरमन कांवर कंधा धरकें, तीर्थ कराये कड़कें।
बन गये राम मात पित कई जब, राम चरित लो पड़कें।
'दयाराम' सेवा में मेवा, मिलें कछू ना लड़कें।।

- फोन -

भैया हलो नांय सें काते, बिन्नू सें बतयातें।
बिन्नू बात उतै सें कै रईं, भइया हँसत दिखाते।।
फोटू फौनन में तक-तक कें, मन की सब कै जाते।
हो गओ टिया दिना कौ जिदना, दोउ जनें उड़ जाते।।
'दयाराम' को जानें कां गये, फोन खां दोष लगाते।।

-

घंटी चाय जितै बज जावै, ट्यून बजै मन भावै।
बौलेयां लो लगा कान में, गाना गजब सुनावै।।
देश विदेशन बातें कर लो, छिन में खबर मंगावै।
रील बना लो मन मन की सब, देखों जब जी चावै।।
'दयाराम' मोबाल फोन अब सबरे काम बनावै।।

- स्वार्थ -

फेंके सब स्वारथ के पांसे, कोउ झूंठे कोउ सांसे।
बिन स्वारथ कौ कोउ दिखो ना, स्वारथ करै तमासे।।
मायके जात सौत के अटकें, पूंछत नइयां खासे।
'दयाराम' बैई जात कुंआं पै, जो कोउ होत प्यासे।।

-चुगल -

चुगला कारज बने नशाते, काम छोड़ कें जाते।
लगकें कान मंत निज फूंकें, भरनी सी भर जाते।।
दो की चार-चार की चौदा, सला पुठीं सीं आते।
मार काट लौ करवा देते, चौकन चुनी बैठाते ।।
'दयाराम' कैउ जंग न होते, माहिल झूंठ न काते।।

-बचत -

अपनी का काऊ सें कइये, समज मनई मन रइये।
जितनी होय खोर सो उतने, पाँव पसारो चइये।।
देखा देखी करकें बिरथां, घर खां नहीं मिटइये।
'दयाराम' कम खर्चा करकें, सदा मजे में रइये।।

- गृह वाटिका -

दोरें माटी क्याई बना लो, सबजी तनक लगालो।
फतकुल और गड़ैलू सेमें, कदुआ चाय उगालो।।
भाजी बोव टमाटर बैंगन, धनियां चाव जमालो ।
'दयाराम' सबजी कर पैदां, पइसा कछू बचालो।।

- शिक्षा -

अबलौ कई पढ़ लिख ना पायें, पशु रये बने बनाये।
ज्ञान किरन हिरदै नईं फूटी, रये अंदियारे छाये।।
बिरथां आये मनुष तन लैकें, मन में ना शरमाये।
'दयाराम' शिक्षा सें उन्नति, अपढ़ा नईं कर पाये।।

- आतंकी आंतरिक -

कैसे हो गये हिन्दुस्तानी, शरम देख शरमानी ।
देशई के देशई में मारें, मति इनकी बौरानी ।।
मारकाट कर बम्म गिरायें, करें देख की हानी।।
अंगरेजन से बुरये कछू हैं, चांटै जिनें भुमानी।।
'दयाराम' निज हिंद देश कौ, नशा रहे क्यों पानी।।

-विद्यादान महादान -

विद्यादान करें हरषावें, मन में सुक्ख मनावें।
देवें सदा चरित की शिक्षा, साजी गैल बतावें।।
जो गरीब बाली बच्चा हैं, सदा मदद मैं रावें।
फ्री पढ़ायें बने कई अफसर, जय वे हमरी गावें।।
'दयाराम' रये सदा मास्टर सांसी सबै सुनावें।।

- सहायता -

कपड़ा दीनन खां बनवाये, खाना घरै खुवाये ।
कापी और कितावें लै दईं, फ्री में कैउ पड़ाये।।
धूर भरे हीरा चमकादये, साहब कैउ बनाये।
पल्ली ठंडन में भरवा दईं, वे जस हमरे गाये।।
'दयाराम' सपनन में हमनें, कोउ के बुरये न चाये।।

- नेता -

पैलां सूके हते इकारे, जैसें होंय छुआरे ।
नेता बन गोरे कड़ आये, हते तबा से कारे।।
अब देखो मुटया गये इतने, चल ना पांय बिचारे।
'दयाराम' देखौ अब इनखां, सकरे पर गये द्वारे।।

- समाज -

जिंदा में डुकरें लतयावें, घर सें मार भगावें ।
लुंजियां पुंजियां पैल छुड़ा लें, कौरन खां तरसावें।।
जिनको बाप मांग कें खा रओ, लरका रौब बतावें।
वृद्धाश्रम में कैउ पौंच गये, मिड्डे मील मंगावें।।
हरद्वार उर चित्रकूट में, डेरा डरे दिखावें।।
'दयाराम' उनकी तेरईं में काला जाम खवावें।।

- -

पानी जिंदा में ना देवें, देवें गारी देवें।
मारें कूटें बेइज्जत कर, पइसा नगया लेवें।।
दारू खां पइसा नई दये तौ, प्रान लट्ठ दै लेवें।
बाप मताई भूंखन मारें, दान बामनन देवें।।
'दयाराम' ईसुर लौ इनखां, सूदें तक ना लेवें।।

- अच्छे कार्य -

छोड़ौ बुरये रिबाज चलन के, जो हैं नीचे पन के।
सबसें प्रेम भाव राखें रऔ, मान करौ सब जन के।।
भइया, दद्दा, कक्का, कैकें, साजें रइयो बनकें।
मिल जुर बड़त जाव आंगे सब, नाव करौ पुरखन के।।
'दयाराम' आंगे बेई बड़रये, जो आंगें करमन के।।

-बेटी बेटा -

बिटियां लरका दो है नैंना, इनमें भेद करैना ।
बिटियां लरका सें बउ़ मानों, नातर कुटुम तरैना।।
दोउ पड़ाव खिलाओ दोउउन, नातर लोक बनेंना।
'दयाराम' मानों ना मानों, बेटी कउं कम हैना।।

- दारू -

दारू सब अपराध करावै, पियै जियै मन भावै।
ई दारू नें पिये हजारन, इयै न कोउ पी पावै।।
गारी गुपता, डंडा, चाकू, गोली लौचल जावै।
टेला, लारी कार मुटरियां, फटपटिया लर जावै।।
'दयाराम' जा दारू नर खां, तुरतईं पशू बनावें।।

- बुन्देली विकास परिषद् -

बुन्देली परिषद् में आओं, स्वाद लेव जो चाओ।
ख्याल, लावनी, कवित्त सवैया, बुन्देली में गाओ।।
चौकड़ियां चटपटीं, चींखलो, कविता सुनों सुनावो।
ब्रज की बड़ी बैंन बुन्देली, ईंखां मान दिलाओ।।
'दयाराम' गुर सी गुरयावै, बुन्देली रस पाओ ।।

- बुन्देलखण्ड -

दुनियां घूमों और घुमाओ, देखौ और दिखाओ ।
जो है मजा बुन्देलखंड में, बौ तुम कितउँ न पाओ।।
कुंडेश्वर, पन्ना, खजराहो, नगर ओरछा जाओ ।
सबई तरा की भूमि इतै हे, सबईं कछू उपजाओ।।
सब मौसम कौ मजा लेव तुम, नातर फिर पछताओ।
'दयाराम' की विनती प्रभू सें, इतै रूप धर आओ।।

- बुन्देली -

करवें रोज आरती तोरी, मात बुन्देली मोरी ।
भाव भगति के फूल चड़ाओं, शबद-शबद की रोरी।।
दीपक-छंद करी की बाती, रस के घी में बोरी।
'दयाराम' दिन दूनी जर रई, जोत बुन्देली तोरी।।

- -

नौ रस भरी नांद बुन्देली, सांसउ है अलबेली ।
आने उर अटकन में आगें, चल रई चटक नबेली ।।
किस्सा और कानियां लाखन, नौनी तैंईं अकेली।
'दयाराम' हिंन्दी दियला की, जा बुन्देली - सेली।।

- -

हमखां लगत बुन्देली प्यारी, देसी गुर सी पारी ।
हर इक लैन जान लो ईकी, है रस की पिचकारी।।
मिसरी सी मिठयात स्वाद में, है मउअन सें न्यारी ।
'दयाराम' बुन्देली देवी, हम हैं असल पुजारी ।।

-पानी बेचना -

छोड़ो धरम करम अब नरनें, मन कौ धन है करनें।
पानी सें पतरौ का होतई, बेंच बेंच धन धरनें ।।
प्यासे खां पानी प्याव तौ, धरम खजानों भरनें।
कैसौ ई भारत में हो रओ, कैसें इयें सुदरनें।।
'दयाराम' कयें पानी कौ धन, पानी में है परनें।।

- बुढ़ापौ -

पा रये सजा करम कीनें की, नित धीनक धीने की।
सुनें न कान दिखाय न आंखन, बिड़ी धरें पीनें की।।
खांसी उठत दांत ना एकऊ, डरी खाट दीने की।
मुड़ियां हलत पांव नई चलवें, खबर न हरि चीने की।।
'दयाराम' तोउ कोसिस कर रये, कछू बरस जीने की।।

- बदलाव -

अब तौ गांवई में सब हो रओ, जौ समाज सबखोरओ ।
मई के कृष्न राधका मई कीं, जोड़ी उतई टटो रओ।।
ईघर में नैहर जौ कइयै, मांय सासरौ हो रओ।
मई कौ बाप मताई कइये सास ससुर मईं कौरओ।।
'दयाराम' खुद आंखन देखौ, बीज मनुष का बोरओ।।

- पंछी -

पंखा पंछिन के कड़ आवें, काय उड़न ना चावें।
कां तक कोउ उड़ानें रोकें, उड़ै मनें जो भावें।।
कां तक कोउ रखैं पिंजरन में, कील खुलै उड़ जावें।
'दयाराम' सोने के पिंजरा, पंछिन खां ना भावें।।

-स्यानी लड़की -

स्यानी सुता ब्याव कर डारौ, देखौ कुल घर सारौ।
चैयां मइयां पार देव झट, जिम्मेदारी टारौ ।।
आंखें चार होंय का कर लौ, पतौ न परै विचारौ।
लिखा पड़ी दोउ करा लेंय वे, मों करवा दें कारौ।।
'दयाराम' सब समय देख कें, समर समर पग धारौ।।

- भैया बांट -

देखौ भइया की बेइमानी, कऊँ ना फलत दिखानी ।
पंडा पांच कौरवा सौ थे, बिगर गई सब शानी।।
हारे जुद्ध कलंक लगो है, मिटी न कथा कहानी।
'दयाराम' भइयन कौ हींसा, देय प्रेम सें ज्ञानी ।।

- कलजुग -

घर की बदी करें ना मानें, मेर और सें ठानें ।
घर किन खां गारी दें मारें, रोज घिसत है तानें।।
बाप बनांय बार के देखौ, ऐसे आये जमानें ।
'दयाराम' घर-घर में हो रये, कितनें रोज धिंगानें।

-मित्र -

जो कोउ दुख में देय सहारौ, बोई है मित्र प्यारौ ।
सुख-दुख में संगी रये निस दिन, आवै काम तुमारौ।।
धीर बंधाय नीत की करवै, कपट न नेक निहारौ।
'दयाराम' कयें मिलत भाग सें, सांसौ मित्र करारौ।।

- समय -

जीनें सुनों समय ठुकराओ, मिट गओ बिना मिटाओ।
का है सुनों समय की कीमत, कौन कवी कै पाओ ।।
समय मूल्य समजो है जीनें, सुख में जनम बिताओ।
'दयाराम' बरवाद करो ना, नातर फिर पछताओ ।।

- स्त्री -

तिरिया चरित कोउ ना जानें, काय में सुख जे मानें।
देवता लौ इनखां ना जानें, का मानुस की कानें।।
जे माया की मूरत जानों, जेई शक्ति की खानें।
नारी नर की खान बखानी, मात रूप पहचानें।।
'दयाराम' नारी की निंदा, करें न कोउ स्यानें।।

- संतोष -

जग में संतोषी सुख पावै, नाव हरी कौ गावै।
मेंनत करें दार उर रोटी, चटनी संगै खावै।।
पूरी रात नींद भर सोवैं, दिन में ड्यूटी जावै।
तन-तन जोरत रये फिर पइसा, समय पै कामें आवै।।
'दयाराम' संतोषी मानस, दुक्ख कभउं ना पावै।।

- आत्मा -

अंदर घुसी आत्मा प्यारी, चेतावें हर बारी।
ईकी कई मन मानत नइयां, जेई सें रात दुखारी।।
ई की कई मान लई जीनें, रावैं सदा सुखारी।
'दयाराम' जो अंश ईश कौ, जानों सब नर नारी।।

-डालडा -

कांसें लट्ठ डालडा आओ, कीनें इयै बनाओ ।
खातन लुचई प्यास लग अबै, साजौ ना कोउ गाओ।।
कड़तन लुचई खपरियां हो गई, मुरै न कौर मुराओ।
'दयाराम' कयें मट्ठ साव सें, ई कौ मान घटाओ।।

- होरा -

होरा गोंव चनन कों बारौ, गरम गरम अत प्यारौ।
कठिया बाल होय का कानें, ईको मजा न्यारौ।।
मटर कौ होरा मूंगफली कौ, खा-खा समय गुजारौ।
चटनी होय क़नें फिर का है, पानी डबला बारौ।।
'दयाराम' खेतन पै बारौ, होरा खाव प्यारौ।।

- रेडियो -

कीनें बनओ रेडियो प्यारौ, टेली फोन न्यारौ।
जुग-जुग जियै खुशी रयें लरका पौंचाओ सुखसारौ।।
गाना खबरें सबई ज्ञान दै, सबखां बड़ौ सहारौ।
टी.बी. धरी देख लो, सब कुछ बड़ौ गजब कर डारौ।।
मोबाइल में फोटू चल रई, बात करौ चितधारौ।
'दयाराम' विज्ञानी प्यारे, साजौ यंत्र निकारौ।

- बेईमान -

का कयें बेईमान की बातें, आ जावें अदरातें ।
अटको अटका बाप बनालें, परसें प्रेम परातें।।
काम सटो फिर हेरत नईयां, इनकी ऐसी जातें।
अपनों मागौ खोरे बोलें, चांय पनैयां लातें।।
'दयाराम' गांबई में रावें, इनकी बड़ी जमातें।।

- छिनार -

इतकी उत में चार मिलातीं, चौउअर नैन चलातीं।
पेट दिखांय मरोरा चलवें, मुस्काकें बतयातीं।।
भरी भीर में घुसें वे फिकर, धक्का कैऊ खातीं।
खास मुंस खां सूकी रूखी, यारन माल खिलातीं।।
'दयाराम' जे नार छिनारें, मुंस मार कहलातीं।।

- -

डारें यार गरे में बइयां, देखत रावें सइयां ।
यारन खां दैं दूद जलेबी, सैंयां खांय खपैयां ।।
यारन संग रैन है कट रई, सैयां गिनैं तरैयां।
'दयाराम' मरवा दें मुंसन, ई डर सें कत नइयां।।

\- -

जा रई जे यारन के संगे, देखौ इनके ढ़ंगै।
जी संग परी भौरियां ऊसें, रोज रोपतीं जंगै।।
यारन सें ना परदा एकउ, मिलें लगा निज अंगै।
'दयाराम' कर कोलें किरियां, रोज लीलतीं गंगै।।

- मेहनत का फल -

पानी कौ जावै पानी में, परौ न नादानी में ।
खून पसीना कौ संगे जै, गिनों बेईमानी में।।
आखिर हांत कछू ना लगवें, रनें परेशानी में।
कोउ कोढ़ी कोउ पागल हो गये, मरे कैउ ज्वानी में।।
एक्सीउेन्ट भये कइक के, मरे परे हानी में।
'दयाराम' बरकौ रिस पित सें, भीख भली जानी में।।

- कपटी मित्र -

मौ पै मीठी बानी बोलै, बोलन इमरत घोलै।
पाछें करै कतन्नी डटकें, बानी में विष घोलै।।
ऐसौ मित्र छोड़वै तुरतई, खंदे न इनके कौलै।
'दयाराम' जे दगावाज हैं, लैजें गैरे दौलै ।।

- चरित्र -

घर-घर देखें अजब धिंगानें, बीसन सुनें उरानें।
माता की आज्ञा ना मानें, नारी की सब मानें।।
बाप की आदी मानत नैयां, ससुर की सौ-सौ ठानें।
खास भनेजा भइया छोड़ें, सारिन खां पतयानें।।
'दयाराम' जे चांय न बैंनन, सारी सब सुख छानें।।

- अटका -

को है बचो काल सें स्यानें, गाकें आज सुनाने।
को माया के जार बिदोना, अलग-अलग दरसाने।।
बिना गुरु के को भओ ज्ञानी, रचकें किये मिटानें।
'दयाराम' जो उत्तर दै दें, गुरु ओइ खां मानें ।।

- नीच -

नीचे नींच करम पै जाते, कै गये मुखिया माते।
गदन खां चंदन लेप चड़ा दो, घूरन लोट लगाते ।।
कौआ छोड़ कपूर चोंच में, सड़ियल चींज भिड़ाते।
भईना करई निबोरी मीठीं, हो जाती तौ खाते।।
'दयाराम' जौ नीचे प्रानी, सदा नीच ही राते।।

- यारी -

यारी भारी है हत्यारी, जानों धार दुधारी।
करकें कोउ निभावै बिरलौ, छोड़ देत मजधारी।।
जौ लौ है रस सुनो फूल में, भौंरा फिरवै भारी ।
बिन स्वारथ कौ प्रेम कितै है, देखी दुनियांदारी।।
'दयाराम' यारी नागिन नें, डसे कैउ बलधारी।।

- प्रकृति -

कंउ-कंउ गिरे बरफ के टूंका, गजब चरित्र पिरभूका।
कऊं भूचाल, बाड़ कऊं आवै, कऊं परो है सूका।।
कितंउ कड़ो तूफान भयंकर, कऊं ना भओ कनूका।
'दयाराम' कऊं अफरा चड़ रये, कोउ परो है भूंका।।

- बकरी -

छिरियां है गरीब की गइयां, पालत जियै पलैया ।
जल्दी बेल बड़त है ईकी, बुकरा और बुकइया ।।
कान पकर कें दूद निचोलो, पियो बनाके चैया।
टोटो कभंउ परो ना परनें, कामें आय खलैया।।
'दयाराम' कयें शुद्ध दूद लो, बुकरा देत रुपैया।।

- सूका -

पानी गैरें भौत चलो गओ, कुआ ज्वाव सो दै गओ।
हैण्डपम्प रये हला काय खां, वौ भी चूका लै गओ।।
ढोर बछेउ प्यासन मर रये, मौसम धोका दै गओ।
'दयाराम' फल मनुष पा रओ, बीजा जैसे बैगओ।।

- खराब आदमी -

कैसे कल में पजे उचक्का, सुनतन छूटै ठक्का।
झूंठ फरेब करत है हर पल, देखें तक्का झक्का।।
पर धन हरें तकें पर नारी, बादें होड़ी हक्का।
लूटें चांय जिये उर मारें, लैंकें लट्ठ तुबक्का ।।
'दयाराम' जे जल्दी मिटते, लगै तनक सौ धक्का।।

- चरित्र -

देखौ हाल चाल दौरे सें, पूछौ हिल मोरे सें।
सतुवा सत्यानाश भओ सब, का होने घोरे सें।।
चाल चलन की फसल नष्ट भई, रिसपित के ओरे सें।
'दयाराम' नौकर डरात ना, साहब के दौरे सें।।

- राजनीति -

घुसजा राजनीति में भइया, होजै चम्म मड़ैया ।
चिलकन लगें गाल पिचके जे, कारन चलै दुलैया।।
बंगला तनें कैउं शहरन में, कोटन जुरै रूपैया।
लिइये निपट घुटाला करकें, बीसन मिलै बचैया।।
'दयाराम' का करत जेल बौ, जनमें जितै कनैया।।

- घूस -

चाय कोउ मानें चाय न मानें, सब कउं घूस दिखानें।
बिना लांच के आंच लगत ना, सांच के नाच नचानें।।
लांच बिना कुछ होनें नइयां, सौ-सौ बीगें छानें।
घुसी घूंस की घुरिया चक में, ईंखां मन भर खानें।।
कोउ बन जावें 'दयाराम' कयें, घूस मिटाना पानें।।

''समाप्त''

---ooo---

- बुन्देली शब्दों के मायने -

राम रसायन खंड-

लौ = तक, भी, लगन।

नबै = झुकाबौ।

लली = जानकी जी।

सदै = बनना।

घरगूला = खेल में बनावे बाये बच्चन कौ घर।

कातिक की कतकारी भी बनाउती ई में बैठतीं हैं।

डुकर = बाप, पिताजी।

हरजा = नुकसान।

ना ली = लई नईयां।

जिद्द = हठ, टेक।

धानत = जबरदस्ती अपनी बात थोपना।

तेहा = गुस्सां।

जेठौ = बड़ौ।

कभंऊं = कभी भी।

जान की = प्रानन की।

सारंग = हिरन, धनुषवान।

आंकी = परखी।

जबईं = जब ही,तब ही, तभी।

टारौ = दूर करवौ।

रकत = खून।

पतरौ = धार।

नेंकउ = थौरो भी।

उबरानें = बड़ रये

ताड़ौ = समज लऔ।

रंझाड़ौ = गड़वड़ झाला।

गैना = पकरवौ।

नातर = नहीं तो।

हिरानी = खोई।

नईंपलनें = तुमारी बात नहीं चलना है।

कै रई = कहना।

रार = लड़ाई।

हद्द = सीमा।

एइमें = इसी में।

ब्रत = प्रन।

गाजा = गरजबौ।

खिसयाने = गुस्सा होवौ।

जेइ = यही। (राम)

भौतई = जांदा अधिक

पारौ = हड़िया के ऊपर कौ ढक्कन।

सुजानी = दिखावौ।

दमचौरा = तमाशौ, हलचल।

धौरा = सफेद।

पिरातौ = कष्ट।

लिलोर = कमजोर।

टोटे = कमी।

पांसे = चौपर (खेल)के पांसे।

कड़के = निकरवौ।

हुमसावै = हटाबौ।

ऊरें = निकरना।

गकैंयां = गेहूं की मोटी रोटी बिना बिलीं।

चेतावनी खंड-

तातौ = प्रयोग कर लेवौ।
बरबूला = पानी कौ बुलबुला।
सेंमर = एक बड़ौ पेड़।
रमतूला = एक देहाती बाजौ टेड़ौ-मेड़ौ।
निठुअंई = बिल्कुल।
टोंका = छेद।
सांतौ = शान्त।
गिगयानों = रो-रो कै बिनती करवौ।
उदरा = उधार।
तरनी = नाव।
धिंगानों = हल्ला शोर मचावौ।
कठकोला = एक पक्षी।
चोला = शरीर।
हिचकोला = हिचकीं।
बरंड़ी = दारू।
जां, तांकी = इतैकी, उतैकी।
औकात = क्षमता, शक्ति, स्तर।
मान्स = मनुष्य।
धोता = माल रुपया पैसा।
छड़के = दूर-दूर रहना।
लछो फुआ = लक्ष्मी जू।
भौरौ = भोला-भाला, सीधा।
करारौ = चोखा, सही।
खेमानें = पतन की ओर।
उमांड़ी = उल्टी।
चौपट = मिट जावौ।
जौन = जनम।
कौनें = किसने, कौने में।
तिलयाई = चिढ़ाना, चमकाबौ।
अर्रानों = पतन।
गर्रानों = घमंड़ी।
हूदौ = हूदा, ठूंसा।
झकरन = कांटे।
बजर = बज्र, मजबूत।
बिखूंड़ौ = दुःख मनाना, रोना।
पौआ = ताकत, जोर।
बन्न बन्न = तरह-तरह के।
खौफ = भय, डर।
कूला = कुली।
सांटी = हथयालैवौ।
आंटी = जांदा।
चूरा = एक गहना।
लत्ता = कपड़ा कौ टुकड़ा।
बाबेला = गड़वड़
नसाकें = कठिनाई सें।
कूरा = कचड़ा।
बरयानौ = शैतानी करवौ।
चेंथरी = खोपड़ी कौ पिछलो भाग, कहावत है।

रसखान खंड-

बेला = एक प्रकार की मन चली लोक नारी।

कंदेला = छोड़ को कंधा पर डाल लेना।

मसकी = खाई।

झमेला = गड़वड़।

निबौरी = नीम का फल।

कर्रे = कठोर।

कखियायें = कांखरी या बगल में दबाना।

पंछीली = पतली सी।

लुड़िया = पत्थर की गोल चिकनी पथरिया।

मुंस = पति।

खेप = गागर के ऊपर गागर भरी रखवौ।

कलारत = दुःख में चिल्लाना।

कइयां,बइयां = अधिक परेशान।

सारे = लगावौ।

गज भरकें =एक प्रकार की बन्दूक भरने वाला लोहा का सोटा।

दुधारी = दोनों तरफ धार वाली तलवार।

अभर = गुबार,इच्छायें।

गड़कुइयां = गड़ढ़े।

खरयाना = खलिहान, फसलें रखने की जगह

मिंजमानी = दुलर्भ वस्तु।

गदियां = हथेली।

हिरकौ = पास आवौ।

गुंतारौ = हिसाब किताब।

बाड़ = धार।

छैनी = लोहा काटने वाली लोहे की टुकड़ी।

लिड़इयन = स्यारों में।

गैरउं = चारों ओर।

गुलमेखा = लोहे कू कीला।

पोलका = गांव की नारियां का पूरी बांय का बिलाउज।

अखर जै = खटक जै।

गूड़ें = पेंट बारबार दर्द उठना।

ठस = कद की छोटी।

राई = शांति, चैन।

बरकौ = बचनौ।

हामी = हाँ।

मोय = हमारे।

जुगत = उपाय।

सोट = पतली सोटा के समान।

निठुर = कठोर।

गेरउं = चारों ओर।

छोत =खराब किसम की औरत।

जिंस = बस्तु।

मरोरा = ऐंठे कें।

कसक = इच्छा।

नाहक = बेकार में।

बिन्नू = बिटिया।
हूला = नोंकदार लम्बा हथयार
गुड़ी = कपट।
लांच = रिसपित।
घलतन = लगते ही।
फरिया = ओढ़नी, दुपट्टा।
कलारें = चिल्लाना।

देश प्रेम खंड-

रेद-रेद = खदेड़,खदेड़।
छेंक = रोकना।
अखारत = बेकार में।
डाटो = पकड़ा।
बिसा = खरीद।
कौलौ = कबतक।
भरन = सिखाये सें।
बरौंटी = सपनों।
उतराजै = ऊपर आना।
दड़कें = गर्जना।
ठिठाई = दुष्टता।
बमकाते = उछालदेते।
रकत = खून।
कुलिश = कठोर, बज्र।
ठांटौ = बुरी।
ललकारना = चुनौती देना।
भुकयाने = भूखे।
दौंदरा = ऊधम।
कुरमा = कुटुम्ब।
घेंचुवां = घोंसला।

बिरुंदौ= बुनना।
मऊ= मऊरानीपुर।
उन्ना= कपड़ा।
चौपाटी= बम्बई का एक स्थान।
कूर= दुष्ट।
इठलाना= जान पूंछ कर शरात करना।
दांक= दहाड़।
खैर= कुशल, रक्षा।
रमा= रंभाना।
ब्याड़े= बेड़ा में।
बमकी= उछली।
सौरेयानी= खुजलाना।
चीं= शोर थोड़ा सा।

विनय खंड-

अर= शत्रु।
सुबरन= अच्छे शुभ अक्षर।
अंध= अज्ञान।

फुटकर खंड-

करील= कांटेदार झाड़ी।
रँदे भात= बने चावल।
पानी= सम्मान।
लिपड़-सिपड़= नरमी या ढील।
घुर जो= मान कम होना।
अरुवा= उल्लू।
मसीले= मोटे।
कुगैल= बुरा कर्म।
पड़कुला= कबूतरा जाति।

बौरी= पगली।

तरेरन= विशेष हेरन।

पतंगी= उलटी।

उरजा= झगड़ा, उलझना।

पुसानी= ठीकलगना।

पठई= पहुंचाई।

त्रिकुटी= दोनों भौंहें मिलने का मध्य।

जोगन= योगन।

मूंदौ= बंद।

भाजी= भागी।

आंय बांय= पागल सी।

तमारे= गश्त।

टुकुर-मुकुर= चेतन्य के समान देखते रहना।

चत्योर= दीवाल पर बनीं पुतरिया।

दुफैंट= कपट।

चरौखर= चरागाह।

झेल= देर।

गवबारे= अबोध बालक।

अलख= ईश्वर।

गुरबीला= एक कीड़ा।

किलपत= दुखी।

पिंगल= छंद शास्त्र।

कंसुर= ऊंचे नीचे।

तस-नस= नष्ट-भ्रष्ट (बरवाद)

सादौ= संभालो।

तिरदोष= बात, पित्त, कफ।

त्रिफुला= हर्र, बहेड़ा, आंवला।

उचम= उधम, शैतानी।

त्रिजटा= लंका की राक्षसी।

कलेवा= नाश्ता।

मुरालो= चबालो।

मजयाकें= घूमकर।

करम= भाग्य।

राईभरे= छोटा बच्चा।

डीलन= मिट्टी के ढेला।

डबला= छोटी गगरी।

घामन= धूप।

गों= स्वार्थ।

मैंरइयां= पुराने समय में चमड़े सैं बनवे वारी औरतों कीं जूतीं।

ऊजरौ= उज्ज्वल।

रतन= अमूल्य वस्तु (समुद्र से निकली)।

कुदवा= एक अनाज।

उखरी= जमीन में गढ्ढ़ा छोटौ सौ। (धान, कुदवा, कूटने हेतु बनाव जात तो)।

कठिया= देशी गेहूं लाल।

धनियां= धान।

धनियां= स्त्री।

दिरौंदा= चौखट के ऊपर द्वारे की पटनौर की लकड़ी।

ठिये= स्थान।

फड़= गाने वाले विपक्षी की पार्टी।

तक्का-झक्का= मौका अबसर।

चौथइया= एक चौथाई।

गववा= अनाज अलग, भूसा अलग-अलग करना।

रानीपुर (झाँसी जिला -मऊरानीपुर तहसील में प्रसिद्ध हथकरघा उद्योग केन्द्र।

पुटयावें= प्रेम दिखाना, प्रेम करना।

आबर जावर= सभी कुछ।

भुकाभुकें= बड़े प्रातः काल। बिनादिन ऊरें।

रक्तबीज= एक प्रसिद्ध राक्षस।

त्राता= रक्षक।

छिड़ी-छिड़ी= छोटे-छोटे टुकड़ों में।

मैंमा= महिमा।

ढड़क= दल बदना।

सीजत= मर जाते।

धेला= पुराना छोटा पैसा।

जौन= औतार।

गुलगुच= महुआ कौ पकौ फलजो. भौत मीठौ लगत।

झाड़ी= अपनी चंलाई।

गोंचें= पानी में कौ कीड़ा जो खून पीता है।

नगया= एक-एक कर सब छीनना।

भबका= रौब, नकशा।

सरतये= खाली, फुरसत में।

बिलख= रोना।

टिया= समय, टैम।

पुठी= गाड़ी के पहिया का एक भाग।

चुनी= चनाका बक्कल (बीज का)

मट्ठ= मठा।

नोट- पूरी किताब में कहावतें व मुहावरे बुन्देली भाषा खां सुंदर बना रये।

--००--

डॉ. रामनारायण शर्मा को काव्य पाठ सुनाते
डॉ. डी.आर. वर्मा 'बैचेन'

[illegible] जयंती बुन्देली विकास परिषद् पर 'बुन्देली बताशा पत्रिका'
का विमोचन करते डॉ. प्रभाकर जी एवं शिवाजी चौहान जी
वर्ष - २०१२

डॉ. डी.आर.वर्मा 'बेचैन' हास्यकवि पं. हृदयनाथ चतुर्वेदी 'चौबे' मऊरानीपुर को सम्मान पत्र भेंट करते हुये।
साथ में साहित्य प्रेमी श्री गिरवर सिंह यादव 'बड़डे भईया'।

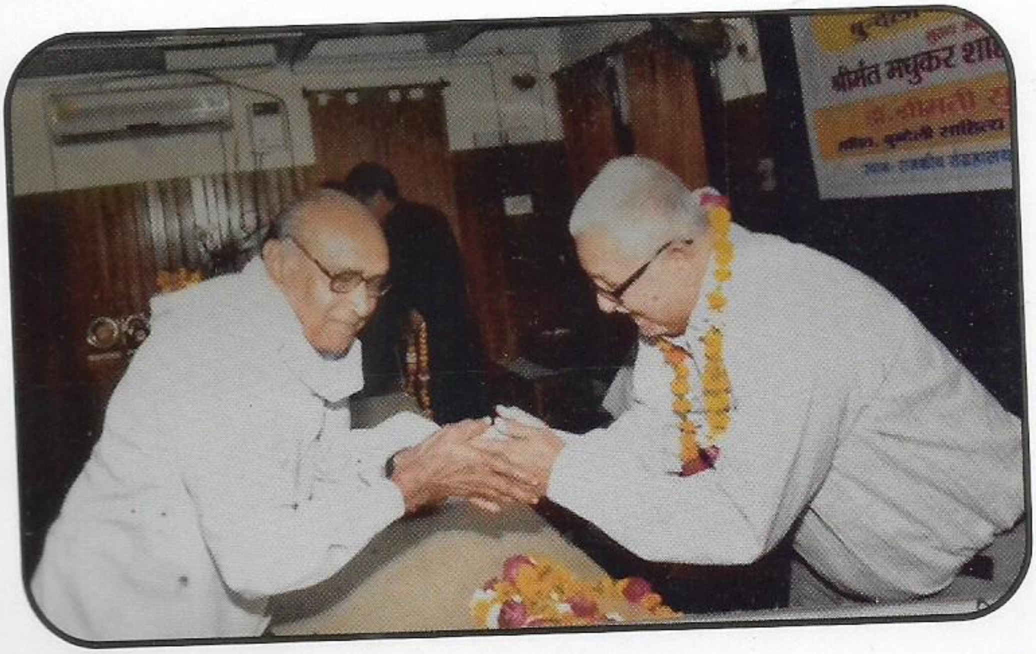

श्रीमंत मधुकर शाह जूदेव ओरछेश साहित्यकार का अभिवादन करते हुये
डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'

दशहरा मिलन समारोह पर हुए कवि सम्मेलन में पधारे हुये
सुकवि गणों के साथ डॉ. डी.आर.वर्मा
दिनांक 30-09-2017

साहित्यकार श्री वीरेन्द्र शर्मा 'कौशिक' का सम्मान करते हुये
डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'